# आनन्द रघुनन्दन नाटक

آنند رگھنندن ناٹک

श्री मन्महाराजाधिराज श्री बघेलवंश विश्वनाथ सिंह स्वर्गवासी कृत

जिसमें

संस्कृत प्राकृत देवनागरी गद्य पद्य इत्यादि अनेक भांति की भाषा-ओं में श्री राम चरित्रान्तर्गत मुनिजन शिरोमणि ब्रह्मर्षि विश्वामित्र जी महाराज की मख रक्षा से श्री परब्रह्म परमेश्वर दशरथ कुमार रामचन्द्रजी महाराज के सिंहासन पर विराजमान होने पर्य्यन्त का वृत्तान्त नट नाट्य कला सहित जनमोत्तम ललित नाटक भाषा सात अङ्कों में वर्णित है

पहली बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपा

जनवरी सन् १८८१ ई०

# विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् जनवरी सन् १८८२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फेहरिस्त में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर कीमत का निर्णय करलें।

| नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब |
|---|---|---|---|
| भाषा (इतिहास) | ३ वनपर्व्व | मयेतसवीर | काव्य |
| महाभारत | ४ विराटपर्व्व | तथा मये क्षेपक | सूरसागर |
| १ हिस्सा में आदिपर्व्व, | ५ उद्योगपर्व्व | रामायण तुलसीकृत | कृष्णसागर |
| सभापर्व्व, वनपर्व्व, | ६ भीष्मपर्व्व | के सातों काण्ड | विश्रामसागर |
| २ हिस्सा में विराटपर्व्व, | ७ द्रोणपर्व्व | १ बालकाण्ड | प्रेमसागर |
| उद्योगपर्व्व, भीष्मपर्व्व, | ८ कर्णपर्व्व | २ अयोध्याकाण्ड | कृष्णक्रिया |
| द्रोणपर्व्व, | ९ शल्यपर्व्व-गदाव | ३ आरण्यकाण्ड | विजयमुक्तावली |
| ३ हिस्सा में कर्णपर्व्व, | सौप्तिकपर्व्व मये ये- | ४ किष्किन्धाकाण्ड | अनेकार्थ |
| शल्यपर्व्व, गदापर्व्व, | शिक व विशोक वस्त्री | ५ सुन्दरकाण्ड | छन्दोर्णव पिंगल |
| सौप्तिकपर्व्व, येशिकप- | पर्व्व | ६ लंकाकाण्ड | कविकुलकल्पतरु |
| र्व्व, विशोकपर्व्व, स्त्रीप | १० शांतिपर्व्व-राज | ७ उत्तरकाण्ड | रसराज |
| र्व्व, शांतिपर्व्व में, राज | धर्म्म व आपद्धर्म्म व | रामायण शब्दार्थकोष | सतसई सटीक |
| धर्म्म, आपद्धर्म्म, मोक्ष | मोक्षधर्म्म व दानधर्म्म | रामायण का इतिहास | सतसई |
| धर्म्म, | ११ अश्वमेध आश्रम | रामायण मानसदीपिका | सभाविलास |
| ४ हिस्सा में, शांतिपर्व्व, | वासक मुशलपर्व्व | रामायण कवितावली | तुलसी शब्दार्थ |
| दानधर्म्म, अश्वमेध, | महाप्रस्थान स्वर्गारोहन | रामायण गीतावली | भजनावली |
| आश्रमवासकपर्व्व व | १२ हरिवंशपर्व्व | रामायण गीतावली स- | प्रेमरत्न |
| मौसलपर्व्व व महाप्र- | रामायण रामविलास | विनयपत्रिका बा॰ मो॰ | युगुलविलास |
| स्थान स्वर्गारोहनपर्व्व, | रामायण तुलसीकृत | विनयपत्रिका बा॰ शि॰ | चित्रचन्द्रिका |
| व हरिवंशपर्व्व, | रामायण सटीक मयेमा- | पुराण | बारहमासा बल्देवप्र- |
| महाभारत पर्व्व पर्व्व | नसदीपिका कोश आदि | देवीभागवत | मनोहरलहरी |
| अलहदा भी हैं | तथा मयेतसवीर सटीक | वेदान्त | गंगालहरी |
| १ आदिपर्व्व | तथा जिल्दबंधी | योगवाशिष्ठ | यमुनालहरी |
| २ सभापर्व्व | तथा मोटे अक्षरों की- | प्रबोधचंद्रोदय नाटक | जगद्विनोद |

श्रीगणेशायनमः ॥

# अथआनन्दरघुनन्दननामनाटक ॥

———००———

छंदशिखा। अघरणघरणघरणदमुखमुख दलनदलनदलि दलि है। अकरमकरनकरतधनुशरप्रण उधरतरनचलि चलि है ॥ सदयनसदयसदय सदकरकर जनन जनन पर रति है । जगजगजगतगनतनतगुणगणगणप अहिपपशुपति है ॥ १ ॥ मृदुपदुपदुममदुममहिपनमनचलिअलिरहि रमिरमि है । चपचलचलनिकरतिबरबसबसुबयबयनअमिअमि है ॥ अतिमदमदन मदनमरदनसर सरसतरसपतितन है । जयजयजपतबिबुध बुधछनछन ममपतिपतिचिभुवनहै ॥ २ ॥

नाद्यंतेसूत्रधारः । अरे मारिष मोंको राजकुंवर की नाट्य करिबे की आज्ञा भई ऐसे समय जो सहायक तैं मिल्यो तो बड़ो काज भयो ॥

मारिषः । अरे बड़े बड़े नाट्य वाले ह्यां नाट्य करि गये हैं हमारो नाट्य कब काहू को नीको लगि है ॥

सूत्रधारोविस्मितः ( चण मनुध्याय आकाशे करनं दत्वा ) कहा कहियतु है ॥

पुनःप्रहस्य । वाहवा, वाहवा, महाआनन्द महाआनन्द मम प्रसाद आकसमाद तोको अनुपम नाटक मिलैगो ऐसी बानी की बानी सुनी परै है ॥

पारिपार्श्वकप्रवेशः । अरे सूत्रधार परम उदार राज कुमार आगे बहु प्रकार बिस्तार करु के कै राजद्वार वार अवतार पुन्न उत्साह मो जो हम तुम करो हुतो ॥

सूत्रधारः । अरे पारिपार्श्वक ऐसी कौन नाट्य है जौन इहां नहीं भई ( पारिपार्श्व को बिस्मितः )

सूत्रधारः । येरे कहा मति अकुलानी तेरी तैं नहीं सुनी की मोकों

बानी की बानी भई है की तोको ममप्रसाद आकस्मात अनुपम नाटक मिलैगो ॥ इति प्रस्तावना।

भविष्यमाल:। त्रिकालज्ञादिकवे: पत्रिकेयम् ॥

सूत्रधार: (प्रणम्य गृहीत्वा वाचयति)

भजन बहुबिधिआशिषशिसप्य हमारी।
हेइतकुशलकुशलनुवचाहैं हेबेनिरमलबुद्धितिहारी ॥ १ ॥
दिगसिरअघभूर्भूरि भारभव बदनबिधाता बिनयकराई।
अवउदार अवतारपरमप्रभु लेहैपुहुमिपरममुददाई ॥ २ ॥
ताकेगुनगनभरितचरितमय काव्यसंस्कृतरचीअगारी।
नाव्यकरनपरिहैप्रभुआगे पेखतह्वैहैतेऊसुखारी ॥ ३ ॥
श्रीजैसिंहभुवालबिंधिपति सुतबिश्वनाथसिंहजेहिनाऊं।
सोनाटकआनंदरघुनंदन भाषारचिहैआउपढ़ाऊं ॥ ४ ॥

(अरे भाव) वाहवा, वाहवा ऐसे समय भली चीठी दई ॥

इतिनि:क्रांत: (तत: प्रविशंतिशिष्या:)

शिष्य:। पूजन की तयारी करो देखो नहीं है गुरु चले आवैं हैं ॥

कबित्त। केतेशिष्यसाथमें कमंडललियेहैंहाथ दीन्हेंउर्द्धपुंड्रहैं सबिंदु बरमाथमें। सोहत जटाबिशाल कंठकंठी उरमाल पहिरेकोपीन आल धोई गंगपाथमें ॥ तुलसीके भूषनकियेहैं कलअंगअंग लालरंग नैनछके प्रेमहरिकेगाथमें। गजगतिआवैं मतिहरिके चरित्रनमें श्रीनवेदपाठमन बिश्वनाथनाथमें ॥ १ ॥ प्रविश्यसमित्पाणि।

सूत्रधार। भो गुरो दंडवत् प्रणाम ॥

गुरु। वत्स चिरंजीव ॥

(सूत्रधार:) गद्य। प्रभुपत्रिकापाई शीसचढ़ाई आपु कृपा महाई। निजभाग्यअधिकाई मेरीमतिपरममुदछाई सुकृतफलधरीअबआई ऐसेजानि प्रभुपददरशकीनो अब होनहार आनंद रघुनंदननाम नाटक प्रकार पढ़िबेको मेरीमति त्वराकरैहै ॥

मुनि:। वत्स भली कही पढ़िही लेहु ॥

शिष्य:। आपु प्रसाद अनूपम नाटक मोको आयो ॥

नेपथ्ये मंगल कोलाहल।

छंद । भूपदिगजानपायो पूतभगवानहोजी वाहवाहै ।
मोदवेप्रमानछायो सकलजहानहोजी वाहवाहै ॥
धायधायरंगवोरि देहुनारिअंगहोजी वाहवाहै ।
विसुनाथदंगसब खेलोएकसंगहोजी वाहवाहै ॥

आदिकविः सहर्षसंभ्रम । अहोमहोसोहिलोसोरत्रिभुवन पूरनकरै हैकाहाईभईग्रावतारभयो । अबअकथमुदमंडितामुनिमंडली अपराजितानामनगरोजायगोहमहूं चलें ॥

इतिनिःक्रांताःसर्वे । विष्कम्भकः । सचिवप्रवेशः ।

सचिवः गद्य । मारगनसुगंधसलिलसिंचावो गिलिमबिछाओ सिंहासन गट्टीधरावो सकलछिति एकछत्र सर्वछितिपति नछत्र नछत्रपति से दिगजान महाराज आवे हैं ॥

पुनःअवलोक्य । अरे सोर सुनो जाय है महाराज दिगजान व.र हों चार करि द्वार लों आइ मुनि मंडली को सतकार करै हैं ॥

ससंभ्रम समुत्थाय । महाराज सलामत महाराज सलामत (इतिसोत्साहंमित्रंप्रति)

छंदझूलना ॥ छत्रचौरनवलितभूषितभूषनललित कलितआनंदआनन सुहायो चोपदारनसोरबारब्रतिवहुंसोरगानजागरनरसभरितभायो ॥ सूतमागधवंदिकर हंबंदनवृन्दइन्द्रइवआयआसनविराज्यो । पूतउत्साहअपराजितानांहलखुदितत्रकसीसविसुनाथभ्राज्यो ॥ १ ॥

अंजलिंबध्वा । महाराज चार हौं की चार अनूपम सुनि बड़ो सुख भयो गुरु धराये चारिउ चिरंजीव लालन के ललित नामतें सुनिवे को मति अति उत्कंठा करै है ॥

नृपःसस्मितलज्जं लिखति ॥

मंत्रीसानंदंवाचयति । हितकारी, १ डहडहजगकारी, २ डीलधराधर, ३ डिंभोदर ४ ॥

श्रुत्वासभासदः । वाहवा, वाहवा, भले नाम हैं ॥

मंत्री । महाराज देखिये भाट, नट, विदूषक, नरतक, आवेहैं ॥

कवित्त । कईरंगपागलालचंदनललाटलाग अंकुशबंधोहैजामेंगालोलिये हाथमें। कम्बरकटारीकंठकठुलाकुकाठधारी याहीभांति औरो

भाट केते लियेसाथमें ॥ आशिषसमूहपढ़ैछंदनकेव्यूहबाँधि पावतअनंदलोग रसनकेगाथमें । करतप्रणामबारबारबिस्वनाथ आवैसभातकिधारै दोनोंहाथनिजमाथमें ॥ १ ॥

पद । मैअसमर्नाहिंबिचाख्योयश्वतोभट्टहै । कांधेढोलहाथलकुरायहनटहै ॥ यहैबिदूषकनटीवोरतकिहंसतहै । बिस्वनाथयहनरतकभावसोलसत है ॥ ( भट्टःकिंचित्समीपमागत्य )

कबित्त । आपुकोसुयशदसदिसनिअनूपछायो सेतदिगपालभयेचीन्हेंहैंने कोऊनजात । डंकनिकेशबदसुनिकैसुनिबंकशत्रु दरकेदिलननैकबदन कढ़ैनबात ॥ परम प्रताप पुंजझारहीसों जारेसारे खलखर बृन्द नाहिं येकऊकहूं देखात । होतोंजोनबिस्वनाथभूपदिगजानदान जलकोसरित सिंधुबाड़वागिसोंसुखात ॥ १ ॥

सोरठा । जोवैचारोलाल जौलोंकीरतिईशकी ॥

निरखतचरितरसाल लहहुसदाहिंमुदमहिपमनि ॥ १ ॥

स्वबाहू डंकार्थ्येदैवंप्रणम्यनटः । अरी सुनो तो दोनों नटी मोमें नट आयो दिगजान ऐसो भूप पायो पुन्नोत्साह समयो बनि आयो कुलि कल कलानि लखायो चाहिये ॥

आकाशे दृष्ट्वा । अरे नटी पुरहूत दैत्यन को युद्ध द्यूत होत है सूत फेंकि तामे चढ़ि रण रंग मढ़ि आपने देव संग ह्वै होंहूं जंग करन जात हों । भो सभासदो सलाम है, सलाम है, मेरी नटी को बिलोके रहियो ॥

सभासदः । देखो सूत गहि चढ़िही गयो आकाश कों । आश्चर्य है आश्चर्य है ॥

आकाशे कर्णंदत्वा बिस्मिता नटी । अरे गीरवान गदित बानी सुनि परे है नट भट जूझ्यो ॥

अधोविलोक्य । ये दूनों बाहैं गिरीं, पांय गिरे यह सिरगिरनो, यह धर गिरनो, मेरे पतिही के हैं ॥

( द्वितीया नटी रोदिति )

नटी । अरी रोवै कहा है होतो बहुत रोज याके संग रही अब सती

होउंगी तोको महाराज पालिघोई करेंगे सभासदो सर तैयार कराय देउ हों पति संग जरों ॥

**सभासद:** । याती आछें जरी ( द्वितीया नटी आंकाशे द्दष्ट्वा ) अच्चरियं अच्चरियं अइपिये अक्काम्यगइ ॥

**अर्थ** । अच्चरियं आच्चरियं, आश्चर्य्य है आश्चर्य है । अइकोमला लापे पिओ अत्ता गम्यइ कहे पीउ ह्यां आवै है ॥

**नट:** । महाराज सलामत भो सभासद: मेरी नटी कहां है ॥

**सभासद:** । अरे नट आपनी दूजी नटी ते पूछि ले तेरे अंग लै जरिगई ॥

**नट:** । अरी नटी तैहूं मिलि गई मेरी नटी तो महाराज के भौन में है हुकुम होइ तो टेरि लेउं ॥

**सभासद:** । अरे नट याती बड़ो आश्चर्य कहे है महाराज को हुकुम है टेरि ले ॥

**नट:** । येनटी येनटी आवै आवै ॥

**नेपथ्ये** । हांजी हांजी पहुंची पहुंची ॥

**पुन:सनटिर्नट:** । महाराज सलामत ॥

**सभासद:** । आश्चर्य कौतुक कियो ॥

**द्वितीयानटी** । साहु साहु तुमये आदि अपुव्वं को दुअं कअं ॥

**अर्थ** । साहु साहु कहे स्यावास स्यावास, तुमये कहै तुम, आदि अपुव्वं कहैं दुअं कहे अति अपूर्व कौतुक कअं कहे कीनो ॥

**बिदूषक:** । अरे नट ऐसे मुहमटकाय नैनानिनचाय झूलनी झमकाय सबके उर आनंद झरलाय हों न समझनो तेरो दूजीनटी प्रथम कौन बोली बोली ॥

**नट:** । एक समय मेरी कलनि बखाननि सुनि कानन सहसाननसिर तनक डोलायो महि विवर बनायो तेही मग मै तहं जाय कलनि लखाय रिझाय लीन्हो । शेषकह्यो माँगु माँगु मेरोमन येही तकि राग्यो येहीको मांग्यो यह धन्या नाग कन्या है नाग भाषा भनै है ॥

**बिदूषक:** । अरे नट तैं नर यह नागिनि कैसे संग भयो ॥

**नट:** । अरे बिदूषक तैं नहीं जानै है की नारी गंगा है ॥

(प्रहस्यसभासदः) अरेबिदूषक तो दौरि याहि गहि हरगंगा हर गंगा कहन लग्यो ॥

नटः। अरे अरे या कहा करै है ॥

बिदूषकः। अरे बावरे हौंहूं अस्नान करोहौं ॥

नर्तकः (सस्मितंपुष्पांजलिंदत्वा) महाराज ये गतीं संगीत की हैं गुलाल मे मोर मातंग उपटे नजर करिये ॥

(इतिगायति)

पद। नृपदिगजानचारसुतजाये गहगहबजतिबधाई। टेक।
जहंलौं देत भूप धन तहंलौं मंगन मनहु न जाई ॥ १ ॥
याचन चहत इन्द्र ब्रह्मादिहु सकुच न सकत न आई।
विश्वनाथ यह उत्सव तिहुंपुर रह्यो अनूपम छाई ॥ १ ॥

प्रबंध। दिगजान प्रकटित मघटित घटनोत्घाटक यशोबितान मनुपमं ॥ (तालझपतारा) संछा दित त्रिभुवनं ॥

तालत्रिपुटा। तिऐऐ या तिऐऐ या तिऐऐ या धधप धधप पगग रे गगप ध सा रेरे स रेरे स सधध प धध सा ॥

ताल रंगजति। तकथुं थुंतक थुंतकति गदि गदि गदि गथैति गति गदिग दिग ॥

सभासदः। वाह वाह आछो नाच कियो ॥

भूपः। बांछित ते अधिक इनाम इन को देवाय देव अब मेरी मति सुत निरखन की उत्कंठा करै है ॥

मंत्री। बहुत भलो। इति निःक्रांताः सर्वे।

(सपरि-कार देवी प्रवेशः)

देवी सखीं प्रति। आजु महाराज के दरबार में नर्तकन नृति प्रकार सुनो है अनूप भयो ॥

सखी विलोक्य सहर्षम्। महारानी महाराज आये रानी ससंभ्रमं उत्थाय पूजयति ॥

नृपः। ये कुशला तुम यथार्थ नामा हो सौतिन को बुलाय सत कार जातें सब सुतन में सम सनेहकरैं ॥

(कुशला सखी मुख मवलोक्यते) सखी निःक्रांताः।

तत: ससुत सखी सुहिता काश्मीरी प्रवेश: ।

कुशला । सखी पूजन की साजु ल्यावै ॥

नृप: । ये लालन पालन हित ब्राह्मण वैष्णव की सेवा करो जामें सब को कल्यान होय ॥

देव्य: । ( शिरसोपदेशं गृहीत्वा ) महाराज हमारे सब के यह ललक है कब इन की बधुन कों हम नैनन सों देखिहैं ॥

भूप: । कछू राजकाज के हित मंत्री हमें परिखे हैं ॥

( इतिनि:क्रांत: ) ( देव्य: परस्परम् )

पद । तबहीं बिचरि गोद जब आवैं सुत कौतुक तकि दृगन अघाहीं । अबतो भये किशोरचारिहू सखिहमसबकहंमुदमितिनाहीं ॥ खेलनजातशिकारभ्रातसब लहहुंिय हैसबलोगललाई । विश्वनाथनृपभाग्यचारिफल लियहमहूंसबभागबंटाई ॥

( षंडप्रवेश )

महारानी चारिउ कुंवरन को सबार भूप बुलायो है इतिकुमारै: सह नि:क्रांत: ॥

रानी । चलो झरोखे लागि सुतन निरखिये ॥ इति नि:क्रांत: ।

( तत: प्रविशति समात्यो भूप: )

भूप: । मंत्री षंड को बड़ी बार लगी ॥

( प्रविश्यकुमारा:प्रणमंति )

भूप: । सुतान् दृष्ट्वा सोत्साहं मंत्रिणं प्रति । पुत्र बिवाह योग भये ॥

मंत्री । महाराज हों अरजई करनहार हुतो ॥

द्वारपालप्रवेश: । महाराज गुरु आवै हैं ॥

( राजा ससंभ्रम मुत्थाय चलति )

मंत्रीबिलोक्य सहर्षम् । अहोभाग्य जिनके गृह ऐसे गुरु आवैहैं ॥

कवित्त । शास्त्रऔपुरानलीन्हेकेतेशिष्यसोंहैसाथ तुलसी कीमालभाल तिलक सुधारे हैं । पहिरेकोपीनकरदंडऔकमंडल हैसीसजटा पीठि चर्मचारुभगबारेहैं ॥ लोयनलखेतें सांतताइहीबिलोकी जाति रूपहीतेजानेपरै भूत सुखकारे हैं । करत प्रणाम पानि पंकजअसीसदेत बोलैंप्यारेबोलन पियूषश्रोन ढारेहैं ॥ १ ॥

**भूपः** ( दंडवत्प्रणम्य सभांप्रवेश्य यथोचित पूजनं कृत्वा )

**भूपः**। सेवक के सदन स्वामी आगवन मंगल मूल है॥

**गुरुःसस्मितः** ( प्रविश्याबामदेवः ) जगद्योनिज श्रवणे॥

भुवना हित मुनि आवें हैं अरु येहू काहू काहू के मुख सुन्यो है की मष रक्षन हेत नृप कुमार मांगि हैं॥

**गुरुविस्मितः**। भो भूप तुम्हारे पुरषन को यश बखान जहान में छायो है तुमहू दान मान में भगवानहीं के सम हौ तऊ गुरु धर्म विचारि हों यही सीख देत हों जातें सुयश न मलीन होय सो सावधान करियो॥

**भूपः**। मैं तो कछू करन लायक नहीं हों प्रभु की कृपा जो मोपै है सोई सब करन को समर्थ है॥

( प्रविश्यद्वारपालः )

**छंद**। कायाविद्युतछटाभासिरसंघनजटाघंघटासीविराजैं।
भ्राजैंबाहुप्रलंबैं अगुलि कुसनकीपैंकापानिछाजैं॥
पीतंयज्ञोपवीतंकलितकृसकटी बल्कलंमुंजगाथं।
बतोतेजस्समर्क्कंबिमलतपसकोध्यानमेंबिश्वनाथं॥ १॥
ऐसे भुवन हित महामुनि आवैहैं॥

**भूपः**। ससंभ्रमं। अरे मुनितोआय गये अर्घ अर्घ पाद्य पाद्य भो मुनें दंडवत बड़ो अपराध भयो आगू ते न लेन पायो अपराध क्षमा करिये॥

**मुनि सस्मितः**। नृप आपने ऐन आवत कोई आग लेन को कहा परखै है॥

**भूपः**। यह सिंहासन है॥

**मुनिः**। अहो जगजोनिज आपहू ह्यां बैठे हैं अलभ्ये लाभ भये बड़े दरशन भये नमस्कार नमस्कार॥

**जगद्योनिजः**। नमस्कार आवो मिलि लेऊं॥

**नृपः**। आपको आगवन मेरे बड़े सुकृत को फल है आप के मष यत्न में भारी भय है। अथवा सर्व भूमि दक्षिता जामे ऐसी कौनौयत्न मनमे दैआये मोंको आपनो किंकर मानि आज्ञा दीजै॥

मुनिः । कवित्त । आपकोप्रतापपुंजपावकपुरारिमानि तोजेचषपलक लगायहोंरहतहैं। पालतपुहुमिपेपिछीरसिंधुसेषसेजसुचितसुखीह्वै हरि सोवतमहतहैं॥ पायदानभूमिदेवदेवलोकचाहैंनाहिंबाहुबलदेवना-हनोकेनिबहतहैं। बिस्वनाथआपकेप्रजानिपुन्यलोकनकोरचतबिरं-चरंचकलनालहतहैं॥ १ ॥

लज्जितोभूपः । आप तो नबीन जगतही रचन लागे हैं जो कंकरी हूको सुमेर कहन लगे तो कहा आश्चर्य है । अब जा हेत आप आये सो सुनिबे की लालसा में बार्ता बिक्षेप करै है ॥

मुनिः । जाके बशिष्ठ ऐसो गुरु है सो ब्राह्मणन कोबांछा पुरवै तो कहा आश्चर्य है ॥

मुनिघातिका । घातिका नामा राक्षसी ससुत बाधाकरै है सो यज्ञ रक्षन के हेत हितकारी डील धराधर दोऊ कुमार दीजै ॥

भूपः । श्रुत्वाबैबर्ण्यं नाटयति ॥

गुरुःभूपंबिलोक्य । ये ज्ञानबान तेज निधान सर्ब अस्त्र शस्त्र नाथ मुनिन में प्रधान हैं । आपने प्रभावतें सर्ब काज करिबे कोसमर्थ यी हैं । तुह्मारे पुत्रनकी कोई बड़ी भाग्य उदयभई जातें माँगिन को आये हैं । तुमऐसो दाता इनऐसो पात्र को संयोग्य दुर्लभहै ॥

नृपः । बत्स हितकारी डीलधराधर आवो हृदय लगाय लेउं ॥

( शिरस्य आघ्राय सगद्गदं )

मुनिये कुमार आपने प्राणअधार आप को सौंपौं हौं ॥

मुनिः । नृप अभिष्ट सिद्धि रस्तु ( इति सकुमारोनिःक्रांतः )

( नेपथ्ये रोदन कोलाहलः )

पद । योगी लिये जात मेरे बारे । टेक ॥

कैसे भूपतिदियेपानिगहि जेप्रानहुंते परमपियारे ॥ १ ॥ मखमल गिलिमचलतत्रसियतुते पदबनपुहुमीकिमिकारि धरिहैं नृप बिसुनाथ दुलारेदोऊ किमिकोही मुनिसेवाकरिहैं ॥

जगद्योनिजः । तुम्हारे पुत्र मुनिते रक्षित सुखपूर्बक जात पंथ निवा-सिन के नैन सफल करि हैं । अंतह पुर में रोदन सोर होय है । हमहूं तुमहूं चलि तिन को मातन को समुझाइये ॥

( इति निष्क्रान्ताः सर्वे )

**पथिकप्रवेश:** ( नेपथ्ये कोलाहल: )

अइसहिअइभइणिअइमाए एक्कोपहिओसमाअदोतम्मुहा । दोसुनि अंजारिसावम्हंडभंडो परेण सुनिदातारिसाजुउलकुमाराआगम्मंति ॥

( ततः कुमारदर्शनार्थिनोन प्रवेश: )

कुमारदर्शनार्थिनः । अइ सहिजुउलकुमाराकियं तदूरम्मिहुं वंति अरे दिट्ठा दिट्ठा ।

ततः कुमारमुनिप्रवेश: ( ततः ग्रामराय: )

पद । कस्सदोणिपुत्तावंचिऊणमुणिणाणिदा । ( याकहे के के दुइ पूत ठगिके मुनि लैआए हैं ) पदसोअमल्लोहिततणंणजासपाइधरे कंटअंकअंपदेहिंतेचलाविदा। धिअधणुव्वाणादोणिभाआरासमाणव आसुछइअमणसामगोरअणोहिदारुवंचिअपेकिवऊणपच्चअंकुणेइ मणेइबिकासइ इमेविस्सणाहराइणोपिआसुदा ॥ इतिनिःक्रांता:

प्राकृतको तिलक । अइसहिअइभइणिअइमायेकहे । येसखियेभगिनियेमाता। एक्कोपिहिवोसमाअदोतम्मुहादोसुणि अंजारिसावंभंड भंडोअरेणसुणिदा । तारिसाजुउलकुमाराआगम्मंति। यह कहे एक पथिक आयो ताके मुखते सुन्यो है जैसे ब्रह्मांड भांडोदर में नहीं सुने तैसे युगुल कुमार आवै हैं। अइसहिजुउलकुमारकिंअंतदुरम्मिहुं बन्ति ॥

याकहे । ये सखी युगुल कुमार कितेक दूरहैं । अरे दिट्ठा दिट्ठा याकहे के के दुइ पूत ठगिके मुनि लैआये हैं । पदसोअमल्लोहिततणं णजासपाइधरेकंटअंकअंपदेहिंतेचलाविदा ॥

अर्थ । जिनके पद की सुकुमारता और ललाई नापाइ कमल कंटकनकों धरे है तिन्हें प्यादहीं चलायो है॥ धिअधणुव्व णा दोणिभाआरासमानव आसुछइअमानसामगोरअणसेहिदा ॥ अर्थ । दोऊ भाई समान वय धनुषबान को धारण किये सुन्दर छबि ते अमित जो शरीर ते ते शोभित हैं । रुविचिअपेक्खिवऊणपच्चअंकुणेइमणोकासइइमेविस्सणाहराइणोपिआसुदा ॥ अर्थ । रूपही को देखिके मनप्रतीति करै है । ये कोई बिस्व को नाथ जो राजा है

ताके प्रिय सुत हैं ॥ ( इतस्ततः परिक्रम्य )

हितकारी । गुरु केतो आये ॥

मुनि:गद्य । वत्स षट कोस आये मोकों बड़ो अपसोस तुम खेदपाये होउगे अति श्रमित अंग गरम उमंग पतंग तुरंग तरंगिनी पति तरंग अव अस्नान करन चहत हैं । यहि बरतर बास बरतर है ॥

हितकारी । यह जल भल है संध्या करिये ॥

मुनि: । भलीकही ॥

डोलधराधर । शय्या तयार है ॥

मुनि: । ये हितकारी ये तो परन शय्या भली बनावैं हैं ॥

हितकारी । ये डोलधराधर मुनि मुख सुनत सुधा सी कथा श्रवण संतोषित नहीं होय ॥

मुनि: । अर्ध रैनि गई सोवो ॥

कुमारौ । दंडप्रणाम ॥

( मुनि: उत्थायप्रातस्सरणंकृत्वा )

पद । उठोकुंवरदोउप्राणपियारे । टेक ।

हिमिऋतुप्रातप्रायमवमिटिगे नभसरपक्षरेपुहकरतारे ॥

जावनमहंनिकस्योहरषितहिय विचरनहेतदिवसमसनियारो ।

बिस्वनाथयहबोलुकानिरखहुरबिमनिदसहुदिसिनिरंजियारो ॥ १ ॥

ससंभ्रमसमुत्थायकुमारौ । भोगुरो दंड प्रणाम दंड प्रणाम बड़ो आलस्य भयो भोर न जागे ॥

मुनि: । चलो अस्नान करो हैं मंत्र देउं जातें शोक शोक मोह भूंख पिआस श्रम आलस्य न होइ । ( स्नात्वा )

सहर्षम् कुमारौ । महाराज मंत्र दीजे ॥

मुनि: । बला अति बला ये दोउ बिद्या लेउ ॥

कुमारौ । ये मंत्र पाय हमकों बड़ो आनंद भयो ॥

मुनि: । पंथचलन की बेर होइ है चलो ॥

( ततः इतस्ततः संचरंति )

हितकारीगद्य । गुरौ बिसाल ताल तमाल साल प्रियाल हिंताल आल जाल कलित कराल जहल पहल व्याल बेताल कुल चहल

पहल कोलाहल तिन ख्याल न हहल हहल हालतलतन बितानन यह कानन अति भयावन है ॥

मुनिः। धर्मनिदरनि अधर्म बिस्तरनि रुधिर मांस उदर भरनि अति क्रूर अघनी मुनि गण यघनी घातिनी नाम यक्षनी छाई रही है ॥

डीलधराधरः। भो भाई चाप चढ़ावो ॥

हितकारी। अबला बध बिधि वेद में नहीं लिखी यह हमारे कुल को नयो कलंक होयगो ॥

मुनिः। वत्स हितकारी ऐसिही पाप कारिनी प्रबला अवला भृगु स्त्री को मुरारि अरु मंथरा को नगारिहू मारि यश लियो है पुनि मम शासन किये तुम को कौन अघ है। कार मुक टंकोर करो से शोर सुनि सो धाय आवैगी ॥

नेपथ्ये कलकलः। भागो भागो भागो आई आई आई। सर्वेसंभ्रिता

मुनिः। अरे यह तो आईही गई ॥

छंद। शारदूलविक्रीड़ित। छूटीकेशलटानिमेघघटनै लीलैसमुदघाटती। छोटेनैनअंगारज्वाललतिकादिग्गैंदसोपाटती ॥ केतेमानुपदंतअंतरगड़े बैठैलोहूचाटती। धोतीवारनखालमालवीभ्फरीजेहिंभनोडाटती १ ॥ वत्स वत्स सजुग होउ सजुग होउ ॥

घातिनी। अरेणिव्वुधेमुणेइमेजुउलकुमारा अम्हाणंपहेअंअप्याणस्सहा अत्थमारगिदा ॥ अर्थ। अरे निर्बुद्धि मुने ये युगुल कुमार हमरे कलेवा अपने सहाय के अर्थ तें लै आये है ॥

साट्टहासं। अहो मुणिदं मुणिदं तुजभ चातुलिअं। जस्से तुम एसव्वोणि मंतिदा अम्ह सक्कारत्थ मिमे ॥ अर्थ। अहो ज्ञानी ज्ञानी तुम्हारी चतुराई यज्ञ में तुमने सब को नेवतो हमारे सतकार के अर्थ येहैं ॥ इतिधावति।

डीलधराधर। अहोगुरो हों न समुभ्रूयों आपकेहुंकारते गिरी या अग्रज के बाण तें ॥

गुरुः प्रहस्य। वत्स हितकारी यह बानी दिगज्ञान ते सीख्यो या जग योनिज ते ॥

**हितकारी** । यह राक्षसी आपके प्रतापहीतें जरि रही हुती होतो निमित मात्रही हों ॥

**भुवन हितः** । अस्नान करि आवो अब अस्त्र सब सिखाऊं ॥

**स्नात्वा कुमारौ** । हेगुरो अस्त्र ससंहार पावैं ॥

**गुरुः** । लेव ॥

**हितकारी** । गुरो बड़ो आश्चर्य है सकल अस्त्र शरीर धारी देखेपरे हैं ॥

**गुरुः** । ( इन सों कहे हमारे मन में बसो ) चलौ हमारौ आश्रम नियरेहीं है ॥

( इतिइतस्ततः संचरंति )

**नेपथ्य कोलाहलः** । सहाय मांगन हेत मुनि को अपराजि गवन सुनि घातिनेय काबुल सों चारु भुजको सहाय लै आयो ॥

**मुनि आश्रम न पहुंचे** । हाय हाय अब कहा होयगो ॥

**आकाशेकोलाहलः** । बरायेरफतनेजन्नतचराहस्तई हमामेहनत जरा-हतेगमनई नकरसानम्बेदिरंगीहा । बिगुफततईनोवअखवानाबिजद नाराकिएयारांवजूदीरक्कार्विसिकस्तानमूदासखतचंगीहा॥ कुमेदअज्जा मुमानेवदजितेगेवर्कअफसांखुदबखूनेखुसगंवारई नापरेधौहौजेमुजैय बरा। जिखुरदेपुरहलावतखयशबेमईजाम्तबसदिलकसवएसोकामरामी हावरुसाजेमतंगीहा ॥ अर्थ । स्वर्ग के जान लियें काहे को तुम बृथा श्रम करोहो आपनो खड्ग धार मार्ग ह्वै होहीं आसुहीं पहुंचाई देत हौं यों दुजन प्रति कहि आपने सहायकन सों बोल्यो सुनो बेगिहो स्तम्भ उपारि डारो अरु इन सबन को अपनी कराल कर बालबधि अति स्वाद संयुत जो इनको रुधिर तातें कुंडनि पूरन करि पान करत मृदुल पल इन विप्रन को जो बहु दिवसनि मैं आजु पायो सो आनंदित भक्षन करो ॥

**इतिआकर्ण्य भुवनहितः** । अरे हम आश्रम को न जान पाये राक्षस बीचहीं आये बड़ो अनर्थ भयो ॥

**( इतिशोकमूर्छितः )**

**कुमारौसक्षोभमुपद्रुत्य** । पहुंचे हैं पहुंचे हैं न डरो न डरो अरे क्षुद्रो इत को आवो हम राक्षस कुल अंत धनुवंत आइ पहुंचे ॥

( इति निःक्रांतौ नैपथ्ये सानंदगानं )

**भजन** । भुजपुरकी भाषामः॥ करमनछौंड़ादोइगोटयेलखिनि । चारुभुजेय कतिरैमरलेखिनि ॥ घातिनिछोड़ैतुरितउड़ौलखिनि । भुवन हितकरजागसहितहम सबलोगबनकरजियरावंचवलखिनि । नरमअंगविस्वनाथबराबर दोउगोटछौंड़ाबरबलपलखिनि ॥ अर्थ। भागनितें दोइठो लरिका आये हैं। चारुभुज को येक तीर ही मारि घातिनी के सुत कों तुरतहीं उड़ाये हैं॥ भुवनहित को जाग सहित हम सबलोगन के जीव बंचाये हैं। जिनके अंग नरम हैं औ बिस्वनाथ कहे महादेको बरोबर बल पाये हैं॥

( इति जैहोय होय ) ( उत्थाय भुवनहितः आत्मगतं )

आश्रम में जय सोर होइ रहो है कौन को है॥

**प्रकाशं** । हाय हितकारी डीलधराधर मोकों मूर्छित छोंडि कहांगये॥

**प्रविश्यशिष्यः** । भो गुरो राक्षसन कों मारि हितकारी हमारो सब की रक्षा करि अब शोच में हैं गुरू कहांरहिगयेहम को खबरि लेन को पठाये॥

**गुरुःसहर्षं** । शीघ्रहीं कुवंर कों ल्याई ल्यावो ह्वांतो राक्षसन के रुधिर तें मही मलीनही ह्वै रही होइगी॥

( शिष्योनिःक्रांतः सबंधुहितकारीप्रवेशः )

**भुवनहितः** । वत्स बड़ोकाम कियो आजो सिर संगों मख सिद्धि ह्वै है सिद्धाश्रम अब यथार्थ नाम भयो चलो आश्रम को॥

इति निःक्रांता॥ ( ततःप्रविशतिसपरिकरोदिगजानः )

**दिगजानः** । मंत्री कुमारन कोंगये बहुत रोज भये सुधि न पाई ।

**प्रविश्यशिष्यः आशिर्ब्रदत्वा** । महाराज मुनि कही है की आपकी कृपातें हितकारी ने राक्षसन को संघार कियो हम निर्बिघ्न यज्ञ करै हैं॥

**स महामोद भयः** । मंत्री तुम इनको लै गुरुपै सुधिजनावो हों अंतहपुर जातहौं॥ इति निःक्रांताः॥

(ततःप्रविशतिसकुमारोमुनिः)

**हितकरी** । भोगुरो अब मख में बाधा नहीं है जो हम को सेवकाई सौंपिए सो करैं ॥

**मुनिः** । मख म हजोतत येक सुता शील केतु पाई है ताके स्वयंबर हित धनुषमख करै हैं धनु काहू नृप को उठायो नहीं उठगे अब फेर स्वयंवररचि हमहूंको नेवत पठायो है हमारे संग तुमहूंचलो॥

**डील धराधर** । गुरो कन्या पाषान की है की दारु की है कीप्राचीन धातु की है ॥

**गुरुविक्ष्य** । हेवत्स जैसी सिंधु सुता तैसी कन्या है चलो ॥

इति निःक्रांताः ॥ (सबैं सामागत्यशीलकेतुप्रवेशः)

**शीलकेतुः** । मंत्री ऐसी ततबीर करो जो या यज्ञ में आवैं अरु जौलौं रहैं तौलौं अनुदिन छन छन अपूर्ब अनूपई सुखन को अनुभव करैं ॥

(चारप्रवेशः चारः दृष्ट्वा स्वगतं)

**कवित्त**। द्वादशतिलकदीन्हेंतुलसीकीमाललीन्हें धारेहैंकिरीटजामेंमार तंडवारजात । चौंरचलैं दूनौंवार छत्रकोअजोर जोहिभोरकैमो भयोशीतभानुअतिहींलजात ॥ ज्ञानतोअमानजाको परशंसाकरैं कौनदानसममानएकरसनाकहोनजात ॥ भूपनाथबिश्वनाथराजै आजुमेरोनाथलोकदसचारि मध्यजाको शत्रुहै अजात ॥ १ ॥

**मंत्री** । अरे आश्चर्यित ऐसो कहाहै ॥

**चारः** । महाराज सलामत महाराज सलामत ॥

**पदमैथिलभाषासा** । मुनिकेसंगदुइनैनारेलिछि । सुंदररूपजादूगर छथिसेपथराकीपुतरीकमाउगिवनौलिछि ॥ हेंपड़ाय कहुंएतैऐलहुं सेबिरतांतअहांकेसुनवलिछि ॥ अबभूपतिबिशुनाथहोइजैजेकछुकरैक कहमनभवलिछि । अर्थ । मुनिकेसंग दुइलरिका आये हैं तिनकर संदर रूप है जादूगर हैं । पथरा की पुतरी का स्त्री बनाइनि है मैं पराइ कै इहां आयेउं सो बिरतांत अपना का सुनायउं है बिश्व-नाथ भूप तुम्हार जयहोय जोकछु करैं का होय सो मन भावाकरी॥

(श्रुत्वानृपा श्रवणे सामोद सतमोदः)

**सतमोदः** । हम पितु श्राप दै मम मातु को पत्थर की करो यह

शापोद्धार बतायो हुतो को परम पुरुषावतार पाय परसि फेरिनारी होयगी हों अनुमान करत हों भू भुवनहित मुनिसाथ तेई आये॥

सहर्षं नृपः। मुने अवश्य जोहन योग हैं चलिये भुवनहित को आगू ते लै आवैं॥ इतिनिःक्रांतो॥

नेपथ्ये कोलाहलः। अच्चरियं अच्चरियं।

अर्थ। आश्चर्य है आश्चर्य है॥

भजन। लैअगुवानपुरोपतिआवत। टेक॥

मुनिकेसंगकुंवरलखुअनुपमअपनीसुछविछटमिछितछावत। अस नहिंदीखसुन्योनहिंकतहूं कहतनवनतमनहिंजसभावत। बिश्व नाथतनपनसबनावत नैननिचैननीरबरसावत॥१॥

मंत्रीआकाश्ये। कहा भूप मुनि कों लेवाइ निकट आये॥

( सकुमारभुवनहितमुनिसहितभूपप्रवेशः )

भूपः सविधिपूजयित्वा। प्रभु को आगमन भूरि भाग्य को फल है आप के संग जे कुमार हैं तिन कों निरखत नैन नहीं अघाय हैं ये कौन के हैं॥

मुनिः। ये दिगजान भूप के कुमार हैं पुरारि प्रसाद पायो जो तुम्हारो पिनाक है ताको तौलो चहत हैं॥ ( नेपथ्ये )

पद। महिजाहितकारीकोजोरी। टेक।

बिरचोविधिरतिमारबिपुलरचि सोचिसोचिकैकल्पकरोरी॥ हर गिरिजापदप्रणवैंहमसब सकलसुकृतकरफलयहचाहैं। नृपमति फिरहिकिविश्वनाथ धनुमृदुलहोइयेइतोरिविवाहैं॥

प्रविश्यसभयंचारः। महाराज सरासुर दिगसिर दोउ आवे हैं॥

भूपः। ( सविस्मयंचात्मगतं )

भूपः। अहो ईश अवधौं कहा होय॥

( ततःसरासुरदिगसिरसःप्रवेशः ) ( प्रविस्मितवंदीस्वगतं )

कवित्त। याकेदसंसीसबीसबांहुडोलशैलमानो याकेएकसीसबाहुदीरघ हजारहैं। दूनौलालचंदनकेदोन्हेहैं त्रिपुण्डभालपहिरेरुद्राक्ष मालछायेतनछारहैं॥ दूनौअतिबलीभायेदूनौजगजीतिपाये

दूनोभयदेतदेखेतनविकारारहैं । दूनोधनुतोरैंताकोकौनहैउपाय
हाय सोकतेउधारकोअधारकरतारहै ॥

सर्वेश्चंचित: । हाय हाय अब कहाहोन चहत है ॥

डोलधराधर: । गुरो या कौन कौतुक है ॥

मुनि: । बत्स या कौतुक नहीं है यह सहस्रभुजधारी दैत्य है या
बीस भुजधारी राक्षस है ॥

हितकारी । गुरो इनको रूप देखत सकल सभा अद्भुत भयानक रस
सागर में डूबी देखी परै है ॥

दिक्शिरा:छंद । बताय देहु वेगहीं सुताअनूपहैजहीं । लैजाहुंमैं
असीसकै पिनाकटूकबीसकै ॥ १ ॥

सरासुर: । गुरुकोधनुहैनविचारतहौ दसगालनिगालनिमारतहौ । नसु-
नोतुमबैननिमारकहै गुनियेमनहीगुरुगर्बगहे ॥

( दिक्शिरा:तिर्वगवलोक्य )

कवित्त । मेरे भुजदण्डनतेदेखिखंडखंडदंड भाजि ब्रह्माण्डहींते काल
कीन्हागौनहै । परम प्रचंडनप्रखंडमेंअखंडकौलौ पेखिकैप्रताप
मारतंडडोलेसौनहै ॥ देतदेतदंडधननाथोभयेदंडहीनसुनतको
दंडखंडइन्द्रमानोज्यौनहै । वाहुकोंदुहूनदंडसोसुमेरतोलोंजाय
खोनमुंडमालीकोकोदंडगर्वकौनहै ॥ १ ॥

सरासुर: । अरे आश्चर्य आश्चर्य है ॥

कवित्त । कोईभगवानवरदानदातातीनौलोक तीनपायपृथ्वीलेनबेषबड़
लीनोहै । आयोतातपासचीन्होतापैननिरासकीन्होदीन्होदान
लीन्होऊनोमानिरोसभीनोहै ॥ भरूयोंपिलुलीकेमोहिंदानीदान
द्रव्यतुल्यहोहींपानिदोईपालरेऔतोलिदीनोहै । पर्वसर्वरोघ
जातेंखर्वजसस्वर्भाषे रैंतेरोयेसोगर्वहोहूं नाहिंकीनोहै ॥ १ ॥

दिक्शिरा:सवैया । येकहीसीसकैकौनधरोसिगरोजगयोंसरसोसममोहै ।
तौनेहींशेषकोवेसशरीरमें सूक्षमकीन्हे अभूषनजोहै ॥ सोशिववासकिये
जेहिधैन सोकोलभयोकरयेकहिकोहै । होंनाहिंगर्वकरोंकरैकौनप्रशं-
सतजाहिहरारहतोहै ॥ १ ॥

सक्रोधंसरासुरः । पीनपिनाकपुरारिकोयौंगिरच्यो विधिलैकरवज्रको सारहै । याकोनजानततेंगहता नहिंसीखगनैगुन्यौपूरोगंवारहै ॥ आपनोगर्वगवाँवनकोधनुतोरनकोसठकीन्हे बिचारहै।जोबढ़िकैबलतैंबल कैअवलोकतहैसोतोनाउकोबारहै ॥ २ ॥

सक्रोधंदिक्शिरः । छंदपद्धरी । बकनहेंपिहितोबकाहिआन ।

सरासुरः । मुखनाहिंहमारेबेप्रमाण ॥

दिक्शिराः । भुजभारनढेयेहोभुलान ।

शरासुर । दसशतभुजबलतौंतुहीजान ॥

दिक्शिरा । सवैया । तौलिकखाउतुलाधनमें बलतोरिहौंहोहींजबै फिरिहै ॥

सरासुरः । लायकबंदनयाधनुहै तेहिकैसेकुदीठितहूं हेरिहै ॥

दिक्शिरः । काहेदुखावतहैवदनै बकिऐसैकरैंगेकहाकरिहै ॥

सरासुरः । मैंगुरभक्तनहौंतोहिंसो करिहौंकरिवेजोइजोतोरिहै ॥

सक्रोधंदिक्शिरः । तुवगर्वहीकेसाथ, तोरोंधनुषधारिहाथ ॥

सरासुरः । दोप्रथमबरनबिहाय, जोकहहिभूंठनआय ॥

दिक्शिरः । धनुषतोरितेरहूमदतोरिहों ॥

(इतिपरिकरंबध्वाधावति) (सुबुद्धिनामबंदीआत्मगतं)

सवैया । करिजोकरमेंकैलासलियो कसकेअबनाकसिकोरतहै । दइ तालनबीसभुजाभहराय भुकेधनुकोभकभोरतहै ॥ तिलएक हलैनहलैपुहमी रिसिपीसिकैदांतननोरतहै । मनमेंयहठीक भयोहमरे मदकाकोमहेशनमोरतहै ॥

( सहस्रकरैःतालिकाःदत्वाप्रहस्य )

सरासुरः । पिनाक तुमको नमस्कार है । इतिनिःक्रांतः ।

( अमित दिक्शिरा उत्थवस्य )

दिक्शिरः । अरे यामें महा जादू ऐसो जानो जाय है वैसहीं कन्या को लै जाउंगो ॥

आकाशे । स्वामी स्वामी तुम्हारी कुंभीनसी कन्या को मधुनामा दैत्य हर लाये जाय है घनधुनि मखमें है, आप को भाई भयानक जप करन गयो है, घटकर्ण सोवै है ॥

विस्मितःसक्रोधंदिक्षिर । अरेदैत्यनकोहियेकीआंखैंफूटगई ॥

सवैया । अजुसरासुरकोसरसो बिनबाहुंनसीसधरामेंसोवैहौं ॥ बाहुनके
बलसोंबलिबांधिकै बंदिमेंबासवसोतकवैहौं ॥ वाजिनसुंममें
शुंभनिशुंभको खूबखुंदाइसिवाकोरिझैहौं । पूरिपताकहिंश्री
नितसो मधुमोमधुगारिकैपानकैजैहौं ॥

(इतिसत्वर्रंनिःक्रांतः) (नेपथ्येजयजयतिकोलाहलः)

सुबुद्धिबंदी । यह बड़ो विघ्न विधाता ने नेवारि दियो, धनुष की
गरुवाई दिग्गिर के उठावत में सबही लषिलीनी अब जाके उर
उत्साह होवै सो उठावै ॥

मंत्री । येतो सबमुनिशिर लटकाय लिये अब कहा होय गो ॥

भुवनहितः । वत्स हितकारी धनुष संग सबन की शंका भंजौ ॥

हितकारी । गुरु आप की कृपा कटाक्षयों कार्य कारो है ॥

(इति परिकरंबध्वा संचरंति)

सुबुद्धिबंदी । आश्चर्य है आश्चर्य है गहत उठावत तौ देख्यो नहीं
धनु भंगही को घोर सार छाइ रह्यो ॥

आकाशेछंद । सोरउद्धुतमहिखूबलटपटतसब सिंधुसंघटतजलबेलथल
छूटिगो । शेषफनफटततलअ सहारटत बाराहबलघटतजुगडाढ़सो
टूटिगो । दंतचटचटतमहिशैलयुतछटतदिगदंतगनहटतभलकुंभथल
कूटिगो । दैत्यलटिलुटतअभिमानछुटत कोदंडकेटुटतब्रह्मांडसो
फूटिगो ॥

नृपः । भोगुरो यह काज भुवनहित मुनि के प्रभाव तें भयो जो कछु
उचित होइ सो करिये ॥

सतमोदः । आतुरी करो कन्या को लै आवो जयमाल पहिराय
देइ ॥

(सखीभिर्षिः महिजाप्रवेश)

डीलभराधरः । गुरो यह कन्या तो ऋग्रज को माल पहिरावै है
कहा महिजा येही है ॥

गुरु । ऐसही है

डीलधराधर । याहि देखि या शंका मेरे मन में आवै है हरिसागर मथि श्री निकारी मेदनी काहे नहीं मथी ॥

सखी पद । पहिराइहुजयमालनपानिसंकेलति है ॥
रहीटकटकीलाय पलकनहिंमेलति है ॥ हायकहायहिभयेरहीहैमन-हुठगी । बिश्वनाथयहिकुवंरिकुवंरओडीठिलगी ॥

सतमोदः । कुवंरि को अब अंतह पुर को लैजाउ ॥

(सुतांगृहीत्वा सख्यानिःक्रांताः)

भुवनहियः । भूप तुम्हारी जय होइ ॥

(इतिसुकुमारी निःक्रांताः)

नृपः । गुरो आप आसु पत्रिका लिखि अपराजित पति पैं पठाइये मैं मनि मंडफ कीतयारी करावन जातहौं ॥

(इतिनिःक्रांताः) (सपरिकर दिगजान भूपप्रवेशः)

राजानंप्रतिमंत्री । पद । जबतेंकाहिसुधिमिश्यसिधारे । तबतेखबरि सुनीनहिंयवगन तलफतप्राणहमारे ॥ बिकलाईतिनकीजननिनकी कैसें करिकहिजाई । बिश्वनाथछनजातकल्पसम हगजलसरिसरसाई ॥

मंत्री । महाराज हों जाइ गुरू सों प्रश्न करी हुती तिन ध्यान धरि कह्यो दोऊ कुमार खुसी सों हैं अब हितकारी को कछु परम हित भयो है ॥

प्रविश्यद्वारः । महाराज सलामत भूपशीलकेतो पत्रिकेयम् ॥

(भूपःगृहीत्वा अलगतंवाचयति)

सभासदः पद । बांचतकहाभूपतिसुखछायो ।
रोमावलीभलीउठिराजति वपुषवनसफलपटतरपायो ॥ मुखनिरत अंम्भोजप्रातको अंबकअंबकदंबबहायो । बिश्वनाथजनुअनदहियेको उमड़िनैनमगबाहेरआयो ॥ १ ॥

भूपःसर्वान्श्रावयति । अनंत श्रीमहाराज अपराजिताधिराज सकल महाराजानि सिरताज जग लाज को जहाज गरीब नेवाज महि-मंडल महेंद्र सुरेंद्र के उपेंद्र सम करन काज यश जागत जहान की भान समान प्रतापवान दान मान सनमान सुजान ज्ञान प्रेम निधान दिगजान भूप भूये ते शीलकेतु भूप की जोहार आप अनूप

कुशल स्वरूप हैं इत आपकी कृपाहीं कुशल है भुवनहित मुनि संग अंग अंग आभा उमंग अनंग आभा भंग करन हार आप के युगुल कुमार आये हम लोग लोयन लाहु पाये हितकारी महीपन मदमोरि महेश धनु तोरि मही कीर्ति छाई महिजा पाई सजि बरात आइये ब्याहि लै जाइये ॥

**श्रुत्वासोत्साहंदशरथजनकारो** । तात पत्रिका मो कों दीजै मातन कों सुनाऊं ॥

( इतिपत्रिकांगृहीत्वानिःक्रांतः ) नेपथ्ये ( मंगलगानकोलाहल )

**पद** । ललकतरहींकुंवरलखिबेकों सुन्योहोतबरब्याहहो । अबनअमात अनन्दउरकाहूमुनिपरभावअथाहहो ॥नृपदिगजानबीजसुखतरुको बोयोसुकृतसुहायहो । सोईयहिअवसरमहंअद्भुत फलोचहत बिशुनाथहो ॥

**भूपःमंत्रिणंप्रति** । अब गुरू गृह चलो चाहिये ॥

( ततःजगद्योनिजप्रवेशः )

**सविधिपूजयित्वान्नृप** । होंतो आपही के पास जातहु तो आप बीचही मिले बड़ी भाग्य ॥

**गुरुः** होंसुन्यो हितकारी डोल धराधर की खबरि आई है यातें आतुर चलो आयो हों ॥

( भूपः सहर्षं रुबेहृत्तांतंकथयति)

**जगद्योनिजः** । आप से पुन्यवान पुरषन के सकल काज आकस्मात हाहोय हैं ॥

**भूपः** । अब बरात चलिबे की सुघरी बताइये ॥

**गुरुः** । अबहीं आछो है ॥

( भूपः मंत्रिणंपश्यति )

**अंजलिंवध्वामंत्री** । महाराज आपतो महीमहेंद्र हैं सब तरह की तयारी हो बनी है ॥

**भूपःगुरुमप्रति** । आपकी कृपा ते यह सब काज भयो अब बरात लैचलिये ॥ इतिनिःक्रांतः सर्वे ॥

( सपरिकर शीलकेतु भूपप्रवेशः ) भूपः मंत्रिणं प्रति )
अंजलिंबध्वा मंत्री। महाराज अबतो बरात आगन मात्रही बाकीहै॥
प्रविश्यचारःअंजलिंबध्वा। महाराज सलामत दिगजान भूप सुत दरशन लालसा अति आतुर आये, होतों ज्यों त्यों कारियोजननमात्र बरात तें आगे आयो॥

## ( अपराजिताधिराजपत्रकेयम् )

सानंदंभूपःगृहीत्वा। अनेक श्री सकल महिमंडल मंडनानंद चंद अनंत चण्ड मार्तण्ड सम प्रताप वन्त उद्दण्ड दोर्द्दण्ड कोदण्ड प्रचण्ड वान नवखण्ड बैरिबरखण्ड बाहुदण्डखण्ड खण्डकारन खण्डन पाखण्डविज्ञान कृपानवान जाहिर जहान बिक्रम महान जङ्ग जयमान श्रुतिकेतु कीर्तिकेतु शीलनिकेतु शीलकेतु भूप जूयेते दिगजान भूप को जोहार, आप पत्रिका आई इतहूंकुशल बनाई। सुघरीआजुहिं पाई हरषि बरातचलाई॥
पुनः कर्णन्दत्वा ससंभ्रमं मंत्रिणंप्रति। महाराज निपट निकट आये निशानन के नाद सुने परैं हैं, चलो चलो आगे तें लीजिये॥
इतिनिःक्रांताःसर्वे।

## ( ततः प्रविशति सखीभियःसहितादेवी )

नेपथ्ये धावो धावो ल्यावो ल्यावो हाथी हाथी घोरे घोरे रथ रथ॥
आकर्ण्यचकितादेवी। अलीअट्टालिकाचढ़ि देखुतो कहा होय है॥

( दृष्ट्वासखी )

गद्य। जिन अङ्ग अङ्ग आभा उमङ्ग रङ्ग रङ्ग तुरङ्ग एकसङ्ग गमनत धुनि धारे मतवारे कारे शैल सम भारे संवारे दंतारे कतारेंन को गैल गैल ऐल फैल घहरि घहरि चलत बहल सहल सहल न चलत नर महल महल चहल पहल सब शहर टहल खैर भैर है यातें बरात की अवाई आतुर जानी जाय है॥
देवी। अरी होहूं कौतुक निरखन कों आऊं हौं॥
अन्यासखी। हे देवी दूनो महाराज को संगम देखि आगेतें सतमोद मुनि द्वारचार के ततबीर कों द्वारपर आये हैं॥
देवी। ह्यांई लेवाय ल्यावो॥

( ततःप्रविशतिसतमोदः )

**पूजयित्वादेवी ।** कैसी बरात है कैसे नृप हैं कैसे मिलन भयो ॥

**गुरुःगद्य ।** बिबिधि बरन बैरख ध्वज पताका निशान कुसमित कानन महान निसान आदि बाजन प्राधन जांगरादिगानकोकिलादि खग कूजनिभ्रमान परसत पटसुबास जलकन युत मृदु सिंधुर निश्वास आठौ दिसनि औ आकाश त्रैबिधिबतास को बिलास करत सुखमा प्रकाश युत अतिहीं हुलास ऐसी बसन्त ऋतु बरात जोहत उर सुख न समात अरु इत जात अगवानब्रात का अदभुत संगम भयो ॥

( देवीततस्ततः )

**सतमोदः पद ।** शोभासीवजगतपतिदोऊमिलनकाछिपटतरिये। उनकी पटतरयेहैंउनको पटतरउन्हैबिचरिये ॥

हितकारीओडीलधराधर समअंगसुठिसुकुमारे ।

विश्वनाथनृपसंगऔरहैं सुंदरयुगुलकुमार ॥ शोभा ॥ १ ॥

**प्रविश्य द्वारपालिका ।** महाराज दिगजान तो सूधे भुवन हितुही के निवेसचले गये अरु सुवन मिजन लखितिनको अद्भुत सनेहप्रशंसत महाराज द्वार पर आइ मोसों कह्यौ को गुरू को जनावै अबहीं कुमारनले इतआवैहैं ॥

**सतमोदः ।** होंततबीर को जाउं हों ॥

**देवी ।** होंहूं झरोखनतें लखि नैन सफल करन अट्टालिकाको जाइहों इतिनिःक्रांता: ।

( सकुमार दिगजान शीलकेतुप्रवेशः )

**शीलकेतुः ।** हे महाराज आपनो शाखोच्चार करिये ॥

**दिगजानः ।** हमारे गुरु करैंहैं ॥

**सस्मितःशीलकेतुः ।** जाको बंश शुद्ध होयहै सो कहा आपने मुख कहत लज्जित होयहै ? ॥

**जगद्योनिजः ।** महाराजन के पुरोहितई बंशोच्चारकरैहैं ॥

( इति शाखोच्चार करोति श्रुत्वा शीलकेतुरपि )

**गुरुः ।** शीलकेतु बंश कहाई डीलधराधर के अर्थ आपनी कन्यादेउ ॥

**भुवनहितः ।** इनतो बंश कहाई कन्या पाई यह काज सब मेरोकीन्हो

है दर्भकेतु की दूनो कन्या डहडहजगकारी, डिंभी दरकेअर्थदेउ ॥
शीलकेतुः । हमारी बड़ीभागि है जो मांगिकै संबंध करायो हितकारी तो भुज बल कन्या पाई है ॥
सतमोदः । आपजनवास को जाइये सकल चार करिये हमहूं ह्यांके चार करैहैं (इतिनिःक्रांततः)
प्रविश्य मंत्री द्वारपालं प्रति । महाराज सों जाहिर करो मोहिं कछू अर्ज करनेहै ॥

(द्वारपालोनिःक्रांतः)

प्रविश्यशीलकेतुः आजु तुम शंकित ऐसे कहाहै ॥
मंत्रीभूपकर्णेजयति । याबिवाह ऐसो भयो जाको सुरनर मुनिसब प्रशंसा करै हैं औ सब बात सुधरिगई अबलेहबश भूप को इतना न राखिये बेगिहीं बिदाकरिये बहुत रोज आयहूं भये ॥

(शङ्कितः नृपःकिंकारणम्)

मंत्री । हों मंगनन मुख खबरि पाई है हरधनु भंग धुनि सुनि रैणुकेय आश्रम तें गवन करनहार हैं जौलों आवैं तौलों अपराजिता नाह अपने नगरको पहुंचि जायं तो भली बात है औ मोकों बलाय दिगजानहू भूप या फरमायो है हितकारी डीलधराधर की मातानिरखन को बहुत उत्कंठित है बेगिहीं बिदाकरायदेउ ॥
उत्थवय्यनृपः । बहुत भली चलो बिदाकरैं ॥ (इतिनिःक्रान्ताःसर्व्वे)

(प्रविश्य सपरिकरो पराजितेशः दूतस्ततहसंचरति)

दिगजानः । गुरो शीलकेतु सांचे शीलकेतु हैं जिनको दान सनमान सुभाय हमको तो भूलकहो कहाकरै जिनसो छन भरे की भेंट भई है तिनकोजनमभरि नबिसरै है ॥
जगद्योनिजः । सत्यहै शीलकेतुनृप याही भांतिकेहैं ॥

(शंकितस्वरमाणःबंगदेशीयछात्रःप्रविशति)

छात्रं । अमीगौतमेर्शिष्यअमाकेगुरुतगादापठैयेसन । सुने धनुष भांगा अतिरागित रैणुकेयआस्ते छेन येखन ॥ यदपितुम्हार पुत्र हैये मनभयकिछुहोवैनतुमाके । विश्वनाथन्ट पखबरि जनायाछेनकरो बेनतनबिजताके ॥

**अर्थ** । अमी गौतमे शिष्य कहे हम गौतम के शिष्य हैं अमा के गुरु तगादा पठैये सन कहे हमको गुरु शीघ्रहीं पठायो है । सुने धनुष भांगा अति रागित रैणुकेय या छण में आवत हैं । यदपि तुम्हार पुत्र हैं ये मन भय किछु हबैन माके । कहें यद्यपि तुम्हारे पुत्र या भांति के हैं को तुमको कछु भय नहीं है । बिश्वनाथनृप खबरि जनाया छेन करिबेन तजविज ताके कहें है बिश्वनाथ नृप परंतु तुमको खबरि जनाई है ताको बिचार करियो ॥　　इतिनिःक्रांतः ।

(भूपः श्रुत्वा शंकितः विचारयति)

**विस्मितःमंत्रीअंगुल्यानिर्दिशति** । महाराज देखिये देखिये महाउपद्रव पेखो परै है ॥

**कवित्त** ॥ धरातउठावतअपारधूरिधुंधकार अंधकारकियेधाराधरनिधवा-यकै । तोरततरुनलैभंकोरनतेशाखवृन्दपूरिइन्द्रलोकहूकोपत्र नउड़ायकै ॥ अमितससानिघोंसोबधिरकरतकानखेर सेसहर कोन्हेछप्परढहायकै। कासिवीकंपावतसोकुटुरढहावतसोहाय ऐसोपौनकैसोकारि हैधौं आयकै ॥

**भूपः** ॥ गुरो गुरो या कहा महा उपद्रव होय है ॥

**जगद्योनिजः** । असगुनी बहुत पेखे परैहैं पै मृग दाहिने ओर चले आवै हैं यातें परिणामे भलाई होयगो ॥

( ततःप्रविशतिरैणुकेयः )

**अतिशंकितो मंत्री** । जैसे सिंह के ससेट लघु मृगन युथ्य ससेटि जाय ऐसी सिगरी सैन पेखी परै है ॥

**छन्दनराच** । विलोकि तेज योप्रचंड मारतंड चंदभे ।
बरै न बेदि बन्हि बायु बारिबेग बंदभे ॥
सुरेश लोक छत्रिबृन्द बंस्रते निरासभे ।
महीमहेंद्र रुद्रसे मुनिंद्र ते सत्रासभे ॥
दिपै त्रिपुंड भालमें जटा सुशीसमेंछजे ।
कुठारकंध है तुनीर हैकोदंड जसजे ॥
समुंज मेखुला मृगाकोचर्म धारनै किये ।

लसैं बिशाल नैनलाल जाहिरै रसैहिये ॥

छन्द भुजंगप्रयात ।

( अलंकाररुद्राक्षकेअंगकोन्हे ) करैदाहिनेदंडऔबानलीन्हे ॥
( हृदयमेंमहाअस्त्रकेधायराजैं ) मिलेमांतरौद्रउइन्हैमाहभ्राजैं ॥
जो गौतम शिष्य कहिगयो तोते रैणुकेय निश्चय ते येई जाने जाइहैं॥

य।नादवतीर्यन्टप: । पाद्य पाद्य अर्घ अर्घ ॥
रैणुकेय: जगयोनिज गुरु धनुष कौन तोरनो ॥
जगद्योनिज: । हितकारी ॥
रैणुकेय: ( आत्मगतं ) सर्बभूत हितकारी तो नारायण हैं और हर धनु भंगकरन हारदूजो कौन होइ गो ।

प्रकाशम

सवैया । पूरुबहोंइतिहासनमें सुन्योकोपिहरीमृगनारीसंघारी ।
फेरिगुरुगरदाबिकैनील कियोनमिटैवहनीलताभारी ॥
यद्यपिदागभयोहियरें रिसिसांतकरीबितीबातबिचारी ।
तोरिपिनाकनवीनकरो हरिहौसबगर्बजोशिष्यपुरारी ॥ १ ॥
रनपच्छिपतीसबपच्छनलच्छन बानसपच्छनतेंतोरिहौं ॥
बहुअस्त्रनशस्त्रनसागरमें परपच्छिनतच्छनहींबोरिहौं ॥
बरबिद्यामहेशजोमोहिंदई दरशायमकुंदमदैमोरिहौं ।
गहिचक्रकोबक्रकैकाटिकौमोद कौटूकपिनाककेहोंजोरिहौं ॥

( तिर्यगवलोक्य )

छंद पद्मावती । यह काको दल भारी है ।
भुवनहित: । यहि पालक हितकारी है ॥
रैणुकेय: । कहुकिनवेगिमुरारी है ॥
शिर:संचाल्यभुवनहित: । जिन घातिनि सरजारी है ॥
रैणुकेय: । तिय मारि पराक्रम कौन कियो ॥
भवनहित: । शरएकतनैतेहिफेंकिदियो ॥
रैणुकेय: । इतनैपरभावसुनामलयो ॥
भुवनहित: । पगछ्वैजेहिपाहननारिभयो ॥
रैणुकेय: । तुमऔरकीऔरबनावतहौ शिशुकोअतभाषिभोरावतहौ ॥

भवनहित: । तिनकासोपिनाकहुतोरिदिये ॥ मुनिहोपरभावमैशंककिये ॥
रैणुकेय: । अरे प्रभाव भनि भटाई कहा करै है यह हितकारी कौन है सो बताउ ॥
भुवनहित: । येदिग जान महाराज के चारि पुत्र हैं तिन में अग्रज हैं ॥
विस्मितरैणुकेय: आत्मगतं । चंडहू के प्रचंड दोर दंड को दंड करषत श्रम पावत रहे सो बाल बाहु दंडन ते टूट्यो काल गति जानी नहीं जाय ॥
प्रकाशम् । कहा वह धनुष तोरनहार हितकारी है ॥

( चत्वारोभ्रात: रथादवतीर्य उपसर्पन्ति )

रैणुकेय: आत्मगतं कवित्त । जोपैहोतोकामनामसुनतमहेशजूको धनुकोप्रनामकरिदूरिहीतेभाजतो । होतोजोसिंगारतोअकारताकोरस-हो है कैसेकैप्रतंचापानिगहितामेसाजतो ॥ होतोहरिहोतेचारिबाहुधारे शंखआदि वीरनरदेवनमैऐसोकौनभ्राजतो । भारीछबिधारोहठिमोरो मनहारो यहकोहैहितकारीरूपरोमरोमराजतो ॥ १ ॥

( अंजलिंबध्वा )

उद्दडहजगकारी । अग्रज ये मुनिहैं कैछत्रीहैं निश्चय नहीं होइ ॥
हितकारी । दशदिग दुरदरदरद करनकरनघट अग्रजमद हरनहरन हारहजार करन नर्वदा धारधार कुठार सों सोनृप बीरन रनमुनि हैं ॥
तत: चत्वारोभ्रातर:मुनिंप्रति । पायंपरियतु है पाय परियतु है ॥

( वामकरेण शिरंदत्वा रैणुकेय: )

छंद । अरेमोहिजानैन ? ॥
हितकारी । तुम्है कोनजानैन ॥
रैणुकेय: । फुटेहियजानैन ! ॥
हितकारी । कहाआपजानैन ॥
रैणुकेय:सवैया । तोरिपिनाकवकैबहुबाकचहै अबआसुहिंनाकसिधारी ॥
हितकारी । बालसुभायनखेलनकोंछुयोटूटगोबनायेबनैधोंबिचारी ॥
रैणुकेय: । सोबनिहैनबनैयहबात दैपानिदोऊगृहपंथसिधारी ॥
हितकारी । हाजिरहैंमुनिहाथहजूरमेंस्वामीसोंहैकहादासकेचारी ॥ १ ॥

रेणुकेय: । अरे कहा दया करावै है सर्व छत्रानी गर्व अर्भ वसा
वासित या कुठार धार है ॥

( इतिश्रुत्वादिगजान:भूमौपतति )

( मूर्छितंपितरमवलोक्यईषदश्रुसिक्तनेत्रप्रांत: )

हितकारी । आपसे मुनिन के बदन ऐसे बचन नहीं खुलै हैं ॥

रेणुकेय: । कुंडलिया ।भटछत्रियछितिछत्रपतिधनुधारीबरिवंड । तिनके
रुधडनमुंडसों पूरकियोनवखंड ॥ पूरकियोनवखंडवपुषयकयक
कुठारसों । नवविद्यनदियतोषियेककोरुधिरधारसों ॥ जगजो
निजहितभुवनभीखिमांगनपटुलैपट । असमुनिमोहिंजनिजानु
बालमैमुनिहौंरदभट ॥ १ ॥

( गुरुनिंदाश्रुत्वासक्रोधंडहडहजगकारी )

छंद । सम्हारिबैनभाषिये । मुनीशहू नमाषिये ॥ गुरुननिंदनोमुने । क्षमा
करीदुजैगुने ॥

सक्रोधंरेणुकेय: । कुठारधारदेखिकै । करालकाललेखिकै ॥ सपच
मानभक्षसो । अकब्बजब्बरक्षको ॥

दोहा । बारयकोसनिछत्रचिति कीन्होधरंकुठार । दुजताइहितें
मानिबे लायकमैहौंबार ॥

सक्रोधंडीलधराधर: । यकइसबारनिछत्रिछितिजबकीन्होंमुनिराजु ।
हितकारीसमक्षत्रिनहिं रच्योजानिहोआजु ॥ २ ॥

सोत्साहंरेणुकेय: । भली कही भली कही ॥

छंदतरंगिनी । हितकारित्रिभुवननाह । गुनिभयोरनउत्साह ॥
पुनिबालकोमलजानि । मनभईबातगलानि ॥
तैबलजुवरननकीन । रनचैनभयेनबीन ॥ १ ॥

पुन:हितकारिणंप्रति । हितकारिलेधनुहाथ दरसाउसोबलगाथ ॥

( सक्रोधंडिंभोदर:मंत्रिणंप्रति )

सवैया । भाषतहैकरिक्रोधमहाअपराधकहाधनुहीयकतोरिकै । ब्राह्मण
हत्यै हतेनृपहैहय मारिकैगर्बभरयोहियभोरिकै ॥ अग्रजतोनों
चलैघरकों गुरश्रीमहराजउसैनबटोरिकै । आवतहौंहूचलोई
अहौं अबहींमुनिकोमदमाटसोफोरिकै ॥

( सक्रोधं रेणुकेयः कुठारमुद्यम्यतं प्रति )

छंदपद्धरी । सुठिकठिनचापबिगनेसदंत । तोहिभयोहुतोरेश्रमअनंत ॥
भैनाहिंत्रिपितिअतिक्षुधितहोउ । सिसुगलश्रोनितअबधीउपीउ ॥

( सक्रोधंचयोभ्रातरःशीर्घंधनुर्हस्ते कुर्वंति )

हितकारीछंदचौपैया ।

सुनियेसबभाई है नवड़ाई क्रुद्धविप्रसोंयुद्धकिये ।
जोगाइमरकहों नाहिंकोउकहो ताहिमारिबोखड्गलिये ॥ मुनिकहं
रिझाइबो जीतिपाइबो इहै नीति श्रुतिमांहकही । अबशीसनवावा
छमाकरावो अस्तुतिकरिकरिपांयगहो ॥

( भ्रातृभिःसहप्रणम्य हितकारी )

छंद । प्रभुपालकयेबालकछमाकरी । भूलेहुंहियरेरोषनकबहुंधरो ॥
कारिरनजबहिंकुमारहिजीतिलियो । गौरीसहितमहेशहुकृपाहि
कियो ॥

सस्मितंरेणुकेयः गद्य । निजकुलकुलिदलहितकारी हितकारीबात
तिहारी हारी मन है तदपि बालक छुद्र छुद्र बचन बचन लायक
बोलत नहीं है गुरुअपकार कारमुख भंग भंग अंग बिनु कीन्हें
कैसे सहो जाय ॥

हितकारी । हो सेवक खरो खरोई हों जेहि रिस जाय सजाय सो
करि लीजे ॥

रेणुकेयः । छंद । मममयछत्रियनेमोब्राह्मणानोहिपढ़ायो । भूलिशो
कहरनत्रसेनाहितोसोंबनिआयो ॥ बिनयकरतहै कहाधनुषधरि
मोहिंरिझावै । कैआसुहिंआवतहूंतातसमस्वांगलेआवै ॥ १ ॥

( गुरुपित्रोर्निंदांश्रुत्वासक्रोधंहितकारी )

छंदपद्धरी । गुरुनिंदतहौतुमबारबार । दुजगुनडरियतुहमनहिंकुठार ॥
सबशासनकरिबेकहंतयार । सोकरहुकहियजोकरिबिचार ॥

सक्रोधंरेणुकेयःछंदनाराच । कोदंडभौरमाइबोरिदेहुंभूमिइन्द्रको ।
कुठारबीचिमेबहायसैनबृन्दबृन्दको ॥ कुमारचारिजारिदेहुंक्रोधबाड़-
वग्निमैं । जोलेहुंशंभुबैरयेंातोसांचयामदाग्निमैं ॥

छंदतरंगिनी । करिछत्रिनयनिरमूल । जगराखिजनअनकूल ॥

( अबक्रोधहेतमिटय ) तपसुचितकरिहौंजाय ॥

हितकारी। छंदगीतिका ॥ जेबचनपूरुबकहेतिनतेंगुन्योगर्वहिआर्ति है। यहबातमुनिवरभलीभाषीकरनहमकहंसाति है ॥

सक्रोधंरैणुकेय:। रेबालबढ़िबढ़िकहाबोलतसुनीपुरुषनगतिनहीं। धरु बानधनुरनगुनेजोबलवानक्षत्रियकुलमहीं ॥

भुजंगप्रयातछन्द। रनैछोनिबेदीअनीइन्धजारों। बढ़ेकोपज्वालानृपै होमिडारों।कुठारैश्रुवाबालआपुषपधारों। दोऊबिप्रकोसेवकैमूड़िडारों ॥

सांतिक्रोधंहितकारीछंद। अबलोंबिप्रमानिरिसिरोंकोपुनिपुनिगुरु निंदनैररै। डिंभीदरदेदेधनुमेरोदेखहुंमुनिधौंकहाकरै ॥

सक्रोधंरैणुकेय:। वहधनुधरितैयुद्धनलायकयहबरहरिधनुहाथधरै। औसरकरकरिजोरिशरासनऔसरबहिरनकोनिबरै ॥

(रैणुकेयहस्ततोधनुराकृष्यआरोप्यचहितकारीटंकरवति)

ततःजगद्योनिजंप्रतिभुवनक्षितः।

कबित्त। डोलीधराबारबारदिग्गजचिकारकीन्हो हालिगोहजारसीस कच्छअकुलान्योहै। दैत्यबिकरारभयमयहिअकारभयेपारावार बारिबेलछोड़िछहरान्योहै ॥ जैजैशब्ददेवदारसहितपुकारकरैं प्रलयसंसारहोतमनअनुमान्योहै। देखौंयमदग्निबारकरतेंकुठारै गिरनो सरिसहजारकद्रराजवारजान्योहै ॥

हितकारी। छंदतरंगिनी ॥ सरजुरनोयहिकोदंड। किनलेहुपरस प्रचंड ॥ तबनिजनराखेहुआघु। कतकंपतन्हातसोमाघु ॥ अबरनसोमंडियअत्र्य। ममगुरुनिकरियेशिष्य ॥ जेहिजोर कियोनिछत्र। प्रगटहुसोकरकरिअत्र ॥ १ ॥

(सभयरैणुकेय:)

चौपैया। जैपुरुषपरेसाजासुनिदेसारबिससिउड़गनपवनचलै। सबकेउपकारीजैहितकारीपरमपुरुषजेहिजसअमलै ॥ तुमहींतेचेतनसबहीकेतनहोंकेहिबलतेंयुद्धकरौं। अपराधमहानाभोभगवानाक्षमहुक्षमहुंप्रभुपांयपरौं ॥

हितकारी सो० ॥ यहअमोघसरमोर हतहु कहांअबभाषये।

(...बोपकारिणींहितकारिणींविचार्य्य)

...: । देखिदयाहगकोर मोरिस्वर्गगतिमारिये ॥

स्वर्गगतिंगतांज्ञात्वा । हों तप करन जात हों यह रूप तुम्हारो हमारे हिये में बन्यो रहै ॥        ( इतिप्रणम्यनिक्रांत: )

(तत:जगद्योनिज: भूपसुतथाप्य वृत्तान्तंश्रावयति)

**सहर्षभूप:** ॥ आपसे जाके गुरु हैं ताको सकल भय नेवारनहो यामें कहा आश्चर्य है अब आशु अपराजिता कौ सुतर सवारजोड़ी भेजिये औ बरात चलाइये । इतिसर्वेनि:क्रांता: ॥

( सभृत्यमंत्रीप्रवेश: )

**मंत्री** । गलिनगुलाबसिंचावो महल कल कलसन नवल पताक चढ़ावो सकलस सगान सवाद्य कन्यन आगे चलावो बरात निकट आई ॥

( नेपथ्यकोलाहल: )

**भजन** । सहितबरातभूपइतआवैं । टेक ।
खैरभैरयुतशहरलसतअति रहसिबिहंसिनरधावैं ॥
चलोचलोलोचनफललीजै अबआनंदमितिनाहीं ।
ललकतरहीकुंवरलखिबेको लखबबधुनसंगमाहीं ॥
उतरहिंचढ़हिंअटनउतकंठितमातनसुखकिमिकहिये ।
विश्वनाथजपरबरषनहित लाजामोतिनगहिये ॥ १ ॥

**तत:** । प्रविशंति एकत: नीराजनंगृहित्वा सपरिवारादेवाअन्यत: स बधूका: शिविकारूढ़ा: कुमाराश्च ।

**सखीसखींप्रतिभजन** । परछतमैयनसुखअधिकाई । टेक ।
आनंदजलउमगतअंबकयुग भूलिभूलिविधिजाई ॥
सुतसुतबधुनतकाहिंजनचाहहिं हगमगाहियहिसमाई ।
विश्वनाथमुखचूमितोरितृण पुनिपुनिलेहिंबलाई ॥

**पुरोहित:** । सुत सुत वधू देव दरशन कराय सोवावो ॥

इतिनि:क्रांता:सर्व्वेप्रथमोंक: ॥ १ ॥

इति श्री मन्महाराज धिराज बांधवेश श्री महाराज बिश्वनाथ सिंह देवजू कृतआनन्दरघुनन्दन नाम नाटके प्रथमोङ्क: ॥

---

# अथ द्वितीयाङ्क प्रारंभः ॥

( सशिष्य जगद्योनिजप्रवेशः )

**शिष्य** । गुरो रबिराक्षस रनरुधिरकीललाई पश्चिम दिशि छाईभाई फेरि मारतंड प्रचंड तें खंडखंड करिउड़ाये अस्थिखंडये नभपेखे परैहैं ॥

**गुरुसस्मितं** । यह ब्रह्म कुंडजा तट हौं संध्या करौं हौंतुमहूं जाइ संध्या करौ ॥ ( इतिशिष्यःनिःक्रांतः )

( गुरुःसंध्यावन्दनंनाटयति प्रविश्य ब्रह्मकुंडजा प्रणमति )

**गुरुः** । पुत्रि हित कारिणि अनुरागिणी भवेत्याशिषंदत्वा । पुत्री दीन मनकाहैहौ ॥

**ब्रह्मकुंडजा** । हौं पिता मह पा पूजन गई हुती ताही समय इन्द्रादि सुरजाय शीस नवाइ बिनय करी ॥

**जमक** । दिगंबिर दरन रन करन सर्व भूत हित हितकारी परम पुरुष अवतरे अवतिय संग संग बिहार हार रचनि रचनि चितकी है, सुनि धाताकह्योहौं उपाउ करोहौं सुनि मेरी मति अकुलानी ॥

**गुरुः** । तुमकों तोभूरि भावतंभूलिशोक भयो है अपराजिता में हित कारीको बिहारनित्यहै अचिन्त्यशक्तिहैंदोऊ बात करैंगे ॥

( सहर्षंब्रह्मकुंडजा अंजलिंवध्वाकिंचिद्वक्तुमिछति )

**जगद्योनिजः** । हस्तसंज्ञयावारइत्वा ॥

**आकाशेकर्णन्दत्वा** । मोकोंज्ञानीकी बानीयौंसुनीपरी, तुमदिगजान पैं जायडहडह जगकारी, डिंभोदरकों काश्मीरको पठवाइयो औ उपायकरि भूपसों हितकारी कों युवराजपद दिवावत बन दवाइबो अरुहित कारिहूकोयाही रुखहैहौं कुटिलाकेकंठ बैठि सुरकाज सिद्ध करन जाउं हौं पुत्रीअबतुमं जाहुहौंहूं मातुआज्ञाकरन जातहौं ॥ ( इतिनिःक्रांतौ ) (प्रविश्यआदिकबिः)

**स्वगतं** । शिष्य जलफल फूलदल मूल ना लैआयोअरचन कोंआवारभई ॥

( ततःप्रविशतिशिष्यः )

आदिकवि: । अरेयेतोबिलम्ब करि अब ठगिसेसो कहारह्यो है ॥

शिष्य: । अंजलिंबध्वा ॥ हौंयाम यामिनी बाकी द रवनी कलिंदजा संगम अस्नान करनगयो हुतो तहां बड़ो आश्चर्य लख्यो ॥

गुरु: । किंकिम् ॥

शिष्य: । सरूप धारिदोनों सरिसंबाद करिरहीहुतीं ॥

गुरु: । कथंकथम् ॥

शिष्य: । चीरवतीपूंछो तुमको तापिताहौसो पितुपदपूजन गई हुतीकी और कछु कारण है कालिन्दजा कह्यो हौं पीडपरसतें तापितहूं यों हीं शंका करी तिनकह्यो अतिसंतप्त ब्रह्मकुंडजाधार परेहौ हूं बूझतो हुतो सो गदगद गर कह्यो काश्मीरी दिगजान सों बरदान मांगि आपने सुत कों राजलियो अरु सवधूबंधु हितकारी को बन दियो मंत्री यान चढ़ाइ त्रिपथगा तीर लों पहुंचाइ पुर आइ सुधि दई सुनि भूपको परमगति भई अपराजिता नेवासिन अतिशोक आसुन सों बढ़ि हों आप को मिली आइ तातें है कलिंद कुमारी हौहूं उष्णता धारन करी है चीरवती बड़े शोक की बात है सुनि हों ठगिसी रही अब बनितन को बिश्वास काहे को कोई करि है ॥

आदिकवि: । हा भूप दिगजान हा सुरपति करन मान हा देनदान महान हा भगवान सम ज्ञान हा मुनिनकारी सन मान हा करन बचनन प्रमान हा यश जाहिर जहान ॥

( इतिनिश्वस्यततःसतः )

शिष्य: । पुनि चीरवती पूछ्यो हितकारी कहां लों आये होयंगे कालिंदजा कह्यो भास्कर क्षेत्र में याज्ञबल्क्य शिष्य ते सत कारित ह्वै मेरे पार उतरि आये अब नहीं जानो धों कहां हैं यह कहि मोकों जानि दोनों जल में प्रवेश करि गईं ॥

आदिकवि: । शोक तो बड़ोई है पै यामें एक हर्षऊ है ॥

शिष्य:सविस्मयं । गुरो शोक में हर्ष हौं न समुझतो ॥

गुरु: । वत्स चाहिये तो हितकारी ह्याऊं आवैं ॥

नेपथ्ये। भजन। पथिकतुमकहहुरहहुकेहिदेश। टेक।
असहमदीखसुन्योनकबहूं कोउनखसिखअनुपमबेष॥ बनकंटकित चलतिसुकुमारी प्यादेसंगतुम्हारे। बिश्वनाथसतिमानहुंकांटे गड़त करेज हमारे॥ १॥

( बंधुबधूसहितहितकारिप्रवेश: )

शिष्यः पुरोवलोक्य। गुरो हितकारी तो आइगे गये॥
गुरु:। अहो भाग्य महो भाग्यं अर्घपाद्य ल्यावो आतिथ्यकरैं॥
हितकारीसुनंप्रणम्य। बास बताइये॥
आदिकवि:। वत्स तुम्हारो बास तो हमारे हिये में है दूसरो बास यांते दखिन कछु दूरि बिचित्र शिखर गिरिबर है॥
गद्य। होतहीं दरशन सांत रस बरसन मुनिन मन करषन संतत सुख सरसन लतन तरुन कुंजन छबि पुंजन सुदल फल फूलन मृदु मूलन संघन बनन खग कुल बृन्दन मंजु अलि पुंज गुंजन गुंजन मन करिन दरिन दरिन झरनम झरन जल कनन दुरदिन करन जगन मृगन गनन संकुल सुधा सरिस सलिल सहित अति ललित कूलन बलित बिकसित बरन बरन अमल कमल कलित कल कारंडव चक्र वाक बाल मराल माल कूजन मुद मूलन तकत त्रैताप उन्मूलन छबि भरितनि सरितनि महा मंडित है॥
हितकारीस्तुत्वासहर्षं। आज्ञादीजे॥
मुनि:। आजु के रोज यांई रहो रूप लखाय हमारे नैन सफल करो॥
हितकारी। बहुत भली है मुने जब तें हों आयो तपतें अपरा जिला की खबरि नहीं पाई आप त्रिकालज्ञ हैं बुझाय सुखी करिये॥
मुनि: ध्यानंनाटयित्वा। उहडहजगकरी सबंधु पुर आये हैं और वृतांत सब कछु दिन में आय बेई कहैंगे॥
हितकारी। आप सों संबाद करत यामिनी जात न जानि परी प्रात सूचक पछि अहो धुनिकरि रहे हैं मानो पंथिन को आतुरी करावै हैं आज्ञा पाऊंतो बिचित्र शिखर जाऊं॥
मुनि:। चलो ह्वांलों हों पहुंचाइ आऊं॥ इतिनिःक्रांताःसर्व्वे।

( सकुटिलाकाश्मीरीप्रवेशः )

**काश्मीरी** । सखी काज तो सब सुधरो पै एक अब यही बाकी है डह डह जगकारी को आइबो ॥

**कुटिला** । परम सुखद खबर कहो हौं चार गुरु के ह्यां आयो है ताते होहूं सुनि आई हौं कौ डह डह जगकारी हालई आवन हारहैं ॥

(डहडहजगकारीप्रवेशः) माई पांय परो हौं ॥

**शिरआघ्रायकाश्मीरी** । पूत सिगरो काज सवांरि राख्यो हौं ॥

**डहडहजगकारीविस्मितः** । कौन ॥

**काश्मीरी** । सर्वं वृत्तान्तं कथयति ॥

(डहडहजगकारीस्मुत्वाहर्षं नाटयति)

**काश्मीरी** । हे पूत भूप शोचन लायक नहीं है अब काल सों काहू को कछु बस नहीं है ॥

डहडहजगकारी ।

**पद** ॥ हितकारीमहंदोषगुनतविधि कैअकाशकीपाटी ।
दियेशून्यसोईयहिडहगन अवलिनजबयहिआंटी ॥
लखिश्रमखेदखरीधारिदीन्हो सोईससियहभायो ।
विश्वनाथउनखोजिनपायो तैंघताटकहंपायो ॥ १ ॥

अरी तेरी जीभि मैं काटि डारतो माता भई कहा करौं ॥

**कुटिला** । अरे छोहरा उपकार कियें अपकार मानै है तेरे लिये नीतिसार निचोरि कै मैं बुद्धि दई है तब यह काज भयो नातरु तेरो राज होन वारो हुतो ॥

**डिंभोदरःसक्रोधं** । आः पापे तहीं सब अनर्थ को कारण है ॥

इतिकेशान्गृह्णाति । ( दृष्ट्वा काश्मीरी )

**सवैया** । महिमाहंकढीलतकेशगहें मुटकाबहुलातनिमारतहै ।
कछुहीरनपीरअहैतुम्हरे बहुबारउठाइपछारतहै ॥
इतनाहींकलंककोशोचकरो तियनासेननर्कहिहारतहै ।
अघुआसुनसंगकढीईचहैं अबहूंनहिंरोषसम्हारतहो ॥

**डिंभोदरः** । याकों फल दै फिरि तोहूं कों समुझाऊंगो ॥

(इतिश्रुत्वा कामीरीसभयंनि:क्रांता:)

उड्डउड्डजगकारी । नारी बध किये मोकों हितकारी को भय लगै है ॥

(श्रुत्वाडिंभीदर: सुचति) ।

उड्डउड्डजगकारी । चलो कुशला मा के पास ॥

इत्युभौपरिक्रामत: । (प्रविश्यकुशलारोदिति)

भजन । हितकारीहितकारीछोटा रखतप्रानसमभाइनिकों ।
बधुबंधुयुतकाढ़ततेछिनछिं कसक्योहियोकसाइनिकों ॥
मंत्रीगुरु नृपबैनबानसम नहिंयहि हृदयपषानगड़े ।
विश्वनाथबिधिकाहकारोंअब चहुंदिशिदुखसागरउमड़े ॥

उड्डउड्डजगकारी । कुशला माई डर बोस कूटत ह्यांई चलीआवै है ॥

इतिउपसृत्यविलपंतौपादयोर्निपतत: । (कुशलाउत्थाप्य)

भजन । पूततुम्हैंबिनकियतुवमाताऐसोहालहमारो ॥

उड्डउड्डजगकारी । छाइजोसंमतमोरकढ़ौंनछिंभोगिहुंनर्कहजारों ।

कुशला । तुमसमकौनहोतजगमाहींअबधीरजउरधारो ॥

उड्डउड्डजगकारी । विश्वनाथहितकारीबिनुकिमिजीहौंमातुविचारो १॥

प्रविश्यगुरुस्तितासगद्गदं । गुरु कह्यो है धीरजधारि पितु कृत्य करै फिरि जो उचित होइगो सोकरैंगे ॥ इतिसर्वाकं सर्वेनि:क्रांता: ॥

(तत: प्रविशतिसशिष्यो जगद्योनिज:)

जगद्योनिज: शिष्य प्रति । उड्डउड्ड जगकारी जबतें पिता को कर्म करि चुके हैं तबतें मातु कृत कर्म लज्जा तें बदन नहीं दे-खावै हैं मेरी आज्ञा सुनाइ तूं लेवाइ आवै ॥

शिष्यस्तथेतिनिष्क्रांत: ।

( प्रविश्यउड्डउड्डजगकारीदंडवत्पादयोर्निपत्य
रोदनंनाटयति )

गुरु: । वत्स धीरजधरो अब तुम्हारे आधार पुर है पितु दई राज्य पालन करो ॥

( इतिश्रुत्वा उड्डउड्डजगकारी अश्रुमुखंनाटयति )

गुरु: । वत्स वत्स दिगजान भूप के पूत हौ हितकारी के भाई हौ जो कछु कहिबे कों होय सो धीर धरि कहौ ॥

(व्याख्याऽवरुद्धकंठ उद्दंडजगकारी)

छंद । आसुनिमिसुकढ़िबारिबारिनिधिमिलनकियो । महाजननिकृत अघमोहिकरिहततेजदियो ॥ लेतहिंलेतउसाससबयारिनशेषरहीं । सुमिरतहितकारीसरूपअवकासनहीं ॥ शोकआगिमहिअंगजरयो तनअबैबनो । जरीरज्जुकोखाखरहोएंठनहिंमनो ॥ पंचतत्वबिन भयोराजिअबकवनकरै । बिश्वनाथदरशाइयप्रभुपदशोकहरै ॥ १॥

पद । हायहों एकहुंकामनआयो । टेक ।
हितकारिहियुतबंधुबधूमा पथकंटकितचलायो ॥
जोहोतोसंगहिबनजातो पीठिबिछाइचलातो ।
हाहाविश्वनाथहितकारी हमहूंपुछिसिधातो ॥ १ ॥

(इतिसुर्च्छांनाटयति)

गुरु: । धीर धरो धीर धरो ॥

उद्दंडजगकारी । गुरो हितकारी पद दरसाइये याहि में मेरो प्राण रहै गो ॥

गुरु: । भली कही भली कही अब सबकोई ह्वांई चलें जो फिर आवें तो सिगरी बात सुधरि जाय ॥ इतिनिःक्रांता:सबें ।

(सबंधुवधुहितकारिप्रवेश:)

हितकारीमहिजांप्रति । यहविचित्रबनमेरेमनको आकर्षणकारै है ॥

महिजा । याके बिबिधि बिहार स्थल में सुख ही सों काल कटि जाइ गो ॥

(शीलधराधर: कुटींविरचयति)

हितकारी । ये शीलधराधरआछीकुटीबनाई या निपुनाईकहांपाई ॥

शीलधराधर महिजांप्रति । आप यह मार मृगन को मासु सुखाइये तब ताईं हों और मारि ल्याऊं ॥ इतिनिःक्रांत: ॥

हितकारी । हे शीलकेतु कुमारी तिहारे लियें हों आछे आछे फूलन के हार गूंदत हों ॥ इतिगुंफति ।

(वायसप्रवेश:)

महिजा । पीउ यह कैसो काग है आमिष खाय खायजाय है जो हों हांकों हों तो मोकों चोंच तें चोंथि भजै है ॥

क्रुद्धहितकारी । आः पाप तेरी दुष्टता को फल यह सींक को सर देई गो ॥ इतिनिःक्षिपति भीति वायसोनिःक्रांतः ।

( डीलधराधरप्रवेशः )

मृगानुसमर्थ । अग्रज आखेट खेलत एक मुनि सों भेंट भई ताकी बानी सुनि शंका भई है ॥

हितकारी । किंकिम् ॥

डीलधराधर । मुनि मसों कह्यो शत्रुघ्न कों एक सींक को शर कोई चलायो है सो वाके पीछे पीछे धावै है वह काक सर्व लोक फिरि आयो कोई नहीं त्राण कियो सुनिकों मन में बिचारयो ऐसो तो मेरे जेठे भाईही को बाण है यातें त्वरा करि आयो ॥

हितकारी । महिजा को हाल नहीं देखो हो ॥

दृष्ट्वाडीलधराधरः । आः पाप येनो सर्व भूत हितकारी हैं हों होतो तो याही ठौर तेरो शीस काटि डारतो ॥

प्रविश्यबिकलोवायसः । शरण शरण त्राहि त्राहि पाहि पाहि रक्षा करो रक्षा करो ॥

हितकारीमाभैः । मेरो शर अमोघ है यातें एक नैन दै अयन को जाय ॥

काकःपद । होतुमप्रभुसांचेहितकारी । टेक ।

मेरोअघभारोभुजायकै नाथकृपाकीन्हीअतिभारी ॥ एकआंखजो सरसोलीन्हीजानिहेतुमोलियमनमाहीं । बिश्वनाथजातेंयहभूलिहुं कोनहुंपापकरैपुनिनाहीं ॥

इतिप्रणाम्यनिःक्रांतः ॥

डीलधराधरः । बड़ेभाई बनजीव बड़े भय तें व्याकुल भजे चले आवै हैं धौं कहा कारण है ॥

हितकारी । ऊंचे तरु चढ़ि देखोतो ॥

( तथाकृत्वाडीलधराधरः )

छंद नाराच । उठो उठो को दंड चंड बान लेहु हाथ में ।

नजोहिजातमारतंडधूरिधुंधगाथमें ॥ तुरंगरंगरंगकेमतंगअंगसैलसे । सुजानबृन्द मेंसुजानबीरइन्द्रसेलसे ॥ सुभांतिभांतिकीपताकपांति

नाकछांवती । पदातिजूहकेकाहैंनजोहपारपावती ॥ अहोअनी
अपारयाछिंअद्रिबेरआवती । छियेसुबीररंगकीतरंगिनीबढ़ावती ॥

छंद त्रिभंगी । डहडहजगकारीसजिदलभारीछुद्रविचारीयातहियें ।
दोभाइनिमारी करहुसवांरीरजिसुखारीमातुकियें ॥
अबहौंधनुधारीबरघरझारीतासुगवारी मेटतहों ।
प्रभुल इहितकारीनिपासमचारीसैननसारीसेटतहों ॥

(उत्तीर्य्यधनुरारोप्य)

छंदनराच । समुद्रबाहुदंडयेकोदंडभौंरभायकै । महानबानबृन्दरुद्रर्मिं
कोउठायकै ॥ संग्रामकेरमंगमेंकुबंधुबेलफेरिकै । छुवेंगि
आयपाय आसुसैनविध्वबेरिकै ॥ १ ॥
आः देखोतो कालकी बिषमता पनहों ग्रीस चढ़न लगी ॥

(रंतैरथरंसंपीय)

दोहा । डहडहजगकारीमहाकरीढिठाईआय । जेटिकिदैरनछनकालौ
देहौंसबसमुझाय ॥ १ ॥

पुनिः । धनुसंचाल्य खड्ग मुख मवलोक्यच साहहासम् । जान्यो जान्यो
जान्यो यह हमारे सुकृत को फल है भूपकृत अनीति याही रीति
में मिटन हारी रही है ॥

सवैया । आजुभरोरनरंगनमेंरनआंगनमैंधनुधारिकैधैहों ॥ क्रोधकेभारमें
भूजिसबै दलभस्मअभागिनिकेअंगलैहों ॥ बंधुदोउमृगबंधु
बनाय दिगंबरकैकैदिगंतपठैहों । बापकोबंदिमेंराखिकैआजु
बलीबड़ेभाईकोराजकरैहों ॥

छंदगीतिका । करिकोटिकायनकालरुद्रहुकोसहायहुकोकरै । यहसैन
सर्पिषसाथतोममबानबन्हिहिमेंपरै ॥ जिमिलवहिलेत
लपेटिलगर कलंककुलके टोउधरों । पुनिकाथमीर
पसदलछतिमैं कालिकाखप्परभरों ॥

पद । दोनैआसनबेगिगोसांई जाइतुरतगहिल्याऊं । ताहीकरकुटिलाकी
रसनाकोड़नहनिकटवाऊं ॥ डहडहजगकारीजननीके आंसुनसरित
बहाऊं । निजरिसऔकुपलाहियरेकी आगीआसुबुझाऊं ॥

( इतिप्रत्यक्षधावन्तमिवालोक्य )

हितकारी । काहेको एतो रोष करोहोतुम्हारीसीप्रीति मोपरउनहूंकी है डहडह जगकारी लेवाइबे के हेत आवतहोंइगे ॥

( ततः प्रविशति स गुरु र्मंत्रिबंधुः डहडह जगकारी )

डहडहजगकारी । पाहि पाहि इति दण्डवत्पादयोः पतति ॥

( समुत्थाप्य हितकारी गुरुपादयोः पतति )

गुरुराशिर्वंदत्वा । अब तुम जाहु पितु कृत्य करि मातन सों भेंट करि आवौतौलौंहौं याआश्रम मेंआसीन हौं ॥ इति स शोकं सर्वे निःक्रान्ताः ॥

( नेपथ्ये रोदनकोलाहलः )

गुरुःशिष्यम्प्रति । रोदन कोलाहल होयहै यातें जान्यो जायहै को हितकारीपितुकृत्यकरिमातनसों भेंटकरैहैं ॥

( बंधुभिः सह हितकारी प्रविश्य रोदिति )

गुरुः । भूपशोचन योग्य नहींहैं अरु अवसर और है धीरधरि सब को धीर धराय डहडह जगकारी जामें डहडह होय सो करो ॥

हितकारीअंजलिंबध्वा । पितुमातु आज्ञाप्रथमहीं वनगवन की है अबजो आप बिचारि कै कहिये सोकरौं ॥

जगद्योनिजः सविचार मधो मुखस्तिष्ठति ॥

( डहडहजगकारीकुशास्तरणंकृत्वाअनशनंनाटयति )

हितकारी । धरणा करनो क्षत्री को धर्म नहींहै पाप लग्यो उठो उठो जल छुवोमोकों छुवो ॥

( डहडहजगकारी जलंस्पृष्ट्वारोदिति )

हितकारी । शोककाहेकरो हौ जो बिचारि कै तुमहीं कहो सोहीं करों ॥

डहडहजगकारीभजन । मोसोंअबनकछूकहिजाई । टेक ।

सोयहकहौं करियप्रभुऐसे सेवकरीतिनसाई ॥

जौफिरिचलतनआपएनको प्राणकढ़तअकुलाई ।

बिश्वनाथअवलंबदासहित आपुहिसमुझिबताई ॥

हितकारी । ये पादुका लैआइन मेंहमारी प्राप्त्यतुमकोबनीरहैगी ।

( साष्टाङ्गम्प्रणिपत्य पादुके शिरसिकृत्वा )

डहडहजगकारी । अवधि बिताय जोआयहैं तौजीवतनहींपायहैं ॥

( गुरुपदौगृहीत्वा )

हितकारी । दासजानिमोकों न भुलायगी ॥

आशिषंदत्वागुरुः । प्राणहूं को काहूको सुधिभूलेहै ॥

डिंभीहरःपादयोःपतित्वा बाष्पाऽवरुद्धकंठम् । मोकोंतोसंग लेचलिये ॥

हितकारी । डहडहजगकारी कों पादुका दई है तातें तुमहूं को मेरी प्रागट्य घनौरहैगो मातमकों शोक न होन पावै ॥

( इतिश्रुत्वानिःक्रांता: )

हितकारी । डोल धराधर इहाँ गुरुमातु बंधुनसौंबियोग भयो है या थल आछो नहीं लगै अब महामुनि अनीप्यीपतिके आश्रमचलिये ( इतिनिःक्रांता: )

( अनीप्यीसोमजनकप्रवेशः )

अनीप्यी । महाराजऐसो सुन्योहैकी हितकारी, महिजा, डोलधराधर, विचित्र शिखरतें ह्यांको आवैं हैं ॥

सरोमाञ्चगद्गदं सोमजनकः । अहोभाग्यमहोभाग्यम् ॥

( हितकारीप्रवेशः )

महिजा । अनीप्यी तो परमबृद्धा है ॥

सवैया ।केशसपेतलसैसिरके मुखमाहवलोकसकैपलखोलै ।
नाहिमैदंतसमातिहैस्वासन ठोढ़ीबढ़ीबदतैसुरडोलै ॥
लंकलचीक्रसकायकपै लकुटीकरपल्लवहैसुठिलोलै ।
खालझुलैपैदिपैअतितेज छपाकरकीछबिछामनिचोलै ॥

हितकारी । मुनिन को वह शरीर किशोर होय है ॥

सोमजनकः । येतो आइही गये अर्घ पाद्य ल्यावो आतिथ्य करैं ॥

सबधूवंधुहितकारी । पायं परियतु है पायंपरियतु है ॥

दंपती । अभीष्ट सिद्धि रस्तु ॥

सोमजनकः । शुभआगमन भयो तुह्मारे दरश को हमारे बहुत रोज तें आकांक्षा रही है सो आजु पूरण भई ॥

हितकारी । दण्डकारण्य की गैल बताइये भोर जाइंगे ॥
मुनिः । हों जान्यो जो आप कार्य करन जाइ हैं अग्नेय दिशा ह्वै बानभंग मुनि कों दरश देत चले जाइवी ॥
अनीर्ष्या । पुत्री ये पट तुम्हारे लिये संचि राखे रहे सो भूषित करो ॥
हितकारी । अबसंध्याबंदन को समय है ॥
मुनिः । चलो होहूं चलों ॥

( इतिनिःक्रांतःसर्वेद्वितीयोंकः )

इति श्रीमन्महाराजाधिराज बान्धवेश श्री महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव कृत रघुनन्दन नाम नाटके द्वितीयोङ्कः ॥ २ ॥

---

# अथ तृतीयाङ्क प्रारम्भः ॥

( मैत्रावरुणिः प्रवेशः )

मैत्रावरुणिः । ( आत्मगतं ) दरशण को शिष्य नहीं आयो बहुत राज भये कहा कारण है ॥

( शिष्यःप्रवेशः )

शिष्यः । दण्डवत प्रणमति ॥
गुरुः । अरे कौन कारण ते देर भई तोकों ॥
शिष्यः महाराज हितकारी सबंधु बधू मेरे आश्रम में आये तिन की संग संग मुनिन के आश्रम बतावत दशवर्ष फिरयो यातें येते दिन बीते ॥
गुरुः । अरे मेरे इष्ट केहिं मारग ह्वै तेरे आश्रम आये ॥
शिष्यः । जब आप हम एक ठौर रहे तब सोमजनक को शिष्य हो कहिगयो तै को हितकारी सबंधु बधू हमारे आश्रम आये हैं ह्वांते चलि जविसुत को बधकरि बानभंग के आश्रम आये हैं मुनि तिनको रूप निहारत निहारत जोगाग्नि में आपनो शरीर जारि दियो ह्वांते दण्डकारण्य मुनि को संग लिये मेरे आश्रम आये फिरि होहूं संग लग्यो ॥

**गुरु:** । सगड्दं कहु कछु इहां कब आवैंगे ॥
**शिष्य:** । आवतई हैं हों आगे ते खबरिही जनावन आयो हौं सो अब जाइ लेवाइ लिये आवो हों ॥ इतिनि:क्रांत: ॥

( सवधूबंधुहितकारी प्रवेश: )

**मैत्रावरुणि:** । अर्घल्याल्यावो पाद्य ल्यावो एतो आइही गए ॥
**सबधूबंधुहितकारी** । मुनि पायं परियतु है ॥
**मुनि:** । चिरंजीव तुम्हारे दरश लिये हम इहां टिके रहे हैं ॥
**हितकारी** । अब कहूं हमको बास बताइये जहां बसि बनवास के शेष दिन बितीत करैं ॥
**मुनि:** (पदमरहटीभाषाको) गोदातटबनअहेचांगला ।
दलफलमूलमृगापरिपूरन देनाराजियजौनमांगला ॥
सुन्दरपंचवटतलेपानची कुटीकरयुतकुसुमबिसाला ।
विश्वनाथमीगोष्ठिसमुफलो अतदेवाचकारियफाला ॥
**अर्थ** । चांगला कहे सुन्दर, देनारा कहे देवैया, मांगला कहे मांगै, पानची कहे पत्रकी, मी कहे मैं, गोष्ठी कहे बात, अत कहे अब, देवाचे कहे कारिय, फाला कहे देवतनके कार्य भयो। या अछेदधनु या अभेदबखतर ये अक्षय तूनीर लेहु ॥
**इत्यर्पयित्वा** । वांछित तुम्हारी सिद्ध होइ पक्षिपति सून को दरश देत जाइयो हों अब सुरपति पास जातहों ॥
(इतिनि:क्रांत:सर्वे) (प्रविश्यसौपर्णि)
**सौपर्णि:** (स्वगतं) आजु मोकों सगुन बहुत देखे परे हैं मुनि मुख सुनि जिन राज कुमारन दरश हित बहुत बरसन तेंहों इत टिके हों ते आवन हार तौनहीं है ?

( प्रविश्य हितकारी )

**हितकारीपुरोवलोक्य** । हे डोलधराधर या शैलसमान पक्षी रूप धरे कोई राक्षस तो नहीं है ॥
**श्रुत्वासत्वरंसौपर्णि** । अहो भाग्य महो भाग्यं हों तो तुम्हारे पितु को सखा हौं आवो सिर सूंघो जब तुम शिकार को जैहो महिजा को ताके रहिहौं ॥

**हितकारी** । तुम तो हमारे पितु के बराबर हो काहे न कहो, या निर्जन बन में तुम्हारो मिलन मेको अलभ्यलाभ भयो ॥

**सौपर्णि:** । ये पंचबट जे देखे परैं तहां कुटी करो होहूं निकट टिकन जाउ हों ॥ (इतिनि:क्रांत:)

**हितकारी परिक्रम्य** । डीलधराधर कुटी बनावो ॥

**डीलधराधर: बिरच्य** । महाराज तयार है ॥

**हितकारी । छंद शार्दूलबिक्रीड़िता ।**

नीकीपंचवटी महासरितटी फूलींफबैंसंसटी ।
बेलींबेनिलटी सुपत्रनिपटी रागैपरागेठटी ॥
तापैनासभटी अनन्दउघटी दृष्टै हगैदुर्घटी ।
कल्पोतुल्यघटी जोइयहिंछटी सोहैकुटीस्वर्नटी ॥ १ ॥

( फिरि देखैयत्र )

**गद्यसंस्कृत** । नाग, पुन्नाग, साल, ताल, हिंताल, रसाल, तमाल, कृतमाल, बकुल, सरतिल, कामल, कपुटज, लकुच, तक्कोलां, ऽकोल, कोल, कंकोल, विकांक, कपित्था, ऽश्वत्थ, कंकत, विकंकत कदंबो, दुम्बर, कुरव, कमरु, बक, कुंद, तिंदु, चंदन, स्यन्दन, चंपक, चांपेय, पनस, बेतस, पाटल, प्रियाल, पलाशादि, वृक्षाच्छादित गुच्छ लच्छ बिचक्षु रनुक्षण मानन्दयाति काननम् ॥

**गद्य भाषा** । भल निरमल जल कुसुमित सकल रंग कमल कल अलि कुल बकुल करांकुल कोकाबलि कोलाहल लोनी लतनि कुंज कढ़ित अनिल लहि लहि ललित लहरिनि नवीन पीन पाठीन ऊछलनि कलनि कलित सुधा रस सर सरस बलित सुखभरित सरित मनहरित बिलसित है ॥

**भजन** । पश्चिमदिशियहअद्भुतसुहाई । टेक ।
निजपतिरबिआगमनजानिजनु कुमकुमकायलगाई ॥ श्यामकरत संसार सपदिहींसरस सरवरीआई । हियपरसनउत्कंठितअति जनु रससिंगारछबिछाई ॥ तारागननगगनछबिजनुघनसुमनन सेजबिछाई । किरिनिपरसिसुरपतिकेदिशिजो पेखिपरतिउजराई ॥ आवतमनभायकनिसिनायक पग्रपांवड़ेबिछवाई ।

विश्वनाथअबआइसुधाकर रमिहिसुधाधरसाईं ॥
रैनि भई अब तुम हूं सोवो ॥

**शीलधराधरः ।** बहुत भली पायं परियतु हैं ॥

**( इतिपृथक् कुट्यां शयनंनाटयति )**

**हितकारी भजन ।** जागोभाईप्राणपियारे । टेक ।
अवलोकहुआकाशकेसमें मलिनकुसुमयेजितततितारे ॥
भयेमलगजेनीरचंदकर पसरितपवनस्वासगुरधार ।
विश्वनाथविधुसंगविहरिनिशि गमनतिकरिसुखसारे ॥

**शीलधराधरः सत्वरमुत्थाय प्रणम्य ।** आज्ञा होइ ॥

**हितकारी ।** चलो गोदातट स्नान करैं ॥ इतिसर्वे निःक्रांताः ।

**प्रविश्यशुकःआत्मगतं ।** हितकारो ह्यां नहीं है कुटीते काहू को घास जानो जाय है कदाचित् हितकारि ही या नित्य कृत्य करन गये होंइ ॥

**(सवधूबंधुहितकारिप्रवेशः)**

**शुकः ।** पायं परियतु है पायं परियतु है ॥

**हितकारी ।** अरे हिरावन तैं कहां ॥

**शुकः ।** मोको कुशला मातु खबर लेन पठायो है ॥

**हितकारी ।** अपराजिता के सब मोटे हैं ? ॥

**शुकः ।** ब्रह्मकुंडजा मोटो है ॥

**हितकारी ।** कहा उत बड़ी बरषा भई ॥

**शुकः ।** आपके बिरह तें सबनिके अश्रुपाथ प्रवाह पय पारावर ताको धारन कियो है ॥

**हितकारी ।** डहडहजगकारी को का दशा है ॥

**शुकः भजन ।** जबतेअपराजितासिधाये । टेक ।
नगरनिकटयकग्रामबासकरि करतसुतपप्रभुध्यानलगाये ॥
शेषदिवसकाढ़िकरतकाजकछु आपपादुकनभूपबनाये ।
विश्वनाथअतितेजकायक लटबांधिकेशपीनतापाये ॥

**हितकारी ।** अबतूं बेगहीं जाइ कुशल कहि सबको आनंद दे ॥

**शुकः ।** पांय परियतु है ॥ इतिनिःक्रांतः ॥

नेपथ्ये भजन । काकेचरनचिन्हसुखदाई । टेक ॥
निरखतमनजमोहुंउपजावत असनहिंसुनीलोनाई ॥
सकलसुरेशसहितअतिमोहत मोहतमनबरियाई ॥
विश्वनाथमानुषकैसेपद चलिदेखहुंकोभाई ॥

(दीर्घनखीप्रवेशः)

लक्ष्मणा । पीउ यह सुंदरी नारी भली चली आवै है ॥

हितकारी । या निरजन बन में नारी कहां या कोई राचसी सुवेष धारि आई होइगी ॥

दीर्घनखी । न तुमसो सुंदर न मोहिसी सुंदरी भलो योग विधि बनायो है ॥

हितकारी सस्मितम् । हमारे पास तो नारी देखत ही है छोटे भाई के पास जाउ ॥

तथागत्वा दीर्घनखी । मेरो ग्रहणकरि भ्राता सरिस तुमहूं सुखी होउ ॥

डौलधराधरःसस्मितम् । सेवक को सुख कहां सो तुमहीं विचारि देखो उनको रूपदेखि देखि मैं काब नीको लगिहौं तातें उनहीं को रिझाइ बुझाइ मनोरथ सफल करो ॥

दीर्घनखी पुनरावृत्या । भले सेवक पास पठावत हो मोको त्रिभुवन में को न चाहै तुम अपनो भाग्योदय जानो ॥

हितकारी । हां तो अपनो भाग्योदय तिहारे आगमन हीं ते जान्यौ पै तुम्हारो हमको काब चलैगो ॥

निजरूपंधृत्वा दीर्घनखी । हो काम रूपिनी हां तुम्हारी कुरूपा बधू अरु निर्बुद्धि बंधु को खाइ ख्वाँई निरंतर बिहार करोंगी ॥

लक्ष्मणा सभयं भजन । पियदिपेखिमोहिंभयलागै । टेक ।
भूरेकेशकानछापरसे आंखअंगारभौंहयुगतागै ॥
दद्दुरनाकखोहमोमुखनख सूपपयोधरलोकोएसे ।
सूखतालसमउदरदोहरद विश्वनाथतनशैलहिंजैसे ॥

(डौलधराधर इतिश्रुत्वा)

हितकारिणमवलोक्य सक्रोधं दीर्घनखी नासांकर्णौच छिनत्ति ॥

दीर्घनखी । आहि आहि इतिमहाशब्दं कुर्वती सत्वरं निःक्रांता ॥

हितकारी। अब शेष दिन हैं चलो गोदातट मन रंजन करैं ॥

(इति निःक्रांताःसर्वे) (रासभप्रवेशः)

रासभः। ये राकसो मख कोई न करन पावै जाते भागि मेह टारिन दुरे देखि दुरबल ह्वै आसुहीं गतासु होइ दिगभिर महाराज की ऐसी आज्ञा है ॥

( प्रविश्य दीर्घनखी रुदित्वा पादयोःपतति )

रासभः।

कवित्त। काकेदुह्माथकौन मीचुकोबोलायोहाथ काकेपरपंचमाथखोली तीजीआंखिहै। काकेपरकाललैकैकरमेंकरालदण्डभूतनकेसाथ मुखफारिधायोमाखिहै ॥ ऐसीटशाकीनीजौनबेगहीबताउताहि मेरोक्रुद्धचित्तरह्योयुद्धअभिलाषिहै। ह्वै हैं रुद्र विष्णु हूतेरनमें प्रचारिबांधौं छोंडोहालऐसोकैदिगाननकीसाखिहै ॥ १ ॥

दीर्घनखीगद्य। याही बन बसे द्वै नृप कुमार अति सुकुमार पै बलके अगारबड़े धनुधारी तिनकेसंगसुंदरी नारी दिग शिरहित हों हरन बिचारीगहि किय ऐसी दसा हमारी ॥

रासभः। धनु धनु धनु ॥

नेपथ्ये। जान जान बान बानचाप चापतुरंग तुरंग मातंगमातंग ल्याउ ल्याउ —आयो आयो—बखतर दे बखतर दे लेउ लेउ ॥

( ततः प्रविशति सेना )

रासभः रथमारुह्य। आजु त्रिवर्णा पृथ्वी करि हों सूत शीघ्रहीं रथ हांकु ॥ इति निःक्रांतः सर्वे।

(सबधुबधहितकारि प्रवेशः)

हितकारी। डीलधराधर महासंग्राम सूचक उत्पात पेखे परैहैं परंतु दाहिनी भुजफरकै है जय हमारिही होयगी युद्ध अवश्य होइगो तुम यातें महिजा को डारि शिखर कंदर तेंजाय निशंक देखो ॥

डीलधराधरः सखेदं। महाराज स्वामी की आज्ञा प्राय फेरि कछु करिबो सेवक को धर्म नहीं है तऊ आपनो दुलार देखि ढिठाई करि यक अरज करौं हौं आप लरैं हौं देखौं यह कहा उचित होइ है ॥

हितकारी। यद्यपि जीतन को तुमहीं समर्थ हौ पै यह युद्ध करिबे को मेरोई मन है॥

डोलधराधरः खिन्नमना महिजासहित स्तथेतिनिःक्रांतः।

आकाशे। येमहा प्रबल चौदह सहस राक्षस हितकारी अकेले कैसेमारेंगे॥

नेपथ्येछंद। करालदण्डपानिक्रुद्धकालजीतिजोलियो।
सोराजपुत्रकेलियेकहासुसैनसज्जियो॥
सुनोसुनोयेराक्षसेंद्रयेककौतुकैलिये।
चल्योहैआशुगाजिराजिवक्षयुद्धकोकियें॥१॥

(ससैन्यराक्षसप्रवेशः)

राक्षस:। अहो यह राजकुमार तो त्रिभुवन में एक सुंदर है मारन योग नहीं है गहि दिगशिर पास पठौनी पठाय दीजिये देखि वोऊ अति हरषित होंइगे॥

(हितकारीपरिकरंबध्वाधनुःसज्जीकरोति)
(राक्षसःदृष्ट्वा कलंकनामानंमंत्रिणंप्रति)

सवैया। नखतेंसिखलोंसुठिसुंदररूपहरेहमरेमनकोहठिलेत है।
सुअटानिकेमंडलफूलनमंडलमंडिगलेमेंलोनाईनिकेतहै॥
सजिसज्यकरैंधनुकोंकरलैयहबालसुभायनामानेसकेतहै।
सबएकहिंबारहिंधायधरोद्रुतनातरुवानघनेतजेदेतहै॥

नेपथ्ये। यह भलो ऊंचो गिरि है सिगरो युद्ध को कौतुक आंखिन के तरेहीं देखो परै है देखिये महिजा अग्रज को कैसे धाइ राकस घेरि लिये हैं जैसे मार्तंड को निहार॥

महिजा। हाय कहा होन चहत है॥

डोलधराधरः गद्य। देखिये हितकारी के क्षुर, क्षुरप्र, नालीक, नाराच, वत्सदन्त, दन्तवक्त्र, नतपर्वा, वाराहकर्ण, कर्ण, विकर्णी, वैतस्तिक, अर्धचन्द्र, शर, शरासन तें एक कालैइ बंकढ़त हैं शिर, उर, ऊरु; भुजन, पदन, विनु राक्षसन करत हैं देखिये कैसे ये रनमत लरतहैं गिरत उठत पुनि पुनि कुपित डटत निज जय रटत अंग अंग कटत न हटत गरबन घटत लटपटत बढ़त जात शरन सटत राक्षस छन छन छटत पुहुमी पटत जाति है॥

छंद । अनेकबानलेतनूनलेसुचापजोरतै । नजानिजातजानिजातबानगात फोरतै ॥ भयोकोदण्डकुण्डज्वालजालअग्निस्तरै । गजेंद्रसुण्ड रुण्डमुण्डखण्डखण्डआहुतीपरै ॥

रासभ:सूतंप्रति । एक यह मेरो महा सैन संघार करो राजकुमार वेष महाकाल है की रुद्र है अब मोकों महा उत्साह भयो है हांकु मेरो रथ याके सनमुख ॥

कलंक: । मेरोयुद्ध देखि लीजिये छनमें रणमें राजपुत्र कों गहे लेतहों जो काल होय तौ बहुत भली भई याहि बिनु प्रान करि विम्बबाधा मेटेदेत हौं ( तिष्ठतिष्ठेति जल्पन्धावति )

हितकारीसोत्साहं । भलो आयो आजु नि:कलंक भूतल ह्वै है ॥

( इतियाथंनि:क्षिपति )

लम्बण्ड: । हे स्वामी कलंक तो आपनी काय राजकुमार धार धार में वहाय नाम हमारे कुल में लगायो अब मैं घर सों याको कंठो काटि रुधिर सों सो धोवत हौं ॥ इतिधावति ॥

हितकारी । आवोआवो तिहारे कंठ काटि सिरन सितकंठ कंठ को कठुला करों ॥

रासभ: ( स्वगतं ) अरे यह तीनिमुख सों तीनि भुवन भक्षनकरनवारो जैसे हरशरतें त्रिपुर तैसे बालसर ज्वालमें जरि गयो आश्चर्य है ॥

पुन:हंतानृपीडहृत्वासक्रोधं(प्रकाशं)ये धनुर्वेदअज्ञ राक्षस मारि गर्व न करो अब त्रैलोक्य विजयी सो कामपरसो आपनो धनुर्विद्या देखावो ॥

( इतिसक्रोधंधावति )

आकाशे । देखो देखो हितकारी औरासभ के बान आकाश को अनवकाश करेंगे ॥

छंदतरंगिनी । दोटलरतअतिबरिबण्ड । शरतजतअनुयमदण्ड ॥
बहुअखङ्गनसप्रचण्ड । बरषतअनलनवखण्ड ॥

लज्जा । अरे यह नीच स्वामी को सनाह घसर शरासन काटि डारयो हाय हाय अब कहा होय गो ॥

डीलधराधर: । धीर धरो हितकारी को जीतनवारो जगत में जाय मान नहीं है अब क्रुद्ध होइ मारे डारे है ॥

राक्षसः । अरे राजकुमार अब नहीं बचै है जाको सुमिरन होइ ताको सुमिर ले ॥

द्वितीयंधनुःसज्जीकृत्यहितकारी । श्याबास बीर श्याबास आछो पराक्रम कियो अब धनुष तें ये जे बान कढ़ै हैं तिनको पराक्रमदेखु ॥

नैपथ्ये । देखिये स्वामिनी पंच बान लिये स्वामी पंचबानहीं है पेखे परे हैं अब देखिये देखिये चारि बान तें चारि बाजि गिराये एक तें शिर काटि दियो ॥

राक्षसः । रथान्निपत्य वृक्षमुत्पाटन आसुरास्त्रेण अभिमंत्र्य, राजकुमार यह अस्त्र तें तुम्हारो संहार करौं हौं ॥ इतिनिक्षिपति ॥

( वज्रास्त्रे णतन्निवार्य )

हितकारी । रेरे दुष्ट मुनिन को मारिमारि जेहि लोक पठाये हैं तेहिलोक तहूं जात है ॥

सक्रोधंराक्षसः । अरे राजन सौं ऐसो कोऊ नहीं कहै है जैसो तैं कहै है जिन जिन राक्षसन को तू मारयो है तिनकी नारिन के आंशू आशु या गदा ते पोंछो हौं । इतिनिःक्षिपति ॥

( तांशरेणचूर्णीकृत्य )

हितकारी दोहा । जाके बलबलगे बहुत सोह्वै रेनु समान ।
मिथ्यावादी बैनसम कीनोगगनपयान ॥

( मुष्टिकावध्य राक्षसः सक्रोधं अभिमुखं धावति )

आकाशे दोहा । हितकारीकेबानते इमिजरिभोयहछार ।
जिमिहरनामउचारतै पातकपरमपहार ॥

( जयजयतिपुष्पवृष्टिः )

प्रविश्य मैत्रावरुणिः । छंदमधुमती ।

जयजयतिहरे । रणउमगभरे ॥ शरधनुषधरे । मुनिअभयकरे ॥

गद्य । पूर्णावतार तारण संसार सार बिज्ञान जनन मन करन करन क्रूरता हरन अघरन धरन धरन खलन संघरन घरन घरन तिहुलोक कीर्तिविस्तरत तरत तरतो जो करत प्रनाम नामररत रत रूप प्रकाशी काशी सदाशिव सदाशिव देत हैं ते आप आपनो मृदुहास प्रकाश प्रकाशवान मम मन करो ॥

नेपथ्ये छंद । यहिसमैमहिजाकहिनजातिनिहारिलेछबिपीयऔधनु । अभिरफेरतसरसुनतअस्तुतिमनोमुनीयकी ॥ तनसुभगसोहतधरिकन अनुराजिराप्रमुनीयकी । अतिमुदित ललित तमालबैठीलसतिरंजनि औयकी ॥ १ ॥ चलो अब समीप ह्वैतें शोभा निरखें ॥

( प्रविश्य महिजा डीलधराधरौ च प्रमोदं प्रणमतः )

मैत्रावारुणिः । अब सब मुनि अभय भये तुम्हारी जय होइ हों अब आश्रम को जाउ हों ॥ इतिनिःक्रांतः ॥

हितकारी । डीलधराधर चलो स्नान करैं ॥ इतिनिःक्रांतःसर्वे ॥

( सामात्यदिक्शिरः प्रवेशः )

दिक्शिरः । हेमंत्री जगत जैसो अवकाश भयो अब मेरे मनमें ऐसो आवै है की उदधि उलीचि गगन गंगा ल्याइ मीठो जल भरि दीजिये औ समर संताप शमित करत यह मयंक बड़ो सेवाकरी याहू को निःकलंक कीजिये अरु इष्टपद पूजन जायबे को दूर परैहै ताते कैलाश ह्यांई उठाय ल्यावो अरु आभरन अरपि प्रसन्न करन हित शेषऊ को ल्यावो अघट कान तें कहो पृथ्वीपट वोढ़िसोबै जाय ॥

मंत्री । महाराज आप सब करन को समर्थ हैं यह कौन बड़ी बात है भलो मंत्र विचारनो ॥

( प्रविश्य दीर्घनखीपादयोः पतित्वा उच्चैरोदिति )

दिक्शिराःउत्थाप्यसक्रोधं । अरी ऐसी दशा तेरी करि कौन न मीचु को चुनौती दई ॥

( दीर्घनखी वाच्यावरुद्धकंठं )

छंदपद्धरी । अनुपमआयेद्वैनृपकुमार । रासभपुरढिगबनकियअगार ॥ तिनसंगसुंदरीछविअपार । तुवहेतुहरनमैंकियबिचार ॥ तिनहाल कियोऐसोहमार । हैंरासभपहंकोनिपुकार तिनसरनोउभोयुतसैन छार । जोकरनहोयकारियप्रकार ॥

दिक्शिराः । ( आत्मगतं ) काल दिगपाल ऐसो हाल हमारी भगिनी कों न करैंगे विशालबल हमारे भुजन को जानै हैं ॥

विन्ध्यार्य ( स्वगतं ) जान्यो जान्यो चक्र चलाय चक्रपानि मेरे काय

की कठिनता जानि नरनारायण रूपतें श्रीसंग वानप्रस्थ धर्म ठानि जय हेत बन निकेत किये हैं ॥

प्रकाशं छंद । ल्याउल्याउजान । सैनलैमहान ॥ मैंकरोंपयान । मेटि देहुंमान ॥ १ ॥

प्रविश्यदीर्घजठरः । महाराज आतुरी न कीजै उनकोबल प्रभाउ सुनि लीजै जहांजहां राक्षस भागिभागि गये तहांतहां उनकेबान तिनको हेरि मार डारे, हों भागि भूरि भागि तें प्रभु को भवन देख्यो ॥

छंदगीतिका । चाहैंघरनकोविस्वजारैंचहैंफिरिसिरजैंनयो । पालैंसराहि सेदिहिंसुखजोकबहुंकाहु बिनाहिंभयो ॥ त्रैलोक्यविजयीरासभैछ्नमाह सुतसैनाहयो । सगहुकरजोजंगयोधानाहिंजगतोललजयो ॥

दिक्शिरा:आत्मगतं । रासभ मो सम बली अगार तासु संहार करन हार बिन परमईश कौन होइ जो भक्ति पंथ चलों तौ दुरगम दिरंग बारी है ताते उनके करगत मुक्ति सकुल चालई लेउं ॥

इतिविचिन्त्यप्रकाशं । अरे उहां तें भाजि कै मोकों डेरवावै है

दीर्घजठरः । महाराज हों मंत्री धर्म बिचारि कहों हों जो पै सिद्धो व्याधि जाय तौ औषधि में श्रम काहे कीजै ॥

दिक्शिराः । अरे यह धनु बिन युद्ध कैसें मरै गो ॥

दीर्घजठरः । महाराज प्रानहूं तें पियारी बाके नारी है ताको महामायावी घातिनी सुत को संग लै हरिल्याइये बिरह ते आपुही मरिजायगो ॥

दिक्शिराः । भली कही भली कही ॥ इतिनिःक्रांताःसर्वे ।

( ततः प्रविशति घातिनेयः )

घातिनेयः । आह आह बड़े बड़े अपशगुन देखे परें हैं धौं कहा होइ गो राक्षस कुल को कल्यान होय कल्यान होय ॥

( दिक्शिराप्रवेशः )

प्रत्युत्थायघातिनेयः । पाद्य लीजै अर्घ लीजै स्वामी को आगमन सेवक के सदन बड़ो भाग्य को फल है ॥

दिक्शिराः दोहा । शीसजटामृगचर्मधर पहिरिबलकलचीर ।
कबतोलियमुनिबेषयह कहैंकरि मतिधीर ॥

घातिनेयः । कछु दिन भये हम तीन राक्षस मृग बेष बनाये मुनिन भक्षन हित दण्डकारण्य गये रहैं तहां मुनिबेष बनाय कै राजकुमार आये देखि भक्ष लेखि हम धरनधाये उनमें एक हम सबकों परेखि शर हनि द्वै के आसुहीं असुइयो मोकों धौं बचाय दियो तबतें देह अनित्य मानि तप ठानि इहां आनि बैठो हों आप को आगमन जेहिहेतु भयो सोइ सो आज्ञा दीजे माथे धरि करौं ॥

द्विकशिराः । मुनि बेष बनाये राजकुमार एक बन आये बिन अपराध मेरी भगिनी को कान नाक काटि ससैन्य रासभज को मारिडारयो चाहिये वेई सोइ बैर लेन हित तें मृग रूप धारि उतहीं सिधारु उनको आश्रम ते ल्यावै निकारि तब मैं ताको प्रान प्यारी नारि हरि लेउंगो आपही मरि जायगो ॥

घातिनेयःसवैया । ऋषियपथनकहैंसुनैमंत्रहैंबलहुंश्रोतहुदुर्लभऐसे ।
जानतहौनाहुंकालकोपास परैगरमेंकियेकामअनैसे ॥
कालिकाराकसकेकुलकोंमहिजागृहआनिकैबांचिहौंकैसे ।
पूछिकैबालबिचारिकरोतिहुंलोकनमंभीष्यानकजैसे ॥ १ ॥

द्विकशिराः । तोसों सीख नहीं पूछों हौं सासन देउं सो करु ॥

घातिनेयः । मोकों तौ अब हरी दूब दुति देखत डर लगै है उनके सन्मुख कौन जाय ॥

द्विकशिराः । रे मूढ़ ह्वां मारि जाइ धों न मरि जाइ न गये इहां तो मेरी कृपाण तें अबहीं मरै है ॥

घातिनेयः आत्मगतं । याके कर मरे काहा है उन्हईं के कर तीर तीर्थ तीर तन त्यागौं ॥

प्रकाशं । भुवन भट्टारक बहुत भली आप की आज्ञा कौन न करै ॥

द्विकशिराः । अब तुम अपनी प्रकृति में आये चलो ॥

इतिनिःक्रांतौ ( सबंधु बधूहितकारिप्रवेशः )

डीलधराधरः । हों आखेट को जाउं हों ॥ इतिनिः क्रांतः

हितकारी । महिजा छाया महिजा इत राखि दिगशिर बधांत अग्नि में रहो ॥ महिजातथेति निःक्रांता ।

ततःप्रविश्य विचित्रमृगप्रवेशः
(इतस्ततश्चरतिप्रविश्य (छाया महिज्रा)

पद । कहंअतिअदभुतमृगयहस्वामी । टेक ।
राजहिंरजतबिंदुसुबरनतन मणिखुरअङ्गसुगामी ॥ चरतहरिततृन इतउतबिचरत लागतअधिकसुहाये ॥ विश्वनाथयुतयतनआसुगहि ल्याःबहुमोहिंअतिभायो ॥

(ततःप्रविशतिडीलधराधरः)

हितकारी । भैया भले आयो तुम श्रमित हो महिजा को ताके रहियो मैं या मृग के पीछू जाउं हौं ॥ इतिनिःक्रातः ॥

नेपथ्ये । हा डीलधराधर हा डीलधराधर ॥

छायामहिजाआकर्ण्यसोद्वेगं । हे डीलधराधर पीतम को बड़ो कष्ट परो तब तुम को हा कहि टेरत्रो है तुम जाउ जाउ ॥

डीलधराधरः । हितकारी काहू के जीतिबे लायक नहीं है. यह कोई राक्षस छल करि बोल्यो है ॥

छायामहिजा । जात नहींहौ प्रति उत्तर देतहौ येही अभिलाष किये रहे हौ ॥

डीलधराधरःसखेदं कर्णौपिधाय । आः आः अरी मोको अति श्रवण कटुबानी कहै है तूं महा चंडी है ॥

(इतिधनुः कोटयातल्वरितोभिमंत्ररेखा मंडलंकृत्वा निःक्रांतः)

प्रविश्यचिदंडिवेशोदिक्शिराःमाता भिक्षां देहिमाताभिक्षां देहि॥

छायामहिजा । तोलों फल लेउ खाउ जौलों स्वामी आइ विशेषि आतिथ्य करैंगे ॥

दिकशिराः । बांधी भिक्षा हौं नहीं लेउ हौं ॥

(महिजानिःक्रम्यलेउदिकशिराःनिजरूप मास्थायरथंस्थात्वा)

हौं दिकशिर हौं जाके भयतें इन्द्रादिक देवता कपै हैं तुम को लैकै त्रिलोक की रानी करौंगा ॥

छायामहिजा । आःपापभागुभागु अबहींपीउ आवतहैं नाशकैदेइगे ॥

दिकशिरा: ( आत्मगतं ) जैसें बुध रोहिणी को लैचलै ऐसे महिजा को लै चलौं ॥

( इतियानमारुह्यापरिक्रामति )

छायामहिजा। हाय हाय नाथ सहाय होहु खल हरे लीन्हे जात है ॥

नेपथ्ये गृध्रिमाभैःमाभैः। हौंपहुंच्यो पहुंच्यो नीच नहीं जाय सकै ॥

प्रविश्य सौपर्णिः ॥

चामरछंद। तिष्ठतिष्ठदुष्टरिष्टपुष्टखूबखायकै । मुंचमुंचराजपुत्रिप्राप्त भोमैआयकै ॥ मोरयाकठोरठोरोरकालदंडते । नाहिंतैंवचैजोभाजिजा हिब्रह्मअंडते ॥

दिकशिरा: दृष्ट्वा स्वगतं । यह कहा मै नाक है ॥

प्रकाशंसाट्टहासं। जान्यो जान्यो वृद्ध गृद्ध है मम कर तीर्थराज में तन त्यागो चहै है ॥

सौपर्णिः। सावधान हो अब कृद्ध गिद्ध सों युद्धपरयो आइ ॥

( इति चंचुचरणैः युद्धं नाटयति )

आकाशे। जिनते यह हर गिरि उठाय लीनो ते बाम कर ठोर ते कतरि डारे अब बरवल जामें हैं। श्याबास बीर श्याबास तेरी जीबि होइ चुकी ॥

( दिकशिरा:। अमोघखड्गेनपक्षौ छित्वा सत्वरंनिक्रांत: )

( ततःप्रविशतिहितकारी )

हितकारी। अहो मेरो ऐसो बिकल बैन राक्षस बोल्यो धौं कहा होय ॥ इतिसत्वरंपरिक्रामत ।

( ततः प्रविशति डीलधराधरः )

हितकारी। अरे भाई महिजा को अकेलिहीं जाड़ि आयो या बड़ो अनर्थ कियो ॥

डीलधराधरः बाष्पावरुद्धकंठं। महाराज मायावी राक्षसको हा डीलधराधर यह बानी सुनि मेरो समुझायो न मानि महिजा मोकों प्रान नाशहू तें असह अति अनुचित बानी कही ॥

हितकारी। तुम नारी के बैन कान करि आये आछी नहीं करी अब महिजा बड़ी भाग्य तें मिलैगी बेगि चलो बेगि चलो ॥

( इति उभौ परिक्रामतः )

हितकारी । आश्रम में ये केश कुसुम परे हैं कोई लैगयो कै हाँसी कै छपीहो ? अहो तुम सर्व सहा की सुता हौ होतो दिगजन को सुत हौं जिनके प्रान धन बिरह होतहीं गये अस बिचारि बेगि प्रगटहु प्रगटहु ॥

( इतस्ततोन्वेषयंतौ परिक्रामतः )

हितकारी । अरे यह युद्ध जान चारिखर सूतशिर कटे परे हैं यातें जानै है कोई राक्षस रन कियो है अरे सौपर्णि कका काहे बिकल परो है ॥

( इति रत्नरक्षुपसृज्य जटाभिस्तदंगमुन्मार्ज्य )

पद । कछुदिनताततातसुखदेहू । टेक ।

भूलिगयोबनवासप्रियादुख अतिदुखतकतदशातुवयेहू ॥

केहिखलकियय हहालतुम्हारो कोलैगयोभूमिकीजाई ।

विस्वनाथधरिधीरकहहुकछुयहिऔसरमोहिधीरधराई ॥

सौपर्णिः दीर्घं श्वस्य । दिगशिर हमारो हाल ऐसो करि महिजा को बिंदु मुहूर्त में लैगयो जो वह महूरत में चोरी करै है सो प्राण सहित वस्तु देइ है ॥

हितकारी । तात दिगशिर कौन है कहांबास है ॥

सौपर्णिः । निधिपति को बंधु है राक्षसपुरी बास है

( इतिमृत्युंनाटयति )

हितकारी । देखो डीलधराधर साधु परउपकारी तिरयग योनिहूं में होय हैं ऐसिहू अवस्था में ऐसो युद्ध करि महिजा मिलन को महूर्त शोधि शरीर छोड्यो ॥

( आःआःइतिरोदति )

आकाशे । बड़ो आश्चर्य है बड़ो आश्चर्यहै देखो गृद्ध को कृत्य करि हितकारी पिता की गति दीन्ही ॥

हितकारी । आश्रम मृग रोवत दक्षिण दिशि चले जाय हैं यातें जानै हैं याही ओर लैगयो है चलो चलैं ॥

( इतिपरिक्रामतः )

हितकारी । ( चकोरंदृष्ट्वा )

पद । कहैतूचकोरचतुरमोकहूंसमुझाई । टेक ।
तोकोकतमित्रमानि शीतलकरिदेतअनलकाहेममबिरहआगिदेत
हैबढ़ाई ॥ जान्योयहरजनीचरयानेहितचरचिचितलीन्होकारिनिप-
टरजनिचरनसोंमिताई । बिश्वनाथविधुअमिकरनाहकहोंनाम
धरयोलखियगरलभरयोसोइबरषतझरिलाई ॥

( सकोपंचंद्रंप्रति )

पद । रेरेचटुलचोरकेभाई बिरहिनगनदुखकारी । टेक ।
सकलभुवनसमभरकरततुवतेजफैलिदिसिचारी ॥ तहूंकलंकितमृग
सहाययुतसार्वभौमनिशिचारी । बिश्वनाथतियबेगिबतावहि यहबर
वाननिहारी ॥

सरितमवलोक्य । हे सुभग सरिता तैहूं कृपकाय अब महिजा है
जो कहूं देखी होय तौ बताय देहु ॥

( अशोकमवलोक्य )

छंद । महिजादेयबतायलोकमुददायकहै । होंनरनायकतहूंतरुनमेंनाय-
कहै ॥ नवपल्लवतबहियोसुरंगहिसेअधरे । मेरेहियनिरधूमबिरहअं
गारभरे ॥ तेरेसुमनसिलीमुखआवतभावतहैं । मेरेमनहिंमनोजसिली
मुखधावतहैं ॥ समताईसबभांतिभेदयकहोतयहै । तोहिबिधिकीन
अशोकमोहिंदियशोकमहै ॥

डीलधराधरः । स्वामी धीर धरो धीर धरो शोक सरि तरिवे को
धीरजही तरनी है ॥

हितकारीदोहा । यहिछनधीरजतेकठिन शोकजोनेकसिराय । तऊ
तोयअपहरनको हायलाजकिमिजाय ॥

( डीलधराधरः )

जलेनतंमुखं प्रक्षाल्य । सावधान होउ चाहिये तो ह्यां महि
यह अटवी अति घन देखी परै है ॥

गद्य । गो गौर गवय भुजंग मातंग शार्दूल को[illegible] कोलाहल भूत
बैताल समताल कर कपाल गल [illegible]माल खेलत कराल ब्याल

ताल तमाल हिंताल प्रियाल रसाल आल बाल गजमद परिपूरण फलन धूरन धवल परिमल परिमलित ललित छबिकलित नभ लखियतु है ह्यां ढूंढ़िये ॥

(इतिनिःक्रांतौ) (यपस्वनी किरातीप्रवेशः)

(इतस्ततः संचरंती तपस्विनी गायति)

बिरहा। कबदेखिहौंइननैननभाईमेरेरेहितकारीकोरूप।नखसिखआनंदमयसबभांतिनमुनिबरबदतअनूप ॥ जटामुकुटसिरकरधनुसरकरफलनमालसुहाय । परमतपायअघानोपापघिलततबततितीकिभुकिजाय॥ जाकोनिरखतरिपुराकसऊमी।हिरहतरनमांभ। सुमिरतजाहिहोतथंकरहियसमसाबनकीसांभ ॥ बिचरतइतकबआइकढ़ैगेडोलधराधरसाथ । बिश्वनाथममसाथधरेगेतीनतापहरहाथ ॥

(कुंजरमुनेर्गोपः प्रविश्यगायति)

चंदैनी। जैसेहोतचंदैमोहरपततकिघनश्याम। ऐसेतैंअबहूं हैआवतनुखमाधाम ॥ ढूंढ़तप्राणपिया डोलधराधरसंग । बिश्वनाथमैंनिरख्योंनखसिखशोभरमंग ॥ १ ॥

तपस्वनीसहर्षं। कहु कहु श्रवणामृत बानी कहांलों आये ॥

गोपः। दण्ड कांतारि जब इत को चले तब मैं पहिलेहीं तो को खबरि देन आयो हौं ॥

हितकारिप्रवेशः। (पादयोःपतित्वा तपस्वनी)

त्रिभंगी। जयजयहितकारीमंहदुखहारीमरउपकारीबानिअहै ॥ करसरधनुधारीअधमउधारीजनडरकारीप्रेमम है ॥ मोंघाविरनारीगृहपगुधारीरीतिपसारीदीनहि । किमिसकौउचारीजोहहमारीकीर्तिंतुम्हारीसुखअमितू ॥

महाराज जिन वृक्षन के मीठे फल मैं चाखे हैं तिनहीं के फल आपके हेत संचि राखे हैं ते लीजे ॥

कन्दैंडी भुक्त्वा। अरी ऐसो स्वाद मोको कुशलाऊ के कराये मिल्यो तैं बड़ी तपस्विनी है मोको राज कुमारि को बताउ ॥

तपस्विनी। महाराज था॰ दरि में गिरि पर सुगल कोश है ताहूकी

नारी भाई हरि लई है यामों मिलिये वा महिजा की खोज कराइ है आप तो सबके आत्मन के आत्मा हैं कहा नहीं जानत हैं कुंजर मुनि जब ब्रह्मलोक कों जान लगे तब मोकों कह्यो तैं ह्यांई टिको रहु हितकारी इहां आवेंगे तिनको दरश पाय मुक्त ह्वै जायगी आप चण खरे रहिये मैं शरीर त्यागों ॥

( इतिश्रवण्यांयोगाग्निनादेहदहनंनाटयति )

हितकारी। चलो डीलधराधर वा गिरी कों चलिये जा गिरि में सुगल कों अनुरागिनी बतायो है ॥

इति निःक्रांताः सर्वे चितीयोंकः ॥ ३ ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज बान्धवेश महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव कृत आनन्दरघुनन्दन नाम नाटके तृतीयोङ्कः ॥ ३ ॥

---

# अथ चतुर्थाङ्क प्रारम्भः ॥

( ततः प्रविशति ससंची सुगलः )

सुगलः। हे चिरंजीव ऋच्छराज हमारे दुःख को अन्त कबहूं होयगो तुम ज्योतिष जान हौ यातें पूंछियतु है ॥

ऋच्छपतिः। आछी सुघरी में प्रश्न करो है देखो तुम्हारे पूंछत हीं सेतफनो फनपर बह खंजरीट नचै है तातें अब तुम्हारे दुख को अन्त आयो ॥

( सुगलः सत्वरमुत्थाय दूरतोऽवलोक्य )

( सांगुलिनिर्देशंसस्मितञ्च )

सुगलः। भो भो दस्वनंदनो दूरिदीठि करि देखो सगुन तो पेखोई परै है यैवै द्वै बीर शस्त्रधारी निशंक चले आवत हैं मेरे जान अग्रज मेरे मारन को इनकों पठायो है भागो भागो ॥ इति निष्क्रांताः सर्वे।

( हितकारीप्रवेशः )

हितकारी। देखो तो डीलधराधर यह शैल की शोभा ॥

छंदनराच । अनेकधातुरंगरंगअंगचंदनैदिये ।
भिरैंभिरन्नमोदआंसुभक्तिभासतीहिये ॥
सुशृंगसीसमेंलताजटानमण्डलैकिये ।
लसैंविहंगमालमालशैलसंतखेलिये ॥

नेपथ्ये । स्वामी थम्हिये थम्हिये पहिचान कै भाजिये, चेतामल्ल तुम प्रवीन हो जाय परखि आवो ॥

प्रविश्य बटुवेष चेतामल्लः । आपकों क्षत्री मुनि बेष बिलोकि मोंको संदेह होय है बुझाइ कहिये ॥

डोलधरावरः । (सर्ववृत्तान्तकथयित्वा)

डोलधरावरः । तुम आपनी कथा कहो ॥

(चेतामल्लः पादयोः पतित्वा)

पद । जान्यो तुम्हैंनाथहितकारी । टेक ।
अहोप्रभोवनबसिनियरेहों दईदासकोसुरतबिसारी ॥
चलियेनिजनृपसुगलमिलाऊं हरिगईताकीनारी ।
विश्वनाथप्रभुदीनबंधुतुम अहेमिताईजोगतिहारी ॥ १ ॥

इति हितकारी डोलधरावरो स्कंधयो रारोप्य चेतामल्लो निःक्रांतः ॥

प्रविश्यसुगलः । अरे यातो दूनो को कंध कियें ल्याई लिये आवै है धौं कहा कारण है ॥

प्रविश्यचेतामल्लः । आवो आवो स्वामी परम पराक्रमी लैआयो हौं ॥

(सुगलः आत्म सात्त्विकं भैव्यं कृत्वा रोदिति)

हितकारी । न शोक करो तुम्हारे तिय हारी कों एक ही शर तें मारों गो ॥

सुगलः । स्वामी एक बड़ो आश्चर्य देख्यो है ॥

हितकारी । किंकिम् ॥

सुगलः । एक समय शैल शिखर पर मंत्रिन सहित मैं बैठो रहौं आकाश में ऐसे शब्द सुनो परौ हा हा हितकारी मोंकों राक्षस हरे लिये जाय है फिर एक बसन में बंधे भूषण गिरे हौं दरी में धराय राख्यो ॥

(हितकारी हृष्ट। सशोक मधरस्फुरणं नाटयति)

सुगलः। मित्र शोक काहे करौ हौ॥

(डीलधराधरः सर्वं वृत्तांतं कथयति)

सुगलः। बाप की सौंह आपकी प्रिया की आसुहीं खोज लगाय देउंगो औ आप के संग आपके तिय हारी को मारौंगो॥

हितकारी। चलो चलो तुम्हारे शत्रु को मारौं॥

सुगलः पद। बिन जाने बल प्रबल शत्रु सों किमि प्रियमीत लराऊं।

हितकारी। कहु देखराऊं कौन पराक्रम पुनि तोहि भूप बनाऊं॥

सुगलः। अग्र जु फेंको है दुंदुभि शिर ताको आप उठैये।
बिश्वनाथ तब सात डोलावे तिन सर छेदि देखैये॥

हितकारी। बहुत भली॥ इति परिक्रम्य तथा करोति॥

सुगलः। सहर्षं लांगूलं चुंबिन्यो तृत्य। आश्चर्य है आश्चर्य है देह बल जैसो बान बल तैसो॥

हितकारी। अब चलो दुंदुभि रिपु पहं॥ इति निःक्रांताः सर्वे॥

(ततःप्रविशति समंत्रीबासविः) ताल नाम मंत्री केयं)

बासविः बाचयति। स्वस्तिः श्री महाराजा धिराज श्री कपिराज श्री मित्र बासविः इतै श्री राक्षसेंद्र श्री मही महेंद्र श्री महेंद्र जयशान श्री विश्व बिजयी श्री दिगशिर की आशिष हमारी तुम्हारी अकुशल ब्रह्मा लिखिवोई नहीं कियो है एकै राजकुमार बलवानन मारन मन धरि तुम्हारे निकट के बन पयान करि सदल रासभ के प्रान हरि लीन्हें हैं पकरि मेरेपास पठायदीजिवो॥

मंत्री। महाराज आपकी शक्र शत्रु को मित्रता कैसे भई॥

बासविः। एक समय हौं पूरब समुद्र संध्या करन गयो हुतो तहां जगत जय करि मोहूंको जीतन हेत पीछू तें पकरन को पहुंच्यो हौं। वाको जानि कांख दाबि फिरि तीनौ समुद्र संध्या करि आय बाग में छांड़ि दीन्हयो तबतें बलवान मानि मित्र बनाय गयो है॥

मंत्री। महाराज आप कहा जानि मित्र मान्यो॥

बासविः। वासों अस्त्र शस्त्र में जीतनवारो त्रिभुवन में कोई नहीं है॥

हितकारिप्रवेश:। मंत्री प्रहस्य॥ देखिये देखिये स्वामी रबिनन्दन
है राजनन्दन सहाय लै आयो है॥

बासवि:। अरे इनके तन बलवान ऐसे लगै हैं दुंदुभि शिर फेंकन
हार चाहिये तो येई होय॥

हितकारी। देखो डील धराधर॥

कबित्त। कीन्हेनभगौनयाहिउड़िउडूपौनमाहिं परतदिगंतगिरि शृंगन
कोगाथहै। गिरतहींगाजगहिलेत कूदिबीचहींमें न्हाततजिदेत बेला
बारिनिधिपाथहै॥ जासुबेगबिहदबखानैऔंचासौंवायु जासुबलआय
अजमायोदिगमाथहै। मेरुसोशरीर रनधीर नखबज्रबीर सुगल कोजेठो
बीरबैठोकीशनाथहै॥ १॥ याहि मोकों जनाय देहु॥

(डीलधराधर: तथेति बासवि मुपसर्पति)

बासवि: छंदतरंगिनी॥ तुम कौनहो दोउभाय।

डीलधराधर:। हमसचिवहैं कपिराय॥

बासवि:। तकतैमो जानियजाय। सबिशेष देहुबुझाय॥

डीलधराधर: छंद। येदिगजानसुवन हितकारी।कोरतिजेहिंक्षितिछाई॥

बासवि: हितकारिणमवलोक्य। अतिसुन्दर मृदुअंगपरम बलरास
भइहतिजयपाई॥

हितकारी। तुमसमको बियबली बिश्वनें। बापबैर जिनलीन्यो॥

बासवि:। तुमये कैबलवान जगत मैं रेनुकेय मदछीन्यो॥ १॥ जोतुम
सों जयपाऊं। तोजग बलवान कहाऊं॥

हितकारी। होंतो धनु सरवन्त खड़ोहैं हौं तुमहूं हथियार लेहु॥

बासवि:। कपिके आयुध दंत नख तरु पषान हीं हैं॥

(इति लोललांगूलेन शैलमुत्पाटय हंतुमिछति)

चेतमल्ल:। सुगल देखो देखो हितकारी के बान को पराक्रम आश्चर्य
है जाके बेगकी सुर्पन हूं बांछा करै हैं सो बासवि जौलों उछलि
घात करन की इच्छा करै तौलों शर बिटुछोनिहीं को घातकियो॥

बासवि:। पद॥ हितकारी सबके हितकारी परम पुरुष अवतारी।
पशुधरी तारन सरमारी नाशीकुरूतहमारी॥

सुतप्यारो मोसमबलवारो सौंपौंशरन तिहारो ।
इषुकाढ़ीमोकों मुदबाढ़ो जाउं पुरीसुखवारी ॥

( हितकारी शरंनि:सारयति )

(बासविः तनुत्यागं नाटयति । नेपथ्य रोदनधुनिः)

हितकारी । सुगल तुम जाय नारिन को आश्वासन करि भुज भूषन के कर बासवि की पार लौकिकी क्रिया कराय केआवो डील धराधर तुमहूं जाउ जब कृत्य करि चुकैं तब सुगल को राज तिलक करि भुज भूषन कों युवराज करि लेवाये लिये आइयो ॥

(तौ तथेतिनिःक्रांतौ । नेपथ्ये)

रुडिंडिमशब्दं । मुलुक सुगल को हुकुम भुजभूषन को ।

(ततःप्रविशतिससुगलभुजभूषनोडीलधराधरः)

हितकारी । सूर्यनन्दनु बहुत दिवस दुसह दुख भोग्यौ है मेरी आज्ञा मानि जाय अब सुख करो जौलौं बर्षा है हौंहूं डील धराधर साथ या परवत बसि दिन काटों हों बिन शरद आगमन महिजा मिलन को यतन अब अशक्य है ॥

(सुगल भुजभूषणौः तथेति निःक्रांतौ)

( हितकारी डीलधराधरौ परिक्रामतः )

हितकारी । डीलधराधर या परवत बास करिये लायक है ॥

छंदगीतका । झरनाझरैं मदधारशोभित अनेकधातुसिंगारहै ।
अललित पल्लवलालभापी फूलचखसुखसार है ॥
बहुघंटघंटीमुखर खगगनदंतदुति बकपाँत है ।
परबतनहीं यह विहदवारन लखहुबिलसतमाति है ॥

( इत्यारुह्यबासंनाटयति ) हितकारी ।

पद । घूमिघूमि घनउमड़ि घुमड़िकै घहरत दशदिशिघेरे । धुनिछन छनमन घनसोघमकतिबिपुइषु बूंदघनेरे ॥ चहुंकितचमकिचमकि यहचपला हियरलकलगावै । बिश्वनाथकी हायप्रियामुख शशियहि समयदेखावै ॥

डीलधराधरः । धीर धरिये धीर धरिये शरद के चिन्ह अब पेखपरै हैं ॥

पद । जिमिशशिसहित अमलभो नभ तिमिरिपुहति प्रभूहिय ह्वै है ।

बिलसहि बिगसित बारिज तिमि मुख सुखमा महि जाएहै।
इनहंसनसद्रिसैगतिगहिअति उत्कंठितहिगजैहै।
बिस्वनाथइनखंजनसेद्रिग देखिअमितमुदपैहै॥

(नेपथ्ये गानवाद्यधुनिः)

हितकारी कर्णंदत्वा। डील धराधर। या सुगल अबहूं हमारी सुधि भुलाय कै रागसुनै है॥
डीलधराधरः सक्रोधं। मैं जाउं हौं बासबिकी दशा याहूकी करौंगो॥
हितकारी। ऐसो क्रोध न करो जाउ समुझाय कै लेवाय ल्यावो हौंहूं तौलों परवत में सिद्धाश्रमनि जाय चित बिश्राम करौं हौं॥

(इतनिःक्रांतौलप्रवेशः) (मदारसुगलप्रवेशः)

मदाघूर्णितनेत्रःसुगलः। भभ्रमभभर्णापिये घुघुघुघूर्णेमेदनी॥
तारका। भभभ्रमतिभास्करोडपिनकेवलामेदिनी॥
सुगल। इहाहमसिंकंप्रियेववबाहर्णमानय।
तारका। समास्तिगगवाद्यके॥
सुगलः। गगवाद्यमेवानया॥

(प्रविश्य चेतामल्लः)

छंद। जोसबकाजसवांरनोतुरतहितेहिभुलायकपिराय।
करिमदपानरहौमतवारैर जरहैकोजाय॥
हमसुचिवनकहंशोचहोतहैसमुझितिहारोनाथ।
बिस्वनाथसुनिबिनयकरहुमोइजातेरहैबिलास॥१॥

इतिश्रुत्वा बिगतमदःसुगलःसभयं। बेगि बानरन कों पठाइ सप्त दीप सैन खैंचो॥ चेतामल्लः तथेतिनिःक्रांतः।
प्रविश्य भुजभूषणः। क्रुद्ध डील धराधर आय द्वार पर खड़े हैं॥
ससंभ्रमं सुगल। तुम जाउ चेता मल्लको संग लै उनको शांत कराय लेवाय ल्यावो॥ भुज भूषणः तथेतिनिः क्रांतः।
सुगलः। सुषेन सुता तुमहू अंतह पुरके द्वार लों जाय क्षमा कराय लै आवो॥ सुषेन सुता तथेतिपरिक्रमति।

(ततःप्रविशतिचेतामल्लभुजभूषणाभ्यांसहितोडीलधराधरः)

(सुषेनतनयापुरोवलोक्य)

करनाटकी भाषा में पद । मैदन मंगल आगलि निनग ।
याकासिट्टमाडिदिइवतनन्नगण्डक्यलसइतग ॥
माडयानकोतिकलसिकोट्टाननीनुनडीवलग ।
विश्वनाथसिट्टविडूअडूनीनुगतीनिनग ॥

तिलक । मैदन कहे देवर , मंगल कहे कल्याण, आगलि कहे होइ, निनग कहे तुम्हार ॥

दूसरतुक । या कहे काहे, सिट्ट कहे क्रोध, माडिदि कहे कीन्हा है, इवत कहे आजु, नन्नकहे हमार, गंड कहे पति, क्यलस कहे काज, इतग कहे इसका ॥

तीसरतुक । माड यान कहे करने हैं, कोति कहे कीश, कलसि कहे भेजि, कोट्टान कहे दियाहै, नीनु कहे तुम, नडी कहे चलो, वलग कहे भीतर ॥

चौथतुक । सिट्ट कहे क्रोध, बिडू कहे त्यागो, अडू कहे सब, नीनु कहि तुम्हार, गती कहे गति, निनग कहे हमकाहै ॥

(डील धराधरः अंतःपुर प्रवेशं नाटयति)

सुगलःसदारःपर्यंकात्स संभ्रमुत्थाय। अर्घ अर्घ पाद्य पाद्य ॥

डीलधराधरः सक्रोधं । अरे वह घर भुलाय सुरापान करि सुंदरिन संग बिहार करै है ॥

(सुगलः कंपते)

चेता मल्लः । आपको काज सुगल नहीं भुलायो युत्थपन बोलावन सब दिशन बानरन पठाये हैं ॥

सर्वतोवलोक्य सहर्षम् । यह देखिये मार्तंड मंडल को रज समूह पान ऐसो किये लेय है प्रलय पौन कैसो शोर होय है यातें मैं गुनौ हौं की बानरी सेना आवै है क्रोध काहे करियतु है सुगल हितकारी को आपतें अधिक पिआरे हैं ॥

डीलधराधरःसस्मितं। सुगल हितकारी के पास चलो ॥

(इतिनिःक्रांताःसर्वे) (प्रविश्यहितकारी)

पद। पवनपरासमहिजाअंगमेरो अंगअबपरसै। छनयहतापमिटायन्या करिनतु तन भरसै॥ रबितुममकुलजेठकहहुकहं तियअपहारी। कैतेहिमाथनिमालकरहुं बिशुनाथसुखारी॥

(ततः प्रविशति ससुगलो डोलधराधरः)

प्रणम्यसुगलः। यह सैना देखिये॥

पद्धरीछंद। अर्बनखर्बनआवतकपीन। आकाशहोतअवकाशहीन॥
बपुसमसुमेरुतुल्यपअनेक। त्रिकालहुकोनहिंडरतनेक॥
जबजोरहुजिनसहस्रैसुपर्ण। हैंबिबिधिदेशकेबिबिधिबर्ण॥
निजतनअर्पीदलसहितनाथ। मोकरौंकाहियजोविश्वनाथ॥

हितकारीसहर्षं। तुम सो मित्र पाय मैं अब शोक समुद्र पार होन चहत हौंइनको महिजा को खबरि लेन पठवो कहां है शरीर त्यागि दियो की जीवति है॥

सुगलःअंजलिंबध्वा। बहुत भली बानरान्प्रति, तुम सब दिशि बिदिशि जाय महिजा की खबरि लै आवो औ भुज भूषन येता मल्लादिकन को संग लै दक्षिन दिशा तुमहीं जाउ जो कोई मास भरे में खबरि न लै आवैगो सो मोरही करतें बद्ध होयगो॥

हितकारी। श्रेतामल्ल यह मुंदरी सहिदानी लिये जाउ॥

(तथेति निःक्रांता बानराः)

सुगलः। महाराज जब मोकों अग्रज निकारि दियो तब मैं ताको महा अमर्षी जानि भयतें भाजत सकल महि मंडल अवलोकि आयो तहां तहां के गुप्त प्रगटस्थल मैं सब बताय दिये हैं खबरि लई आवैंगे तब मैं महासैन्य संग लै शत्रु संहार महिजा को लै आऊंगो॥

हितकारीउत्थायआलिंग्य। क्यों न कहो तुम सब करन को समर्थ हो॥

ततःप्रविशंति। द्वीप द्वीप देश देश चिन्हानि गृहीत्वा बानराः॥

सुगलसचिंतंस्वगतं। दक्षिण वोर तें भुजभूषन न आये मास बितीत ह्वै गयोधौं कहा है॥

(प्रविश्य स्वप्रकाशिनीतापसी) द्राविड़ीबोलीमें ।

पद । अनकबरिकंनमलिपंडिरजैजैहितकारी ।
एल्लागुनपरंदडमउडमनूडबिडवियं नल्लकैयलविल्लुपिडिचिररोंवलि-
च्चुकारी॥एल्लालोकनादनखलकूटतकुन्नीरनीरमूनलोकदण्डीकेबरनल्ल
वेलपारु । संगरादिध्यानयश्मीनल्लसुखतअडंदालनल्लअडोघविश्व
नाथसज्जनन्तकारु ॥ १ ॥

( इतिप्रणम्य निःक्रांता: )

तिलक । अनकवरिकं कहे सबप्रानीको, नमलि कहे सुख, पंडिर कहे
करवैयाहो, एल्लागुनपरंदडम कहे सब गुणनिधान हो, उड
मनूडबिडबियं कहे शरीर संताप नाशकहो, नल्लकैयलविल्लु-
पिडिचिर कहे सुन्दर हाथमें धनुष धारण कियेहो, रोंवलिच्चु
कारी कहे बहुत प्रकाशकारीहो, एल्लालोकनादन कहे सब
लोकनाथहो, खलकूटतकुन्नीरनी रकहे दुष्टसमूहकेमरैयाहो,
मूनलोक कहे तीनलोकके, दंडीकेबर कहे शिक्षा करैयाहो,
नल्लवेलपारु कहे शतकर्म्म करो, संगरादि ध्यानयश्मी कहे
शिवादि ध्यान करिकै, नल्लसुखतअडंदाल कहे सुन्दर सुख
पावतेहैं, नल्लअडोघविश्वनाथ कहे सुन्दर रूपतें हेविश्वनाथ,
सज्जनंतकारु कहे सज्जनन की पालनाकरो ॥ ।

( हितकारी सुगलमवलोक्यते )

सुगल: । महाराज द्राविड़ देश के परवत में एक गुहा है तहां या
स्वप्रकाशिनी तप करत हुती मेरे जान तहाँ गए कीश तिनसों
आपकी खबरि पाय आय दरशन करि सुख छाय स्तुति करि शिर-
नाइ कृतकृत्य भई गई ॥

( तत: प्रविशति गृद्ध: )

गृद्ध: प्रणम्य । महाराज मोकों आपके कृपापात्र बानर मिले तिनको
दरश पाय पक्ष सहित ह्वै होंहूं प्रभु पद पदुम परसन आयो मेरी
बड़ो भाग्य जगो जो मेरे भाई को काय आप के काज में लगो ॥

हितकारी । कहो सब कीश कुशल हैं महिजा की खबरि पाईकी नहीं ॥

गृद्ध: । महाराज तिनको मैं संदेहित देखि राक्षसपुरी में महिजा को

बतायो सब मेरे बचन सुनि सिंधु पार जायबेमें अक्षय देखे परे तब ध्यानस्थित चेतामल्ल पास ऋच्छपति जाय बृतांत जनाइ महाबल सुधि देवाई चेतामल्ल उर उत्साह भरि दीह देह धरि लंगूर महि मारि कह्यो पुकारि ॥

कवित्त । कहौतौउठायदीपबोरौंबीचबारिधमें कहौदिगसीससीसरोसि नोचिडारहूं । कहौमुष्टिकूटिकूटिरेनुकौत्रिकूटआजुगगनउड़ाय कैतमासोसीपसारहूं ॥ कहौक्रोधभारभूंजिभूंजिभूरिराक्षसानि सोईखाखधारिदेंहरुद्ररूपधारहूं । कहौतोलपेटिलूमल्याऊंकु- लिवाकोकुल आगेंहितकारिहीकेमींजिमींजिमारहूं ॥ १ ॥

ऋच्छराज कह्यो तुम सब करन लायक हौ अबै जो आज्ञा भई है सोई करौ या सुनि उछलि पारही परो, आज्ञा होइ तो अब परिवार देखौं ॥ इति प्रणम्य निःक्रांतः ।

हितकारी । चलो संध्या बंदन करैं ॥

( इतिनिःक्रांताः सर्वे चतुर्थाङ्क )

इति श्री मन्महाराजाधिराज बान्धवेश श्री महाराज बिश्वनाथ सिंहजूदेव कृत आनन्दरघुनन्दन नाम नाटके चतुर्थोङ्कः॥ ४ ॥.

---

## अथ पंचमाङ्क प्रारम्भः ॥

( समंची दिक्शिरःप्रवेशः )

दिक्शिराः मंचिणंप्रति । आजु हौं रैनिशेष सपनो देख्यो कि एक मरकट खबरि लेन आइ जो सिंसुपा तर महिजा है तामें छप्यो बैठ्यो है सो जागि मैं महिजा के पास जाय बहुत भय दई ताके बिलाप की बातैं मेरे मन में अब लों गड़ी हैं ॥

मंची । तो जागि रातिहीं दुख देन काहे गये ॥

दिक्शिराः । जाते वाकी दशा देखि दूत खबरि दै हितकारी कों आसुहीं ल्यावै ॥

प्रविश्यराक्षसी । महाराज मोकों ब्रह्मा कों बरदान रह्यो है जब लों कोई तेरो तिरस्कार न करैगो तौलों राक्षस पुरी को भय न छोड़गो सो काल्हि की रैनि में एक छोटो सो बानर आयो ताको मैं द्वार में रोक्यो मोको वा मुठिका मारयो मुरछित ह्वै गई जागि अस्तुति करि पूंछी तुम को हौ कहां ते आये सो कह्यो हों हितकारी को दूत हौं महिजा की खबरि हेत आयो हों महिजा जहां रही सो थल भय सों बताय दियो औ तुमसों कहौ हों हितकारी परम पुरुष है जो जीवन चाहौ तौ महिजा को लै शरण जाउ॥

(इति निःक्रांता:)

प्रविश्य बाटिकापाल: । यक कपि महा प्रबल आय बाग बिध्वंसि पालकन मारि डारयो हों भागितें भागि खबरि देन आयो ॥

दिकशिरा: मंत्रिणंप्रात । सपनो सत्य भयो चलो पकरन को ततबीर करैं इतिनिःक्रांतौ ॥

( प्रविश्यचेतामल्ल: । इतस्तत:संचरति )

नेपथ्ये कोलाहल: । रथ रथ हाथी हाथी घोरे घोरे धनु धनु ल्याव ल्याव धाउ धाउ ॥

( तत: प्रविशति स सैन्यो नयनकुमार: )

नयनकुमार: छन्दनराच । सबै सुभट्टधाइ धाइ घेरिलेहु कीश कों ॥
महान्रज्जुबांधियाहि देहु दिग्ग सीसकों ॥

सुभटा: । सबैहुंथ्यारकैप्रहार अंधकार कीजिये ।
झपट्टिअंगअंगमेंलपट्टिबाँधिलीजिये ॥

( गृह्यतां गृह्यतामिति धावन्ति )

नयनकुमार: । अरे सूत यह तो बड़ो बलवान बंदर है बाग के प्रसाद को खंभ उपारि सब दल दलि डारयो हांकु मेरो रथ ॥

( इति शरान्नि:क्षिपति )

चेतामल्ल:आत्मगतं । अरे यह तो बड़ो धनुर्द्धर है याके शरन सों हों सावकाश नहीं पावों हौं ॥

इत्युत्पत्यनिपत्यचरणंचूर्णयतिनयनकुमारःमल्लयुद्धंनाटयति ॥

( चेतामल्लः पादयोर्गृहीत्वा भूमौताड़यति )

नेपथ्ये । महाराज नयनकुमार तो समर शयन कियो, वत्स वत्स इन्द्रमद मोरन काल है कि रुद्र है जो नयनकुमारई को मारि डारयो और कैसे जीतैगो तातै तुहीं जाइ बांधि ल्याउ ॥

चेतामल्लः आकर्ण्यस्वगतम् । रथन की घहरन गज घंटन को घन घन बाजि पैजनियन को भनभन भूषनन को खन खन एक ह्वै महा शोर सुन्यो परै है कोई बड़ो बीर आवै है ॥

( ततः प्रविशति घनध्वनिःससैन्यंच )

चेतामल्लः सोत्साहं छंद तोटक ।

युगसर्पसदर्प्पलगरथमें । पसरैमनि पुंजप्रभापथमें ॥

फहरात अकाशपताकमहै । उतसाह भरो अति सूतअहै ॥ १ ॥

परम प्रतापी पुरहूत विजयीआवै है वाहवा वाहवा आछो युद्ध हायगो ॥

( इति सिंहनादंकृत्वा उत्फुल्ल भुजमास्फोटयति )

( ततः सर्वतः सेनाप्रहरति )

घनध्वनिः सूतंप्रति । अरे याको पराक्रम देखै तो बारन उठाइ बारनन पैं डारि रथन सों रथन संहारि भटन गहि भटन को मारि इत उत दौरिदौरि सिर भुज तोरि तोरि करोरिन को निपात करि दियो हांकु तो याके सन्मुख मेरोरथ ॥ इति शरजालं मुंचति ॥

( चेतामल्लः बाणान्वंचयित्वा पर्वतैः प्रहरति )

घनध्वनिः । देखै तो सूत याके पवारे परबत आकाश अनवकाश करत प्रलय पयोदहो से पेखे परै हैं ॥

( इति शरैः पर्वतान्निवार्य्य आश्चर्य्य अस्त्राणिमुंचति )

चेतामल्लः स्वगतं । देखों तो याको पराक्रम कैसो है ॥

( इति निःचलस्सन्मुखं तिष्ठति )

घनध्वनिः । अरे सूत आश्चर्य है जे हमारे अस्त्र शस्त्र कालहू को बिथित करत रहे ते याके तन तनकऊ नहीं असर करै है अब देखैं अमोघ ब्रह्मास्त्र तें बांधौं हौं ॥

( इति आचम्य निःक्षिपति )

चेतामल्लः आत्मगतम् । अब मैं ब्रह्मास्त्र की मर्यादा राखि दिगशिर कों देखौं ॥

( इति ब्रह्मास्त्र बद्धः पृथिव्यां पतति )

राक्षसाः सहर्षं रज्जुभिर्बध्वा स घनध्वनयो निःक्रांताः ।

( ततः प्रविशति सपरिकरो दिक्शिराः )

दिक्शिरः । अरे द्वार में गलबल काहे को सुन्यो परै है ॥

प्रविश्य द्वारपालः । महाराज घनध्वनि वा बंदर कों बांधि लै आयो है ताको सब पुरवासी हराषत ह्वै मारिमारि तारी दै दै सोर करै हैं ॥

दिक्शिराः । अरे उन पै कहै जाइ मारैं मति वाको ह्याँई लै आवैं ॥ द्वारपालस्तथेतिनिःक्रांतः ।

(प्रविशति करगृहीत रज्जुबद्ध चेतामल्लो घनध्वनिः)

चेतामल्लः आत्मगतम् । अहो याके बदनन में महा प्रकाश है सूर्य्यशिष्य जो मैं ताहू के नैन निरखत में मूंदि आवै हैं ॥

नेपथ्ये छन्दनराच । कृशानु जाइ पाक भौनबेगि पाककों करैं ।

बहारि आउ वायु बाट फेरि मन्द संचरैं ॥

कलेस ल्याउ गंगपाथ दिग्गशीस न्हानकों ।

धनेश धाइ छोड़ल्याउ निद्दिनित्य दानकों ॥

चेतामल्लः श्रुत्वा सविस्मयं स्वगतम् । आश्चर्य है ऐसी आज्ञा ईश हू कौ नहीं सुनी ॥ दिक्शिरसोऽभिप्रायंज्ञात्वा ॥

मंत्री । रे बंदर कालरुद्र बिष्णु पठायो आयो होइ तो सांच कहि जाय तोको छोड़ि ताही को देखि लेइंगे ॥

चेतामल्लः दिक्शिर संप्रति । मोको तिहारे बंधु युगल ने पठायो है या कह्यो है हमको हित चाहै हैं जो कोई अनीति करै है ताको बिनाश बेगिही होइ है तुम हितकारी की नारी हरी है सो दै राखो तुम्हारे तौ वेद शास्त्र सब जाने है बहुत समुझन वारे सों बहुत कहे तें का है ॥

दिक्शिराः । हम तो हितकारी की नारि हरि लयाये हैं उन को यामें कहा परी है ॥

चेतामल्लः दोहा । विष्णु स्वयंभू शंभुहू तीनि तीनि तनधारि ।
जोरक्षहिं हितकारिरिपु सकै न मीचु नेवारि ॥

दिक्शिराः सक्रोधम् । कीश कटुभाषी को मारि नहीं डारत हौ सुनत कहा हौ ॥

भयानकः दिक्शिरसंप्रणम्य । महाराज दूत अवध्य है मेरे मन में एक मंत्र आछो आयो है सो सुनि लीजै ॥

दिक्शिराः । कहिजाइ ॥

भयानकः । बानर को लंगूर परम पियारो होइ है सो लाय छोड़ि दीजिये जो उनके पराक्रम होयगो तो याको हाल देखवेई आवैंगे तिनहीं पै प्रहार करेंगे ॥

दिक्शिराः । आछी कही ॥

पुनश्च राक्षसान्प्रति । भो राक्षसौ याको लैजाइ लंगूर पट लपटाइ आगि लगाइ बाजन बजवाइ राक्षसपुरी के चारों ओर फिराइ छोड़ि देउ ॥

राक्षसास्तथेति चेतामल्लं गृहीत्वा निःक्रांतः ॥

(नेपथ्ये महान कोलाहलः)

छंदनराच । अलातचक्रकं शभासबैअनाथसेजरैं ।
लचीमहासुवर्णभूप्रसादपर्णघिलैंढरैं ॥
त्रानकोविधाननाहिंप्रानत्रासुनिस्सरैं ।
भभांतभौनभांडभांडहायहायकाकरैं ॥ १ ॥

आकाशे । अरे अरे राक्षसपुरी की लपटैं तो स्वर्गहू लों आईं चलो चलो ब्रह्म लोक कों ॥

दिक्शिराः ससंभ्रमं । देखो तो देखोतो कहा होइ है ॥

द्वारपालः । महाराज वा बंदर ने ऐसी लंगूर पसारी की पुर भरे में पट घृत तेल न रह्यो जो लेस्यो सो छोटो होइ पास ते छूटि बड़ो शरीर धारि रक्षा करन बारे राक्षसन को संहारि पुर जारि डारयो ॥

दिक्शिराः ससंभ्रमं सर्वैसुखैः । अरे धावो धावो कुल सहित सकल दल पुष्पक चढ़ावो सागर पहुंचावो होहूं घटकान को उठाय आय पहुंचत हों ॥ इतिनिःक्रांताः सर्वे ॥

(ततः प्रविशति मच्छिजाराक्षस्य)

मच्छिजा। बड़ा कोलाहल सुनो परै है कहा है ॥

सुनेपैशाचीबोली में पद । जेवनलेघनलवेनबंधिय ।

सेदिगलजालियलंगूलेलरबुलूयंधलितुनंमुचिए ॥ इदोतदोधावन्ते

जालइपुलंलस्कसीचंपइलुंचइ ॥

ताहइमेहुंमहाकलकलेविस्सनाहपियतमेंसुनिज्जइ ॥

टीका। जेवन लेकहे जो बानर, घनलवेन कहे घननाद करिकै, बंधिये कहे बांधिगा, से कहे सो, दिगल कहे दिगभीस करिकै, जालिय लंगूलेकहेजराई गेलांगूलजिहि करि,लरबुलूयंधलितुनंमुचिएकहे लघु-रूप धारन करिकै छूट, इदोतदो धावंते कहे इहां उहां धावत, जालइ पुलं कहे पुरको जावत है,लस्कसीचंपइलुचइ कहे राक्षसिन को चावत है नोचत है,ताहइमें कहे तेकर, याहुं कहे निश्चय करिकै, महाकलकले कहे महा कलकल शब्द, विस्सना-हपियतमें, कहे हे विश्वनाथ पियतमें, सुमिज्जइ कहे सुनोपरत है ॥

(मच्छिजासशोकं)

दोहा। हायहायकरतारअब जोकछुकृतिहमारि।

तातेकपिकारोमिजपावकसकैनजारि ॥

प्रविश्यचेतामल्लःप्रणम्य । अम्ब वृतांत सब सुनिबोई कियो होइगो आप के प्रभाव ते पावकहू पायही सो लग्यो पयोधिमें पूंछि बुझाइ पद पंकज परसन आयो आज्ञा पाऊं तो हितकारी पास जाऊं ॥

मजिा सहर्षं। यहिचूड़ामति सहिदानी लेउ, तिहारो मारग सिद्धि होइ ॥ चेतामल्लः प्रणम्य निःक्रांतः।

मच्छिजाराक्षसींप्रति। यहां राक्षस पुरी के खास ते कछु देख्यो नहीं परै है चलो तड़ाग में चलि विश्राम करें ॥

इतिनिः क्रांता: । (ततः प्रविशति ससैन्यो भुजभूषणः)

भुजभूषणः चिरंजीवी कच्छराजंप्रति । चेतामल्ल को बिलंब बड़ो भई धों कहा भयो होइ ॥

कच्छराजः । सगुन बड़े बड़े होय हैं चाहिये चेता मल्ल खबरि लिये

कुशल आवते होंय देखो देखो या दक्षिण ओर तें आंधी आवै है औ किलकिला शब्द सुनो परै है ॥

( ततः प्रविशति चेतामल्लः )

भुजभूषणः सहर्षं मुत्थाय लांगूलं चुमित्वा। अरे चेतामल्ल तो आयही गये ॥

सभुजभूषणाःसर्वैःबानराः सहर्षं चेतामल्लमालिङ्गति।

चेतामल्लः सर्वं यथेचितं मिलित्वा सर्व वृत्तांतं कथयति।

भुजभूषणः। जो खबरि पाय बिन बिन लिये गये तो सब की शरता की ओर होइगयी याते चलो दिक्शिर को मारि महिजा को लिये चलिये ॥

विभराजः। तुम बासवि के तो पुत्र हो काहेनकहौ यैहितकारीकी आज्ञा खबरि ही लेन को रही है ताते चलो सो सुनाय फिरि उनहीं के साथ आय पराक्रम करियो ॥

भुजभूषणः। बहुत भली ॥ इति सर्वे निष्क्रान्ताः।

( ततःप्रविशति स सुगल डीलधराधरो हितकारी )

सुगलः। चेतामल्ल अकेले राक्षस पुरी को गयो वहां शत्रु बड़े बरिबण्ड है धौं कहा भयो होय ॥

डीलधराधरः। प्रभु प्रताप ते सब आछो होइगो ॥

प्रविश्यदधिवदनः। भो महाराज तिहारो रखायो रह्यो जो माक्षिक कानन ताके फल भुजभूषन सब बानरन को खवाइ दये औ तोरि तोरि महि डारन लगे तब मैं चलि अधिक रोक्यो मो मधुमत मो-को प्रहार कीन्हो भाजि आइ आप को जनायो ॥

सुगलः सहर्षं। महाराज महिजा की खबरि आई जो खबरि न लैआवते तो माक्षिक बन के फल न खाते ॥

( प्रविश्य सर्वेबानराः प्रणमति )

( भुजभूषणः सर्वंवृत्तांतं कथयति। )

हितकारीसहर्षं। चेतामल्ल महिजा को वृत्तांत आपनेमुखतुमहू कहिजाउ ॥

पद। चेतमल्लपरमहितकीनो। टेक।

दुस्तरउदधिउल्लंघित्यायसुधि सोकसमुद्रसुतरैकरिदीनो ॥
ताहिदेवैलायकत्रिभुवनमें फेरतहोतिमेरिमतिहीनो ।
विश्वनाथसमहिंहमा हंप्रिय सदहिरहहिममरसमतिभीनो ॥

चेतामल्ल: । जलधितौ आपकी कृपा जहांजहीं पार कीनो औ राक्षस पुरी तौ महिजा की महा शोकाग्निहीं ते जरिगई महाराज मैं कहाकरन लायक हुतो ॥

हितकारीसवाष्यावरुद्धकंठम् । महिजा शरीर रहन को कारण कहि जाउ ॥

चेतामल्ल: । महाराज दिगभिर पुरमें काल की गति नहीं है महिजाऊ यह चूड़ामनि सहिजानी दई है औ कही है कि इन्द्र सूनु काक की बेरि जो कृपा मेरे पर करी सो कहां गई ॥

गृहीत्वा हितकारी । यह चूड़ामनि देखे मोकों महाराज दिग कान औशील कतु की सुधि आइ गई ॥

इत्यधरस्फुरणं नाटयत्वा धैर्य्यमभिनीय । रिपुको रूप पराक्रम कहि जाउ ॥

चेतामल्ल: कवित्त । लागेहैंअकासदशशीसशैलश्रृंगऐसे बीसभुजबिपुल अहीशसमभायेहैं । विष्णुचक्रबज्रवासौवारनकेदन्तनके दीरघहिं मे- कनेघ यठविछायेहैं ॥ यकबलवानऔसुजानबेदशास्त्रन में सारअस्त्र सस्त्रजाको शिवहीपढ़ायेहैं । लोकनकेनायककेलायकरहोतोवाही पापीजानिअजइन्द्रआदिकबनायेहैं ॥

सुगल: । महाराज अब धीर्य को अवस है मुहूर्त करिये चलिये

हितकारी विचार्य । विजय मुहूर्त अबहीं है ॥

( इति चेतामल्ल मारुह्य डोलधराधर: भुजङ्गषणमारुह्य सर्व व्यूह बध्वा परिक्रांति ।

आकाशे गद्य । सुगल बल अति अबिरल दल भूरिभार छिति तल हहलत हहलत पल पल शैल उसलत जलधिजल खल भलत बेल थलतजत कहलि कहलि कोलकच्छ कलम लात अकुलात चटपटात गात पिसे से जात दरित रदन दरद दिगदुरदन चीतकार अपार धूरिधार धुंधकार दिन भरतार नाल खाटत अरमित उड़ात

प्लवंगनपानि लांगूल लीला उन्मूलित उच्छालित शृंग समूल वृक्ष वृन्द इन्द्र पेखो पेखो रिपु पर प्रभु पयान कीन करि सुरन मुरन आनंद देन चाहत हैं ॥

सुगल: । प्रभु पेखिये तीर तरुन तरुन तरुन तति सरित पतिको जवनिकासी शोभित होइ है ॥

हितकारी । राक्षस पुरी समीप है यातें सावधान डेरा करो ॥

आकाशेपद । सबलोकसरन्यहितकारी । टेक ।
अतिदयाल समरथसवभांतिन शरनशरन मैंशरन तिहारी ॥
बंधुबिचारिदेनहितमहिजा दिगशिरकोंहठिमंत्रहिदीनो ।
कोपिलातमारयोमोहिंमैतबचलिविश्वनाथचरणचितकीनो ॥

पर्वतानुत्पाट्यप्रहर्तुं सन्नद्धान्वानरान्दृष्ट्वा हितकारीङ्कारेण वारयति (सर्वे वानरास्तथैवतिष्ठति)

समंचीसुगल: । महाराज राक्षस बड़े छली होइहैं आइभेदकरिवेई प्रहार करेंगे ॥

चेतामल्ल: । महाराज तेरोमत तो ऐसो है जो कपट कलित होय है सो ऐसी सरल बाणी नहीं कहै है ॥

हितकारी पद । शरनागतपालकममबानो । टेक ।
मित्रभावकरिकोउआवै तजहुंनकबहूं असतुमजानो ॥
नखतेंकाटिसकौंखलदलसब राक्षसकाकरिसकतहमारो ।
विश्वनाथजोहोइदिगशिरहू तऊलयावोकछुनबिचारो १ ॥

सुगल: । महाराज जो बाणी मैंकही सो आपकी शरणागत बानिप्रकट करन के हेत अबयाको मेरो समकरि दीजिये इति न:क्रांत: ।

(प्रविश्यसुगलोभयानक:चत्वारो संचिवाश्चप्रणमति)

भयानक: हितकारी पादयो: पतित्वा । हेसर्व भूत के शरण्य पाहि पाहि शरण शरण ॥

हितकारीउत्थाप्य । तुम तो हमारे त्व बंधु समहौ हम तुम को अभयदई सुगल जलनिधि जल ल्यावो इनको राक्षसपुरीको तिलक याही चणकरौं ॥ सुगलस्तथाकरोति ॥

हितकारीअभिषिच्य । पारावार पारजानको विचार करि ॥

भयानकः । आप के भरे सेतु करन शोषण समर्थ हैं पै आप के पुरषन को बनायो है यातें विनय करि मानराखिये वाही सों यतन पूंछिये ॥ हितकारी तथाकारोति ॥

डौंलधराधरः । तीन दिन आप कों विनय करत भये यह आपनी जड़ताइही जाहिर करै है ॥

हितकारीधनुर्गृहीत्वा । जोनहीं प्रकट होइ है तो या शरतें शोषे लेउंहीं ॥ नेपथ्ये पाहि पाहीत महान् शब्दः ॥

( ततः प्रविशतिसाभार्यःसागरः )

सागरःसभयं । महाराज मोकों आपही जड़ बनायो है मेरोकहाचूक है आपके सैन्यमें बिश्वकर्मा को सुत है तासों सेतुबंधाइ लीजिये मैं धारण करोंगो ॥ इति निःक्रांतः ॥

सुगलः । हे वैश्वकर्म चलो वेगि सेतुबिरचो हम सब शैल लै आवै हैं इति सर्वे बानराःनिःक्रांताः ।

आकाशे । छप्पै ॥ बृन्दबृन्दकपिइन्द्रलियेअनिलहिइवआवत ।
शैलसमूहहुलसितगगनभूतलसमभावत ॥
पटतजलधिखलभलहलनअंचिपतिनिकेत है ।
अमितअंबुउच्छलतछहरिछितिछायलेत है ॥
तर्जितजिदहार द्रुतमीनगन भभरिभभरि भागतअहैं ॥
असकौतुकभारीदीखनहिं जसहितकारीकरतहैं ॥

प्रविश्यसुगलः । महाराज सेतुतयार है ॥

(हितकारीवालुकामयंशिवलिंगंस्थापयित्वा )

सहर्षं । चलो पारावार पारको ॥

इतिनिःक्रांताःसर्वेपंचमोंकः ॥ ५ ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज बांधवेश श्री महाराज विश्वनाथ सिंह जू देवकृत आनन्दरघुनन्दन नाम नाटके पंचमोंकः ॥

# अथ षष्टमोङ्क प्रारम्भ: ॥

( तत: प्रविशति सपरि करो दिक् शिरा: )

दिक्शिरा: विहस्य । सुनियतु है बानर बहुत समिटे हैं औ साग- र तजि मेसा रन करन बिचार करै हैं सा कौन आश्चर्य है पतंग प्रदीप में जरन कहा नहीं आवैं हैं कीर दूत तें जाइ खबरि लै आवै ॥

कीर: । महा राज बहुत भली ॥ इति नि:क्रांत: ।

( नेपथ्ये महाकलकल: )

दिक्शिरा: संचिपंयति । सार बड़ो सुनो परै है कहा वानर उ- तरि आये ॥

प्रविश्य कीर: । महाराज बानरी सैन सेतु करि उतरी आवै है ॥

दिक्शिरा: सत्वरं । चलो तो ऊंचे चढ़ि देखैं ॥

( इतिपरिक्रामति )

कीर: । महा राज यह देखिये दूजो उदधि ऐसो कपि दल देखो परै है ॥

दिक्शिरा: । संख्या तो कहु ॥

कीर: । छंदतरंगिनी ॥ राकसपुरीचहुबोर । कपिमारिहिंनहिंसठोर ॥ चाकलेकोसचालीस । मतचारिलामनतीस ॥ कपिबाधिसंघसमेत । कोउतकेउत्तरननेत ॥ आकाशहूदशकोस । कपिभीरभरी सरोस ॥

दोहा । भूपभूपय हिसैनकेर विलजातिनहार । शेषनसंख्याकरिसकैगननैनोबर्षहजार ॥

दिक्शिरा: । अरे याता बड़ो कौतुक लख्यो ॥

कीर: । महाराज पहिले हितकारी के उतरत बड़ो कौतुक भयो ॥

गद्य । आहव आल्हाद बदन विलसत बिलसत एक एक के आगे बिहसि बहुत हंसि बहुत बिनोद किल किला कोला हल करत कर तरु गिरि गहेन चढ़त गिरि परतगिरिपरत जलधि जलहलहलत हलहल तहां

को शब्द दिशन भरत भरत खंड मों कछु सुनि न परत भयो ॥

छंद । बिबिधिजातितरुफलभोजनहितउसलतसबजलजीवभये । हित कारीसरूपताकिछकिछकिहू जड़इवतहंसकलगये ॥ तिनचढ़िचढ़िबहु क पदलउतरघोनोकौतुकप्रभुकहंलोकहों । सुमिरिसुमिरिवहअघटित घटनाअबहूंलोंमैंठगिसोरहों ॥

दिक्शिरा: । अरे लखाउ हितकारी कौन है ॥

कीर: । महाराज जाकी काय में कोटि मरकत मनि कांति पेखी परे है सोई त्रिभुवन में एक धनु धारी हितकारी है ॥

दिक्शिरा: सक्रोधं । अरे मो को डरवावै है भागु दुष्ट ह्यांते ॥

( कीर:सत्वरं सभयं नि:क्रांत: )

दिक्शिरा: आत्मगतं । अब नृत्य निरखन को समै है ॥

इति नि:क्रांत: ( तत:प्रविशतिसखैन्योर्हितकारी )

हितकारी । सुगल संध्या भई यह सुबेल पैं डेरा करिये भोर देखिंइगे ॥

नृत्य पविशंति । (सेनना: )

पद । लेहुसकलकपलाचनकोफल आछुसुछबिअतिभारी । कौसनाहके गोदशोस धरि पौढ़ेहैं हितकारी ॥ भुजभूषनअनिलजपददाबत दहिने डोलधराधर । बिश्वनाथबांएकछुभाषत मंत्रभयानकजयकर ॥ १ ॥

हितकारी चंद्रमवलोक्य । याके मध्य श्यामता नहीं है हौंया अनुमान करो हों पूबहीं श्यामा सर्बरी बियोगते पंचबान के बान याहू को हियो फोरि गये हैं तिनके छिद्र हैं ॥

( डोलधराधर: )

पद । य कोंकरिनिपरसिकोउबिरहीकेरअनलजगायो ।
किरनहिंकिरनघाइआगोयहि टरकोइलोबनायो ॥

सुगल: । ऊपरस्वच्छमलिनताभीतर मोइदरशातहियेहै ॥

चतामल्ल: । विश्वनाथप्रभुदुखहिदुखितयोबिहालाहलछिपिये है ॥

( नेपथ्ये ध्वनि: )

हितकारी । हेभयानक दक्षिणाबोर कहा मंद मंद मेघगरजैहै ॥

भयानकः । महाराज मेघ नहीं है दिक्शिर नाच हाबे है तहां की मृदंगध्वनि है ॥

( हितकारी चतुरारोप्य मरंनिष्क्रमति )

सुगलः । प्रभु प्राची दिशि तिमिरारि कैसे उदित होत आवे हैं जैसे अज्ञान को नाश करत साधक के हृदय में ज्ञान ॥

हितकारी । व्यूह बांधि चलो ॥ इति सर्वे निःक्रांताः ।

( ततः प्रविशति सपरिकरो दिक्शिराः )

दिक्शिराः संचिंत्यप्रति । अरे बड़ो आश्चर्य है मेरो छत्र चमर सब संगीत के आभरन राति नट सार में आकस्मात् ई कटि गिरिपरे

सशंकमंत्री । महाराज या कछू अशगुन सो सूचित होइ है कपि दलो सुवेल उतरि आयो ॥

दिक्शिराः विहस्य । अरे तिर्यगयोनि में मरकट महा पशु होइ है आपनो मरिबोऊ जाने हैं पै मूठी ते मटरो नहीं छोड़े हैं फंदि जाइ हैं ॥

प्रविश्यचारः। महाराज राक्षस पुरी चारौ वोर ते घेर गई या कोशन को शब्द आपहू सुनत होंइगे जेहिते सपरबत पारावार धरा डोले है

दिक्शिराः । यह सैन शब्द सुनि मोको कैसे सुख होइ है जैसे नवीन नायका की नूपुर ध्वनिसुनि ॥

नेपथ्ये । हाय हाय अबधौं कहा है एक कीश पुनि पुर पैठि आयो ॥

प्रविश्यद्वारपालः । महाराज द्वार पैं एक बंदर खड़ो है कहै है मैं सुगल को पठायो आयो हौं ॥

दिक्शिराः नेत्रसंज्ञया तमाकारयति ।

( द्वारपालो निःक्रांतः )

ततःप्रविशतिभुजभूषणः । ( भुजभूषणः इतस्ततोविलोक्य )

छंद । तिय चोर कहां है ॥

दिक्शिराः । भुजआंखिनहीं है ॥

भुजभूषणः । निरलज्जतहीं है ॥

दिक्शिरः कटुभाषनहीं है ॥

भुजभूषण: । हौंतो यथार्थई कह्यो है पै प्रियहू सुनै प्रभु भयानकको राक्षस पुरेश कियो सो कलंक तें डेराय प्रभु मो विनय करि अबहूं दूत पठाये जो बिरोध छांड़ि महिजा को देखै तौ राक्षसेश बहो बनो रहै सो सुनि प्रभु की सुख पाय सुगल कहा या कहन मोहिं पठायो है की तुम हमारे बंधु को मित्र हो यातें सीख दीजियतु है दशन तृन गहि प्रभु शरन आवो नातो तुम्हारे नामने प्रभु शर सप्तमी बहुब्रीहि समास करैगे ॥

दिक्शिरा: छंद । असमोनींकोऊकह्योनिकबहूंजैसीसीखसुनावै ।
अहोमहाअचरजडेरवावैबैनरबंदरजगरावै ॥
काकोसुततैंकहैबेगिहींयाकहिकहापरीहै ।
भूखोहोइमंगाइदेउंफलदेननरनारिहरीहै ॥ १ ॥

भुजभूषण: छंद तोमर।

कियमीतदैजगजोति । तेहितनयमैंप्रियरीति ॥
दिक्शिरा: । कहु कहु कुशल मम अंग ॥
भुजभूषण: ॥ भोवानवन्हि पतंग ॥
दिक्शिरा: । कहु कौन मारन हार ॥
भुजभूषण: । किय राम भहि जेहि छार ॥
दिक्शिरा: । पितु बैर तैं नहिं लीन ॥
भुजभूषण: । प्रभु दीन तेहि फल कौन ॥
दिक्शिरा: । धिक धिक अरे बाप के वैरी प्रभु कहै है ॥
भुजभूषण: छंद । सुनु शठ सबके प्रभु हितकारी । शंभु धनुष जिन भंग किओ ॥
दिक्शिरा: । रेमतिमंद हरहु युत हरगिरि मैंकरिनिज करकौंज लियो ॥
भुजभूषण: । जोतोहि बांधिजानि दुज छोंड्यो तेहिनृप बिनजिय करि जोदियो । तेहिमुनि मदमोरन हितकारी बीसनयन सूझत न हियो ॥

( दिक्शिरा: सक्रोधं )

दोहा । दिगशिर जैहै समर महि तब ह्वै है बल ख्यात ॥
भुजभूषण: । छठैं बरन दै अरध विधु ऊतरू गनु निजवात ॥ १ ॥
दिक्शिरा: साट्टहासं । अरे मरकट भटाई करै है जान्यो जान्यो

तेरे बाप को मारडारनो है याते तेरे जाम घेई बलवान है ॥

छंदनराच । कराल काल दंडविष्णु चक्रधार वक्र ह्वै ।
लई बिचारि कायकी कठोर तामोअंग छ्वै ॥
सुंरघ मेइ बंदि मोर ओर खूब जान तो ।
अयानतैं प्रशंसि राजपुत्र मोन मानतो ॥

( भुजभूषणः सक्रोधं )

दोहा । हितकारी सों रननहीं परो न कहुं खलराय ।
नीतिबिचारैंसुरअसुरबैठेऋयनब ताय ॥

दिक्शिराः छंद । परबलबलबानै । ममभनितनमानै ॥

भुजभूषणः सक्रोधम् । यहहैपरमानै । अबहींखलजानै ॥

सवैया । अपनोपगमैंमहिरोपतहौं सबभट्टतिलौभरटारहिंजो ।
तइ जोआकहौंहमसत्यगनैं अवलौतिनकोगनुहारहिंजो ॥

दिक्शिराः भटान् प्रति । तुमबैठे कहाकरौबीरसबै यह बंदरठाढो प्रचारहिजो । दिगनायकआजुहिमैंकरिहौंयहिकोगहिपायपछारहिजो ॥

भुजभूषणः आत्मगतं । सकहीं बार ये हजारन सुभट मेरो पग एठावै हैं पै तिलो भरि नहीं डोलै सो हितकारी की कृपा है ॥

( दिक्शिराः सक्रोधं सिंहासनादुत्थाय )

रेरेकीशहौं पाइ गहि सागर में फेंकौंहौं अब बल करि रोप आपनो पग ॥

भुजभूषणः । अरे मेरे पाइ गहे कहा है हितकारी के पाइ गहे जातें बिनाश न होइ ॥

( दिक्शिराः सलज्जंसिंहासने उपविश्यसक्रोधम् )

दिक्शिराः बांधो बांधो कीश कटुभाषी जान न पावै ॥

भुजभूषणः । अरे शठ सीख नहीं मानै है अब हितकारी के भूखे बान तेरे कंठ श्रोणित पान करि अघाइंगे ॥

( इतिप्रागत्य छलबलअनुरोराक्षसान्हत्वा निःक्रांतः )

दिक्शिराः । ये बानर बहुत ढीठ होय गये चलो अब इनके शिकार खेलन की तदबीर करैं ॥ इतिसपरिकरोनिःक्रांतः ॥

( ततः प्रविशति हितकारीसैन्यञ्च )

हितकारीभवानकंप्रति । अब कहा कियो चाहिये ॥

भयानकः । हां ऐसो खबरि पाई है की दिगशिर अपने सेनानी कों पूर्व द्वार में टिकायो है तहां श्याम सेनानी को पठाइये दक्षिण द्वार में कुलिशरद कों राख्यो है तहां भुज भूषण को पठाइये, पश्चिम द्वार में कुनयन कों राख्यो है तिनकी सहाय में घनध्वनि कों टिकायो है तहां चेतामल्लकों पठाइये उत्तर द्वार में दिक्शिर आपई है यातें हम सुगल आप ह्यांई टिके रहैं ॥

(हितकारी नेत्रसंज्ञया ज्ञापयति प्रणम्यते निःक्रांताः)

नेपथ्ये । अरे एक कपि प्रबल आइ लूम पुर लाय लाय कीन बिकल भल अब कपिन दल कोलाहल हहल हहल हालत महल हाय हाय कहा होय ॥

पुनर्नेपथ्ये । पाइ रुख दशगल चढ़ि चढ़ि बहल जहल पहल तन अति बल राक्षस नदल कढ़त धूरि धुंधकार मार्तण्ड मढ़त बाजिन बढ़त देखो कैसो युद्ध होइ है ॥

प्रविश्यचयोबानरा: । महाराज कुनयन औ अचल कों चेता मल्ल कुलिशरद कों भुजभूषण औ दिगशिर के सेनानी कों आपको सेनानी संयमनीपुरी निवासी करि दियो ॥

सुगलः सहर्षं । कहि दीजियो जो निकसै ताकों याही भांति मारिडारैंगे ॥

(नेपथ्ये महाहलहला शब्दः)

(ततः प्रविशंति श्याम भुजभूषणचेतामल्लः)

सुगलः । कौन कारण तुम आये ॥

त्रयोभटाः । उत्तर द्वार ह्वै दिगशिर कढ़ै है यातें अपने अपने द्वार में भारी सेना टिकाय हम आये हैं ॥

(ततःप्रविशतिदिक्शिराः सैन्यञ्च)

हितकारी । हे भयानक यह दल के महा भटन को चिन्हावो ॥

भयानकः छंद । रसवीरमोमुखलाल । करिकंधपरसमकाल ॥

घनसजलसरसशरीर । दूजोअचलयहवीर ॥

प्रलयागिसमजेहिदेह । मातंगजेहिसमनेह ॥

बलअहैसमपुरहूत । नकाचरासभपूत ॥

अरशूलकरसुरशूल । सुरकालनामअशूल ॥
जोचढ़ोबारनबीर । अतिउदरयहरणधीर ॥
करशूल वृषअसवार। त्रयमुण्डदिग्शिरबार ॥
अहिलिखोध्धुजबलवान । बड़अभैसुतघटकान ॥
करशक्तिहयसमनद्ध । यहमानवांतकभट्ट ॥
करपरिघबलसमशुंभ । हैनिघटसुतश्रुतिकुंभ ॥
गिरितीनसमहिशरीर । अतिबलधरेधनुतीर ॥
बाढ़तरहतसबयाम । अतिडीलयाकोनाम ॥
केहरीअंकपताक । याकीचहूंकितसाक ॥
जेहिजोरजगतसभीत । घनध्वनिअहैसुरजीत ॥
नभलगेजेहिदशमाथ । धनुबानबीसहुहाथ ॥
बहुभूतरयचहुंओर । हैयहैदिगशिरघोर ॥

हितकारी सत्यरतन् । याको जैसो सुनत रहे तैसोई है सहस्र सहस्र कर सम प्रकाश सों याके आनन नोकी भांति निहारे नहीं जाइ है जैसो यह निशिचर परिवार पालन हार बल पारावार है ऐसो दूजो संसार में बिचार में नहीं आवे है अधरम अगार जो न होतो तो याको संहार करन हार कौन हुतो ॥

दोहा । बहुतकियेश्रमडीठिपथ परनोआजुदिगशीश ।
बीसबिसेमुददेतमोहि धरिधनुशरभुजबीश ॥

दिगशिराः । अरे महा सुभटो सुनो जानि जो बानर किलामें पैठि जाई तो न बनै यातें तुम सबलौटि जाव मैं अकेलहीं मारि लेउंगो ॥

सर्वे तथेति निःक्रान्ताः

( दिक्शिराः सक्रोधं धावति )

सुगलःस्वगतं । पद । आजुबखतरप्रभुफूलेनसमातुहैं । देखिदेखि दिगशिरफेरतस्वकरशरधनुषकणाइबारबारमुसुक्यातहैं ॥ रोमरोममेंद छायेदेवनकोभलभाये छनछनसुछबिलटनअधिकातहैं । बिश्वनाथ मनयहिओसरमेंदेखौपरैआपैआसुखलसोंलराईलेनजातहैं ॥
सोअबहमहींआगेहोंय ॥

( इतिगिरि तरुकर सैन्यसहितो धावति )

**हितकारी।** डीलधराधर देखो बानरन के चलाये गिरितरु समूहनतें दिगभिर कैसो मंदिगयो जैसे बर्षा कालके मेघन तें महा महीधर। फिरि बानन तें गिरितरु काटिकैसे निकसि आयो जैसे सूर्य नीहारतें॥

**डीलधराधर:।** देखिये महाराज सुगल कों तो एकहीं बान तें मूर्छित करि दियो आज्ञा होइ तो मैं जाउं॥

**हितकारी।** यह त्रैलोक्य विजयी है सावधान युद्ध करियो॥

**भयानक: श्यामंप्रति।** श्याम जोको डीलधराधर प्रभु को प्रदक्षिणा दे प्रणाम करि चलों चहैं तोलौं चेतामल्ल दिगभिर के शर बचाइ देखो नियरेहीं खड़ो भयो जाइ॥

**चेतामल्ल:।** तोको बड़ो बलवान सुन्यो है सो मेरे उरमें एक मुठका लगाउ तो मैं देखौं केतो बल है॥

**दिक्भिरा:** पवन को बल तो मेरा तोलो है तोहू को बलवान सुनो है यातें तैंहीं मेरे उर में मुठका लगाइ ले फेरितो प्रेतपति पासहीं पहुंचैगा॥

**चेतामल्ल:।** अरे नयनकुमार को खबरि करै॥

**दिक्भिरा:।** सक्रोधं मुष्टिकांप्रहरति चेतामल्ल: घूर्णतन्नाटयति॥

(पुन:धर्य्यमास्थाय तलप्रहारंकरोति)

**दिकभिरा: सकंपम्।** श्याबास बीर श्याबास आछो बल है तेरो॥

**चेतामल्ल:।** धिक्कार मोकों है जोतूं मेरे मूठका तें न नि:प्राण भयो अब तूं प्रहार करि ले फेरि जो बचैगा तो सराहिलेइगो॥

**दिक्भिरा: सक्रोधं सबीम मुष्टिकाभ: प्रहरति।**

( चेतामल्ल:मूर्छांनाटयति )

**दिक्भिरा:।** सूत मेरो रथ सेनानी हंताके सनमुख करै॥

( इतिश्यामं बाणैराछदयति )

**हितकारी। पद॥** तबकहुभयानककंपितनभूधर।
बानबचाइघातकरिघूमत कहुंधुजकहुंभुजकहुंशिरऊपर॥
बीसहुभुजसींगहननपावत सोनितमयतनकियोकीभर।
कपिकल्यानबिभुनाथहोइअब रोषितखलअनलास्वलि‌योकर॥

दिक्शिरा: । श्यामू भजिभजि बच्यो है जो या बान ते बाचै तौ तोको बीर कहौ ॥

( इतिशरं निक्षिपति श्यामःमूर्छांनाटयति )

ततो वलोक्य डीलधराधर: धावति

दिक्शिरा: बाणधारामुंचति ॥

आकाशे । गद्य ॥ दोनो बरिवंड दोर दंड धरि कोदंड करि मंडलाकार परम प्रचंड कालदंड सम बानन सों मारतंड मंडल मढ़िमही नवखण्ड पूरत हैं देखेदेखो डीलधराधर तो या शर सों दिगशिर को मूर्छित करिदियो ॥

( दिक्शिरा: उत्थाय शक्ति मातोल्य सातिक्रोधं )

डीलधराधर । सावधानहोउ यह ब्रह्मदत्तशक्तिसों तुमको धराडीलधर करत हौं ॥ इतिमुंचति ।

आकाशे । आश्चर्य है आश्चर्य है यह परम अमोघ महा ज्वलत शक्ति चेता मल्ल बीचही में गहि समुद्र में डारि दियो । नारद मेरी दई शक्ति निःफल देखि क्रुद्ध दिक्शिर मरही पर न धावै यातें तुम जाइ चेतामल्ल को भोलाइ रणबाहिर ल्याइ बातन लगाइ राखो मैं सूक्षम रूप बनाइ दिगशिर पास जाइ उत्साह बढ़ाइ फेरि शक्ति चलवाइ देउंगो ॥

बहुतभली । दिक्शिरा: सोत्साहंशक्तिंमुंचति ॥

( डीलधराधर: मूर्छांनाटयति )

( दिक्शिरा: रथादुत्तीर्य डीलधराधर मुत्थायति )

सूत:स्वगतं । अरे जौन कैलाश उठायो ताको उठायो नरनुनु नहीं उठै अहो महा आश्चर्य है ॥

चेतामल्ल आगत्य । अरे जौलौं मैं मुनि सों बात करौं तौ लौं बड़ो अनर्थ होइ गयो ॥

( इति सातिक्रोधंमुष्टिकयादिक्शिरसोवक्षसि प्रहरति )

सूत:आत्मगतं । छंदनराच । प्रहारवज्रवत्तकीत्वचानलोहितोभई । सोएकमुष्टिकेलगेगिरयोरथैविसंज्ञई ॥ अहोमहाअचर्ज्जदिग्गशीसतोलिहारिगो । उठाइताहिनाथपाशकीशकांखधारिगो ॥

दिक्शिराः उत्थाय। हांकु हांकु मेरो रथ निर्वानरी उर्वी करि देउं॥
चेतामल्लः। महाराज जैसे विष्णु गरुड़ की पीठ चढ़ि दैत्यन को संहार करै हैं तैसे मेरी पीठि चढ़ि आप खल को संहार करिये॥
(हितकारी तथाकृत्वा धावति)
भयानकः सुगलंप्रति। अरे चेतामल्ल तो दिक्शिरके समीपहींपहुंचगो॥
सुगलः। देखोदेखो हितकारी को हस्तलाघवी आश्चर्य है आश्चर्य है॥
पद। छनमेंदिगशिरकेधनुधररथ हयसारथिधुजबखतर।
छत्रचमरसबमुकुटकाटिदिय बतसरम.रडरपर॥
अवखलविकलसुनेकचढाढ़ो जिमिपविहतपरगिरिवर।
विश्वनाथजेजैहितकारी विलसतरनधरिधनुधर॥
हितकारी। आछो पुरषारथ कियो अब जाउ सैन साजि फेरि आइयो॥
दिगशिराः सलज्जं निक्रांतः।
(हितकारीडीलधराधरस्तुत्य।प्यालिंग्य वाच्यावरुद्धकंठं)
पद। रहेहुहमारेप्रानहिभाई। टेक।
तुअयहदशाजियतमैंकाहि यहअचरजअधिकाई॥
देहौंकहाजननिकोउतर जबपुछिहैअकुलाई।
विश्वनाथहहहहजगकारी विनकोहोइसहाई॥
चेतामल्लः सगर्वम् पद। नाथनेकुजोआसनपाऊं।
नागसुरनरजीतिअमृतलै डीलधराधरज्याऊं॥
मृत्युपामकोनोरितुरतसब जगतैअभैबनाऊं।
होइजोबंधुकालउदरहुतो फारिकाढ़िलैआऊं॥
दिगशिरसोखलनोरितोरिगृहि हारहरहिपहिराऊं।
राक्षसपुरीमिपरिजनरजकरि वारिधवीचवहाऊं॥
छलकरिविधदीनोमोहिंधोखो तिनहुंकहंसमझाऊं।
विश्वनाथपदसपथकोरिफल समत्रलोंडाढ़िखाऊं॥
हितकारी। ये पराक्रमनते तो विश्व को अपकारई है॥
वैद्यकपिः। महाराज देवासुर संग्राम में वृहस्पति द्रोनाचल ते औषधी ल्यायदेवन जिवावत रहे हैं सो चौंसठि हजार योजन पर है जो रात्रि भरे में औषधी आवै तो डीलधराधर जीवै॥

चेतामल्लः । महाराज मोकों आज्ञा दीजिये जौलौं तेज तै लागि मैं सरिसो फूटै है तौलों लय ऊंगो ॥

हितकारी । जाव अपराजिताहू की खबरि लेत आइयो ॥

( चेतामल्ल स्वयंति निःक्रांतः )

हितकारी । देरबड़ीभई चेतामल्ल न आयो कछू कारण है ॥

( ततःप्रविशतिचेतामल्लः )

वैद्य कपिः । प्रभो यह तो शैलही लै आयो औषधि पौन परसि सकल कपि दल जियो डीलधराधर औषधि सुंघाये जिये अहो महाअमोघा शक्ति हुती ॥

डीलधराधरः । कहां कहां दिगम्बिर रण प्रचारि मारों ॥

हितकारीगाढ़मालिंगति । डीलधराधरः पादयो पतति ॥

( हितकारीसखेहंचेतामल्लमालिंग्य )

पद । तुममममबंधुप्राणकेदाता । टेक ।

कहादेउंतोहिजगमेविरच्यो यहउपकारअमोलबिधाता ॥

चेतामल्लः । जोमोपरप्रभुकृपाभांतियहि दुर्लभकहामोहिंसुखबाता । बिश्वनाथऐहिचहहुदेहुयचे होतुमहौंत्रिभुवनकेत्राता ॥

हितकारी । चेतामल्ल विलंब तुमको काहेते लगी ॥

चेतामल्लः । इहां ते जाइ अचल उटाइ आवत आड़िवे आये अमरन सों समर जय पाय अपराजिता ऊपर आयो तहाँ हहहह जगकारी होम करत हुते तिन कोनो विघ्न मानि बाण मारयो मैं हा हितकारी कहि महि परयो तब धाइ पास आइ अति पछिताइ बहुत विलाप करनलगे तब जोनिज आइयाही अद्रितें औषधी लै जिआय दियो तब मैं इहां की खबरि सुनाइ या कह्यो बान लगे मोमे पराक्रम तैसोनहीं है तब उनकह्यो मेरे बानमें चढ़ि छनहींमें जाय तब मैं बड़ो रूपधरि शैल समेत चढ़यो जबउन श्रवण लगि खैंचयो तब मैं उतरि गर्व त्यागि विनयकरी आप हितकारी के तो भाई हैं या कौन बड़ो आश्चर्य है अबमैं आपकी कृपैसों छन में पहुंचोंगो याकहि सबको कुशल लहि प्रभु पद पदुम परस्यो आया ॥

(बानरा:नपथ्यमवलोक्यकोलाहलंकुर्वन्तोइतस्ततःपलायन्ते)

**भयानक:** । अरे भगो भति दिर्गाशिर यह बिभीका खड़ी करी है ॥

**हितकारी** । श्याम जाय दल को स्थापन करे ॥

भयानकोंमति ।

**दो०** । लगेबलाहककोसमढ़िट कहुतकाहुनीसोभ ।
कहहुभयानककौनयह करतकपिनदलक्षोभ ॥

**भयानक:** । यह दिर्गशिर ते छोटो मेरो बेटो भाई घटकान है आप के बाणतें पीड़ित डेराय दिर्गशिर याको बड़े यत्नतें जगायो है सो यह ताके पास जाइ है ॥

**हितकारी** । याको पराक्रमहू तो अपूर्बई होइगो ॥

**भयानक:** । छंद ॥ नन्दनवनअपसरनखाइ लियआसव गजचढ़िधाये ।
यहिंऐरावतरदैखैंचि उर हन्योगुरहि महिआये ॥
जगिभगिबिथितबिनयकियबिधिसोतिनहमतिहुंनबोलाये ।
विश्वनाथ दिय शाप याहि यह जगहि न बिना जगाये ॥
फिर दिग शर के अस्तुति किये या कह्यो बर्ष में द्वै रोज जागै ॥

( ततः प्रविशति घटकर्ण: । बानरा: दृष्ट्वा पलायन्ते )

( बेतालशृगालगतौभुजभूषण:अनुरुत्य बोधै: )

**कवित्त** । बलकिबलाकानिजबाहुनकेबलबड़े कुटुंबु इतआयेबीरता बढ़ाइकै । संगकुलकानिसबबैननिबिसारिदै न्हे दखएकमासकह चले ही पराइकै ॥ धीरजको धारि मारिगिरिनिगिरावो याहि भाजि कबलौं जोहौमुख दारनदेखाइकै । जीतिजगविजयबारोयशहै अनूप यारो मरे मोदभारीमारतण्डभेदिजाइकै ॥ १ ॥

**खिल्वाबानरा:** । कवित्त ॥ कैधौं दिगशीसकाल ऐनजायजीतिल्यायो सोईहिरनाक्षधायोरासितसहाइकै । कैधौंबंदीखानेजाइकालहौकोखोलिदीन्हो धायेआयेभक्षनकोबदनबढ़ाइकै ॥ कैधौंनिजगर्वजानिबलिजूसोंयाचिल्यायो बाढ़िधायेबावनयेबीररंग छाइकै । कैधौं सोई पूजाकरिरुद्रकोरिझाइलीन्होनेईप्रलय इतआयेशलकरलाइकै ॥ २ ॥
भुजभूषणयासोंमिरिबोतोमिभांतभारईकोकुदिसहै ॥

**भुजभूषण:** । एक तो समर फिरि हितकारीकि पृथी शरीर छनभंगुरई

है याते हम सब को सनमुख ह्वै पराक्रम करिबोई उचित है नातरु हितकारी वानरवान्ह में पतंगई होय है फिरि पछिताबई हाथ रहि जायगो ॥

श्वेतामल्लः । अरे डरो कहा हो आवो आवो मेरे पीछे तो चलो ॥

( इतिश्रुत्वा सक्रोधं तदग्रतो धावति )

हितकारी । देखो सुगल याके वपु में परबत पुंज कैसे परे हैं जैसे परबत पर बोरे ॥

सुगलः । मर्कटन लिपटे तन कैसो शोभित होइ है जैसे रोम रोम ब्रह्मांडन बलित महा विराट ॥

अथ नलः । विलोकिये मरकटनको कैसे झारि देइहै जैसे मत्त मातंग महावतन कों औ सुख भरि भरि कपि भालु भारी भटन कैसे भखै है जैसे दीर्घ दावाग्नि द्रुमन ॥

श्वेतामल्लः घटकर्णंप्रति । खबर दार होय यह गिरि मेरो फेंको आवै है ॥　　( इतिनिक्षिपति )

अथ नलः । स्याबास श्वेतामल्ल स्याबास जाको बज्र न बाधा कियो सो घटकान तेरे प्रहार तें भूमि में जानु भरि आइ रुधिर वमन करि दियो ॥

घटकर्णः उत्थाय विहस्य । स्याबास श्वेता मल्ल या मुठका सहै ॥ इतिप्रहरति ।　　श्वेतामल्लः मूर्च्छांनाटयति ॥

( भग्नभूषणः सक्रोधंमुष्टिकयाप्रहरति )

सुगलः । देखो देखो घटकान तो घूमि कै एकही मुठिका ते मुजंग पगाउ कों भू भेंटाय सकल कपिकुल कलेवई सो किये लेइ है ॥

इतिरद्रुत्य । अरे नीच कहा तुच्छ कपिन को पुच्छ पकरि पकरि चरण कचरि कचरि बिचरि बिचरि रन बीच शोणित कीच करै है मेरेसन्मुख आवै ॥

घटकर्णः विहस्य । स्याबास बीर स्याबास ऐसेसोमें कोई नहींकह्यो ॥ इति शूलंनिक्षिपति ।　　( कीश सैन्य हाहाध्वनिः )

अथ मः पद । अचरजश्वेतामल्लकियो । टेक ।

महाशूलघटकानपवारो तेहिगहिकरिचै टूकदियो ॥

अवयहखलमलयाचलकेरी थंगकईये जनकोलियो ।
विश्वनाथविधिकहाकरैधौं तकिमेरीअतिडरताहियो ॥

घटकर्णः प्रहरति । ( सुगलः मुर्च्छांनाटयति )

**कच्छराजः** । हाय हाय सुगल को कांख दाबि घट लिये जाय है ॥

**डीलधराधरः** । पद ॥ चेत मल्ल आतुअतिभावत ।

थापतफिरतभटनधरिभूधर रन त्साग्रहबढ़ावत ॥
आखिर हमनहुंसगरमधि दघनधरनिधरिधावत ।
विश्वनाथसेसभैसैनको अभयैआसुबनावत ॥ १ ॥

**चेतामल्लः आत्मगतम्** । जो मैं युद्ध करि घटकान् तें सुगल कों छोड़ाइ ले आऊं तो स्वमी अयश को पताका फहराऊं जब लों तो तब हितकारी के कृपा ते पराक्रम की छुटिहौ आवैंगे ॥

( ततः प्रविशति सुगलः )

**हितकारी सहर्ष मालिंग्य** । मित्र कैसे छुटि आये ॥

**सुगलः** । राजन नगरी की अटारिन नारिन ते वरिसित दधि अक्षत सुमनादि शीतलता तें मेरी मूर्छा जागी तब छोटो रूप करि कांख ते निकरि निज पगन ते पांजर पकरि रदन तें नाक काटि करन ते करन छांटि नट नाटन करि उछलि आप पग पर य्यो ॥

**हितकारी** । श्याबास मित्र श्याबास बड़ो विक्रम कियो ॥

( ततः प्रविशति सातिक्रोधं घटकर्णः )

**हितकारी** । अब तो अधिक भयानक देखो परै है ॥

**सुगलः** । महाराज या कतन को मुख में भरि लेइ है केते नाककान की राह भजे हैं तिनहूं को गहि अंग में अंगराग करि लेइ है केतेन को पाद प्रहारई ते मही मिलाय देइ है यह खल कपिकुल को कुपित कारई मो है ॥

**डीलधराधरः सक्रोधमुपद्रुत्य** । अरे तुच्छ ये विचारे वानरन को कहा मारे है मो वीर आव । इति शरान् मुंचति ॥

**घटकर्णः** । तुम्हारे वानन मों मैं संतुष्ट हों तुम बड़े वीर हो पै या समय मो हितकारिही के युद्ध की बांछा है ॥

**डीलधराधरः साशुविनिहैंसम्** । जोहि काय मरकत कूट कांति

भारी कर धर धनु धारी भयानक तिलक कारी हितकारी वह खरे हैं ॥

( घटकर्णः उपसृत्य शैलंनि:क्षिपति )

भुजभूषण: । देखो देखो हितकारी शर शरन तें शैल धूरि ह्वै गयो अब याऊ को शरीर मसकी कैसो होइ गयो ॥

घटकर्ण: दोहा । घातिनेयरासभनहीं नमैंइन्द्रसुतकोप ।
हैं।घटकानमहाबली जोंइडरदारनदिगोप ॥

इति धावति ।

हितकारी सरस्कृत्य । देखो जिन बानन तें तालन कोछेद्यो रासभ कों इन्द्रसुत को मारनो तें याके शरीर में पीड़ा नहीं करै हैं सोवर्ड विश्व में सदा बलवान है ॥

इति सक्रोधं शरंमुंचति ॥

युगल: । देखो सशैल दक्षिन कर याको हितकारी काटि डारयो तातें महा परवताकार ह्वै हजार योधा दबि मरे ॥

भुजभूषण: । कहा देखो देखो वामहूं कर काटि डारयो ॥

( घटकर्णः मुखं प्रसार्य धावति )

आकाशे । देखो देखो हितकारी शरने काढ्यो याको शिर हर कि हिम गिरि चपायो अब धर गरे भरत खंड की धौं कहा दशा होन चहै है ॥ ( भयानकः )

भजन । हितकारी लखपाइघनसुत अतिअचरजयहिसमयकियो ।
ऐसहु डीलसपेटिलूसर्ग पवनगमनमर्द्दकोंकादियो ॥
भरतखंडकेशिरजोजन डोलतिनासमचाईलियो ।
विश्वनाथयहिसमनमपारो सुन्योनदेख्योविस्मयकियो ॥

( नेपथ्ये रोदनशब्दः )

तत प्रविशति त्रिमुंड म नवान्तकनरान्तकात्युदाति पार्श्वदीर्घदेहाः ॥

( नरान्तकः अश्वं संचाल्य मल्ल न प्रहरति )

युगल: । अरे यह दर्गाधर सुवन आपनो अवताचे हूते तरल हय चलाय कपि भालन भाला तें ऐसो भेदै है जातें न युद्ध करि सकैं न भय सों भाजिहो सकैं पुत्र भुजभूषण तुमहूं तो देखो ॥

भुजभूषण: उपकृत्य । अरे नीच ये तुच्छ बारन की कहा मीच करै है मेरे उर में प्रहार करै देखो तो कैसो तेरो भालो है ॥

अत्युदर: सुरान्तकंप्रति । अरे अमोघ भालो याकपिके उर लगि टूट गयो औ अजहू एकाही थापर को भयो ॥

त्रिमुंड: । अरे देखो देखो मानवांतक के मुष्टिका प्रहार तें बिकल भुजभूषण रुधिर उगिलि फेरि मुठका बांधो धौं कहा होइ ॥

अत्युदर: । अरे याको तो कपि अलई करि दियो चलो तीनों मिलि याहि मारैं ॥ इति गजं प्रेरयति ॥

( त्रिमुंड: रथंचालयति सुरांतक: परिघ मुद्यम्यधावति )

श्वेतामल्ल: । श्याम देखो भुजभूषण को पराक्रम तीनों अतिरथिन के प्रहारन कों निवारन करि अत्युदर को वारन को बिदारन कियो पै अकेले हैं हमहूं शिरितरु धारन करि खल विकारारन महारन में मारियै ॥ इत्युभौ धावत: ॥

श्वेतामल्ल: त्रिमुंडस्य हयान् हत्वा रथं चूर्णयति ॥

त्रिमुंड: खङ्गेनप्रहरति ।

सुरान्तक आत्मगतम् । अहो बड़ो बलवान बली मुखहै करते कृपाण छीन त्रिमुंड कों अमुंडकियो ॥ इतिसक्रोधंधावति ॥

श्याम: अरे नीच मेरी ओर आव ॥

( अत्युदर: मुष्टिकया प्रहरति )

अतिपार्श्व: स्वगतं । अहो श्याम नखन तें नर सिंहई इव याको उदर बिदारि डरयो ये बड़े बलवान तीनों है ॥

इति मुगलंप्रति धावति । वृषभकपि:मध्येगृह्णाति ॥

( अतिपार्श्व: । गदयाप्रहरति । वृषभ:मुर्च्छांनाटयति )

मुगल: भयानकंप्रति । देखोतो याको पराक्रम जोलों मूर्छित करि अतिपार्श्व मेरे पास आवै तोलों याही की गदा लेवाही को शिर फेरि डारे ॥

श्याम वृषभ भुजभूषण श्वेतामल्ला: हितकारिणमुपसृत्य प्रणमति )

मुगल हितकारिणौ । श्याबास श्याबास ॥

(ततो दीर्घदेहः रथं चालयति)

**बानरः** सम्मुखं धावंति हितकारी। याही बड़े बलवान बि लोको परि ह एकही एक बान तें हनुमान गिराय दियो बिकल सकल कपिदल ऐसो भाषन भाजो आवै है घटकानही तो नहीं है प्रान धरि यान चढ़ि आयो यह कोन है॥

**भयानकः** पद। उदरअपसर तेंयहपैदा दिगशिरकोहैपूत।
अमेकियेभुजबलत्रयहयपुर जीतिकालपुरहूत॥
है धरमज्ञ कृतज्ञ सत्ययुत बिद्यापढ़ीअभंग।
ज्ञानवानविधुनाथकहे यहकरतरहतसतसंग॥

यो बड़ो धनुर्द्धर है बड़ो अक्षय बारो है याहै ताछन मैं संहार करे याते बेगहीं तदबीर करिये॥

**दीर्घदेहः** सैन्यमुपलक्ष्य। जिन बानन बासव बारन कुंभ बिदारन कियो ते बानरन के ऊपर संधानत श्रम आवे है य. सैनमें जो कोई बड़ो बली होइ सो निकरि आवे॥

(डीलधराधरः धनुर्विस्फार्य उपद्रुत्य तत्पुरतस्तिष्ठति)

**दीर्घदेहः**। अरे हितकारी बड़ो निर्दय है काल समजो मैं ताको आगे बाल खड़ो करि दियो है अब तुम धनुष बान धरि जाव मैं तुमको प्रान दान दियो॥

**डीलधराधरः**। अरे मैं ऐसो बालक हों जैसे बामन॥

(उभौपराक्षिप्य युद्धं नाटयति)

**भयानकः** सुगलंप्रति।

**गद्य**। देखो तो छुर क्षुरप्र नालीक नाराच वत्सदंत दंदबक्र गतपर्व बाराहकर्ण कर्णी विकर्णी बैतस्तिक अर्द्धचंद्र भल्ल बाण वृन्दन तें आकाश अनवकाश ह्वै गयो॥

**दोहा**। पटपटशब्दप्रताकको चापचटचटाशेर।
घंघटचक्रनघहर रह्योएकह्वैबेर॥१॥

देखो याके मण्डलाकार उद्दंड कोदण्ड ते कालदाड़ सम बाणवृन्द व्योम मढ़तई देखपरै हैं॥

**सुगलः**। देखोतो डीलधराधर की हस्त लाघवी तेहि घरन समूहन

को निज घरगा तीन तीन टूकन्ही देखावै हैं याको दीर्घ देह घर जाल ते ऐसे छावै हैं की अंतराल्हू ते नहीं पेखो परे ॥

**भयानकः** । देखो दीर्घ दह घरन काटि कैसे काढ़ि आयो जैसे निश्चार ते सूर्य खो अब आचमन लै दिव्यास्त्रन को प्रयोग कियो चहै है ॥

**आकाशे** । हाय हाय महा प्रलय देखाय है वायु तुम जाय वेगि डीनधराधर के कान लगि कहो याको बध विधि ब्रह्मास्त्र हो ते विरचनो है विलंब किये बड़ बड़े अस्त्रन तें ब्रह्माण्ड बरो जाय है ॥

**डीनधराधरः दीर्घदेहस्य शिरः शरैश्छिनत्ति ।**

**वानराः सहर्षं जयजयेत्युक्त्वन्ति ॥**

**( नेपथ्ये रोदन शब्दः )**

**पुनस्तत्रैव** । आप शोक तजि सबको समुझाइयै मैं मुहूर्तई में मारि आवोंहों ॥

**आकाशे** । हवन करि घन ध्वनि अदृश्य भयो अबधौं कहा करै ॥

**युगलः** । यह महा अंधकार होइ गयो अस्त्र शस्त्र की बर्षा चारनों वोरते होय है अहो कहा है ॥

**भयानकः** । यह घन धुनि की माया है ॥

**डीनधराधरः सक्रोधं** । यह खल छल करि बानन सों वानरन को बध कियो याते मैं अपने अस्त्रन सों सकुल निश्चर संहार करोंहों ॥

**हितकारी** । याको ब्रह्मा को बर है याते तुमहूं हमारी नाई मूर्छित ह्वै मा मरयाद मानो जो कछु कारन होइगो सो पीछे करेंगे ॥

**( इतिसानुजः मूर्छान्नाटयति )**

**घनध्वनिः** । अरे राघमा जिनके भयतें पितु भीत रह्यो चलोतिनको विनाश सुन इ हर्षपन करौं ॥ इतिनिःक्रांतः ॥

**आकाशे** । हाय हाय अबकैसे बचैं ॥

**भयानकः उल्कांप्रज्वाल्य सेनामवलोक्यति ।**

**( चेतामल्लः भयानकस्य ध्वनिं श्रुत्वा उत्थाय )**

भाई भयानक कहो कहा कौन कौन बचे ॥

**भयानकः** । चलो देखें

( इत्युभौ परिक्रम्य चिरंजीवि ऋच्छं विकलं दृष्ट्वा )

भयानकः । ऋच्छराज तुम्हारो हाल कहा है ॥

ऋच्छराजः । घायन तें अति विकल तुम्हे बोलही ते चीन्हो हौं कहै चेत मल्लजिये हैं ॥

भयानकः । चेतामल्लहीके पूंछिवे में कहा कारन ॥

ऋच्छराजः । जो चेत मल्ल जीवत होइगो तो सब जीवतई है ॥

चेतामल्लःपादयोपतित्वा । आज्ञा होइ ॥

ऋच्छराजः । तात जाइ औषधि गिरि ल्याइ सबन जियावो ॥

चेतामल्लः प्रणम्यनिःक्रांतः ।

नेपथ्य । अहो राघव पुरी आकस्मात् डगमगातभई कहा उतपात है ॥

( ततः प्रविशति द्रोणपाणि चेतामल्लः )

सुगलः । अहो औषधि पौन परसत हमारी सब सैन उठि खड़ीभई राक्षस नहीं जिये यो बड़ो आश्चर्य है ॥

भयानकः । दिगशिर मृतक राक्षसन के शरीर समुद्र में डराइदेई है ॥

सुगलः । याकुभट निपट कपटकारि कूलि कपि सुभटन कटक काटि पुहुमि पाटिगयो भुजभूषण तुम भारी कपि भालुन लैभूरिभूरहनवारि वारिविभावरीचरनभौनभस्म करिदेउ ॥ भुजभूषणास्तथेति निःक्रांतः ॥

( नेपथ्ये कोलाहलः )

छंद । करालकोश कोपिकैलुकटल्याइल्याइकै । दई लगाइ आगि चारि ओरधाइधाइकै ॥ सुवर्णऐनधोमलौंसबैमहाबरैंढरैं । नबाटभाजि जानजातजानहायआकरैं ॥

प्रविश्यसंभ्रांतचारकपिः । महाराज दिगशिर शासन पाय लै विकट कटक घटकान सुत घटनिघट धाइ आइ झटित शरन चलाय बढ़े बानर न हटाय दियो निज भटनबीर रस बढ़ाय भुजभूषण कट कटाय उदभट कूरन कूटिघटही सो जाय भिर सो बीर बानन सों बली बानरन व्यथित करि भुजभूषण भालको खाल काटि डारी येबाम करसों सो उठायो नैन मूंदिबो बचाये युद्धकरै है बहु छन छन मूर्छित करै है ॥

सोद्वेगंसुगलः । चिरंजीवी चिरंजीवी ऋच्छ बानरन लै धावो धावो भुज भूषण की सहाय करि शठहिसमर सोवावो ॥

( श्रुत्वा तथेति निःक्रांताः )

सुगलः । अरे अब युद्धको सब खबरि-कहि जाय ॥

चारः । महाराज बड़ो युद्ध भयो जामें बानरन राक्षसन को बड़ो संहार भयो ॥

( सुगलः ततस्ततः )

चारः । तीन राक्षस बड़े बलवान बड़ो युद्ध कियो तामें एक को भुजभूषण मारनो द्वैको पकरि चले तिनको आश्विनेय दोनों भाई बीचही बड़ोयुद्ध करिमारनो ॥

(सुगलः ततस्ततः)

चारः । क्रुद्ध होइ घट रथ चलाय सब को बानन सों बिकल कियो ॥

प्रविश्य ससंभ्रमं द्वितीय चारः । महाराज जो सेना आप पठाई सो भुजभूषन पास नहीं पहुंचन पाई घट बानन सों बीचहीं आड़ि अचल बनाई ॥

सुगलः स्वगतं । अरेबड़ो बलवान है ॥ इतिसत्वरंनिःक्रांतः ॥

नेपथ्य । अरे घठ तैं धनुर्द्धर आपने काका की बरोबर है देह बल बाप कैसो है धौं नहीं, अरे कोध घरीर शक्तिहू समुझाये देउं हौं ॥

( पुनश्चटचटाशब्दः )

प्रविश्य चारः । सुगल प्रभु समीप तें सिधारि घट को प्रचारि मल्ल युद्ध धारि ताको सागर में पवारि दियो सो ओदोही धोती धाय धरनि कंपाय सुगल शिर मुठका लगाइ निज भटन उत्साह बढ़ाइ महा गरज्यो सुगल सम्हारि रद अधर धरि एकही मुठका प्रहारि घट शिर घटहो सो विघरित करि केहरि नादकियो ताको निधन निरखि निघट धायो त्रेतामल्ल बीचहीं हुंकारनो सो परिघ मारनो सो टूटि टूक बिपुल बिपुल उलका बेष धारनो ॥

( हितकारी ततस्ततः )

चारः छप्पय । कुपित नीच बलवान कपिहि गहि पुरदिशि दौरनो ।
त्रेतामल्ल बिहस्सि मारि मुठका कर छोरनो ॥

पुनि गहि पांइ पछारि कूदि तेहि हृदय मझारी ।
तीरजी शीश भवांइ फेंकि दिगशिरहि अगारी ॥
पुनि पटकि लंगूरहि हरषि भट कटाटकइरव अति कियो ।
सबशैलनसरित समुद्रयुत डगमग महितल करि दियो ॥

( ततः प्रविशंतिसुगलादयः सर्वेवानराः )

सहर्षं हितकारी । ये राक्षस सुरासुरन के जीतन लायक नहीं रहे तुम आश्चर्य कियो ॥

सुगल : । यह आप की कृपा है हम केहि लायक हैं ॥

नेपथ्ये । बाप को बयर लेन कह्यो हुतो सो कब लेउगे ॥

( प्रविश्य ग्राहनयनःतोटकछंद )

वहरासभकोमयपुतकहौं । हितकारिहमोहतयुद्धचहौं ॥
करिइन्द्रसंग्रःमहिवैरसबै । हनिगलहिलेउंनिवारिअबै ॥

( हितकारीवक्षः स्फोटत्य पुरोपस्थल्य )

छंदमंखनारो । रहैनोचठाढ़ो । सहैबानगाढ़ो ॥
कहागालमारे । पितापैसिधारे ॥

( ग्राहनयनः शराम्निक्षिपति )

सुगलः । देखो भयानक हितकारी को अरु ग्राहनयन को कैसो युद्ध होइ है मानो द्वै मार्तंड आपनी किरिनन सों लरै हैं ॥

भयानकः । हितकारी सम युद्ध करि याको खेलावै हैं ॥

सुगलः । सांच कही देखो शरसों शरासन सूत अश्व स्यन्दन बिन करि दियो ॥

ग्राहनयनः शूलमुद्दाम्य । मोपितु बधकारी हितकारी यह शंभु दई शूल सों नहीं बचो हौ ॥ इति निःक्षिपति ॥

आकाशे । हा हा शब्दः ॥

( हितकारी शरै छिन्नति )

सुगलः । श्याबास महाराज श्याबास याके बड़ो गरब रह्यो है आपु सहजही में शिर काटि लियो ॥

नेपथ्ये । हे इन्द्र मदहारी पुत्र या हितकारी धनुधारी बड़ो शत्रु है सो अब जैसे मरै तैसें शीघ्रही मारो नहीं तो सेना नाश कै देइगो ॥

घुननँपच्यो । पिता मोको पिता महं ऐसो कहिमंत्र दियो हुतो की नि-
कुंभिला में जप किये निरविघ्न समाप्त ह्वै है तो तैं सबते अजै ह्वै
हैं सो सिद्धि करि जीते लेउ हौं ॥

प्रविश्यसबाष्पकंठभेतानकः । महाराज घनध्वनि पश्चिम द्वार
ह्वै महिजा को लये निकसो तेहि सैं बहुत समझायो न मान्यो
जौलों मैं छीनवे को निकट जाउं तौलों तरवारि चलायही दई वृथा
युद्ध श्रम जानि आप को खबरि जनावनि आयो ॥ इतिरोदिति ।

( हितकारी विकलतांनाटयति )

भयानकः । महाराज वेगि सावधान हूजिये अवसर शोक को नहीं
है जातें सब विकल ह्वै विघ्न करन न आवें यह विचारि घनध्वनि
माया महिजा मारि निकुंभिला में जप करन गयो है यह मैं निहचै
खबरि पाई है मंत्र सिद्ध भये काहू को मारो न मरेगो, तातें डौ-
लधराधर भुज भूषण चेता मल्ल को सैन संग मेरे साथ भेजिये ॥

हितकारी । दुसह दुख दहन दहत देह मेरी, पर तेरी वानी सुधा
वृष्टि सी करी, डौलधराधर तुम्हारो कल्यान होइ जाव ॥

डौलधराधरः । भयानक आजु प्रभु पास ते हौं जाउहौं देखो मेरे
सन्मुख खल कैसी बरदानी माया करै है ॥

( इति हितकारिणं परिक्रम्य प्रणम्य चलितःक्रांतः )

हितकारीनिश्वस्य । सुगल बार बड़ी भई कछु खबरि न पाई धौं
कहा भयो होइ ॥

( ततःप्रविशतिचारः )

चारः । महाराज डौलधराधर बड़ो युद्ध कियो तहां घनध्वनि एक
आश्चर्य काम कियो ॥

हितकारी । किंकिम् ॥

चारः । डौलधराधर शरन तें सारथि सैंधव स्यन्दन सिलाह काटिगये
झटित शरपटित ऐसो आकाश कियो की जौलों शरांधकार खुलै
तौलों पुर जाइ रथ सवार आइगयो ॥

( ततः प्रविशति डौलधराधरः )

सुगलः । देखो महाराज चेतामल्ल भुजभूषण के पानि गहे घायन तें

व्यथित डौलधराधर चले आवै हैं मुखश्री तें जानि परै है की मारि आये ॥ डौलधराधरः पादयोः पतति ।

( हितकारी मस्तक माघ्रायालिंग्य )

वैद्यकाधिं प्रति । विशल्यकरणी औषधी जे संचि राखी हैं तिनतें सब को वेगि विशल्य करो ॥ स तथाकरोति ।

हितकारी भयानकंप्रति । युद्धको कछु विशेष वृतांत कहिजाउ ॥

भयानकः । प्रभु पासतें चपल चलि हम चहूंधा निकुंभिला घेरे चु-घानि जो निशाचर चमू तापै अचलन झलाइ सचल बनाइ दई घन-ध्वनि विचलत चरचि जप तजि सजि कोपकरि चाप धरि चटकनि करि आये दोउ कटक भट दोउ धनुर्द्धर उदभट तीनि दिन प्रस्वेद पोंछन सावकाश न पायो डौलधराधर घनध्वनि को भुवन भय-कारी रनभयो ॥

छंद भुजंगप्रयात ।

महावीरदोउमहायुद्धरोखे । हनेअर्वखर्बैनराचानिचोखे ॥
हमैदेखिमेघारिशूलैपवारयो । द्रुतैयेतहींतीरसोकाटिडारयो ॥
सोहूंहाथभारीगदाधारिधायो । सबैबाजिताकेछनैमारिआयो ॥
सोलैचापचारोंदिशाबानछाये । महाअस्त्रकेतेअमोघैचलाये ॥

दोहा । डौलधराधरआशुसब अस्त्रसमितकरदीन ।
महाकोपकरिबानवर तेहिवधहितकरलीन ॥ १ ॥

कह्यो जो हितकारी सत्यवक्ता होंइ तो या शर याको शिर छीन लेइ ॥

छंद चौपैया ।

फिरताहिपचारीसोशरमारीशीससकुण्डलछीनलियो ।
लैलैसुरकोगैभवसुखभोनोंनाशिचर हाहाकारकियो ॥
कहिमेःयुधजैतोलख्योनतैसोऐसेहुंरनक्रमसबहिबचे ।
चखसुखजलबरषेकपिसबहरषेभूमिभूमिलंगूरनचे ॥ १ ॥

फेरि आप के पास आये ॥

हितकारी । तुमसब मघवारिकों नहींमारो महिजाहोंको लैआये ॥

( नेपथ्ये महारोदनध्वनि )

पद । जीवतभानवानसोवेध्यो अबहुंप्रानसोबेधिगयो । टेक ।

मेरोउरकुलिशहुनहिंछेद्यो तेरेदुखसोंछेदभयो ॥
यद्यपिप्रातबिजयरथचढ़िमैं बखतरपहिरअभेदम है ।
अच्छयकसिनिखंगद्रुतजंगहि जितिहौंपैसुखकछुनअहै ॥

प्रविश्यराक्षसाः । दिगदिर को आज्ञा है तुम अकेले हितकारहो सो युद्ध करिकै मारि आवो जो हितकारी रासमारि साँचे होइ तो अकेलहीं कढ़ि हमसों युद्ध करैं ॥

( धनुः सज्जीकृत्य हितकारी धावति )

श्वेतमल्लः । भुजभूषण देखो तो हितकारी के मण्डलाकार चापतें चारोओर कैसे शर कढ़ै हैं जैसे चरखी तें अनलके फुहारे सनमुख धाइधाइ सेना कैसी नाश होतजाइहै जैसें वाड़वबन्हि में वारिधिवारि॥

भुजभूषणः । श्वेतामल्ल देखोदेखो अस्त्र छोड़ि स्वामी बड़ो कौतुककियो ये निश्चर परस्पर परपेखि आपुसिही में लरि मरि गये ॥

( जयजयेति सर्वे हितकारिणं पूजयन्ति )

सुगलः । महाराज अपूर्ब यह अस्त्र कौन है ॥

हितकारी । यह गंधर्वास्त्र मोकों कोहरै को आवै है ॥

नेपथ्ये कबित्त । लीन्हे धनुवानभुजबीशदिगशीषजात को।पितगिरीश मानोनाशकोकढ़तहै । चाकनदचकहै षजचक्रि लचकिलागेकोठपीठ मानोंकालदण्डनेगढ़तहै ॥ कोलडाढ़कोल छोनीजांतसीफिरनलागी जागी आगि धूमकढ़िअंबरमढ़तहै ।दैत्य अकुलाने देव सकलसकाने भीतिदेहभानभाने भाननाकनाचढ़त है ॥ १ ॥

सवैया । जूम्भिगयेमनकोगजहैं दशकुंजरदिग्गनकेअबलैहै । सेतबंधोयह देखतहींनिजरीसहुताशनैंसिंधुसुखैहै॥होतयहैनिहचैअबहीं बिनहोंनर बन्दरबिश्ववनैहै ॥ दासतादैदिगदेवनकोहमको सबकोदिगदेवकदैहै ॥

(ततःप्रविशतिससैन्योदिक्शिराः)

आकाशे कबित्त।देखोदेखोदेखिदिगशीशकोअसंख्यसैनकोशनकोसैन अतिचैनअधिकातहै । तालतनलोल लूमजहरैंबिशाललाललबिलसोबदनफलोजालजलजातहै ॥ रोमराजिभाईसोईसेबूलसघनताईछहछहो डोटिकोपरागसरसातहै । रसकोउमंगअंबुकितकैं बिहंगबोलजोहनख दंतदोहमीननकोब्रतहै ॥ १ ॥

रोलाछन्द । महामोदकोउमंगअंगभारिहुंसमातिनहि ।
उछलिउछलिअङ्गपिलेपादपपद्दारगहि ॥
जनुतकिप्रभुमुखचन्दवीररसबारिधिभाये ।
सहितसैनदिगधीसबेलथलवीरनधाये ॥

देखोदेखोराचमनहूंको ॥

छन्दनराच । लियेसोबानबिज्जुचापचापदेबवर्ज्जसो ।
लसैसुभट्टतर्ज्जितर्ज्जिगर्ज्जिगर्ज्जिगर्ज्जसो ॥
पिलेसग्रामकेउछाहपौनछोउमंडिकै ।
अनंदकेअनंतमेहज्योंचलैंघुमंडिकै ॥

(सबहोयाहंदिक्षिरा:)

सूतंप्रति । करु मेरो रथ आगे ॥

सुगल: । भुजभूषण देखो तो यह दिगधिर हमारी सैना में कैसे परो
जैसे सूखे बन आगि ॥

(इतिधावंति)

हितकारी । देखो डीलधराधर हमारो मित्र महा बिशाल तालतरु
लिये दंडकर कराल कालईसो देखो परैहै ॥

डीलधराधर: भयानकंप्रति । कहो ये तीन राक्षस कौनहैं जे बा-
नरन बिचलाइ सुगल भुज भूषण सों भिरे आइ ॥

भयानक: । येकुरूपाच दीर्घोदर दीर्घपार्श्वहै ॥

डीलधराधर: । देखोदेखो इ है को तो बड़ो युद्ध करि सुगल मारयो
एककों भुजभूषन बड़े क्रोध सों मारयो बड़ो आश्चर्य कियो ये भट
सुरासुरन जीतन वारे रहे हैं ॥

सुगल: । उच्चै: स्वरेण सेनांप्रति ॥ धावो धावो भटौ दिगधिर हितका-
रीपैं जाइहै ॥ बानराधावन्ति ।

डीलधराधर: । अरे यहतो राक्षशास्त्र सों सिगरी बानरी सैना जारि
दई उड़त खाक देखो परै है ॥

(इतिसक्रोधंधावति)

दिकधिरा:सूतंप्रति । मैं बानकाटत जावहों तैंइनकों बामदै मो-
कों हितकारी सों जोरिदै ॥ सतथा.कराति ।

**आकाशेगद्य** । दिग्शिर धनुधारी हितकारी डीलधराधर शर परंपरा भरानमंधरा पारावार विकल करा कारागार सोहै गयोबीसभुज भुजन ते जेते शर चलावैहै तिनते चौगुन हित कारी है भुजहीते चलावे है बड़ो आश्चर्यहै दूनों को तनते तीछन तीरन लेत रोदा में देत खैंचि हनि देत कोई नहीं देखै ॥

**छन्दनराच** । चलेअनंतबानव्योमफोकनोकसोंगसी ।
शरीरलोंदुहूनकेसुदंडपांतिशीलसी ॥
कहूंसंघट्टिबानवृन्दवन्हिआपुजारहीं ।
कुकर्मिज्योंकुकर्मकैकुलैकोंनाशिडारहीं ॥

**डीलधराधरः** । अरे मेरो अनादर करि हितकारीसों जुरेआइ ताको फल देत हौं ॥ इति शरान्निःक्षिपति ॥

**(दिक्शिराः सज्ञामूर्च्छांनाटयति)**

**भयानकः** । याको ऐसोकोऊ कबहूं नहींकियो श्याबास तुमको है ॥

**उत्थाय सक्रोधं दिक्शिराः** । आः पाप तूं अब प्रशंसा करन को नहीं रहै ॥

**(इति अमोघांशक्तिं निक्षिपति)**

**कपिसैन्ये हाहाशब्दः** ।

**आकाशे** । देखो देखो डीलधराधर की भक्त वत्सलता भयानककों पीछे करि आपु सनमुख ह्वै उर सांगि सही ॥

**(उरोनिःसृतांशक्तिर्डीलधराधरःमूर्च्छान्नाटयति)**

**हितकारी** । त्रेतामल्ल तुम सब शक्ति निकारो हो युद्धकरो हौ ॥

**आकाशे** । देखो त्रेतामल्ल भुजभूषन आदि भटन को निकारी शक्ति न निकारी सो हितकारी दिग्शिर के शर सहत बामकर ते गहि निकारी आश्चर्य है आश्चर्य है ॥

**सुगलः भयानकंप्रति** ।

**भजन** । अद्भुतरूपआजुहितकारी । **टेक** ।
क्रोधअरुनदुखजलपरिपूरन ऐसेहुदृगमोहहिंसुरनारी ॥
कालसरिसतकिप्रभुतनदिग्शिरशरनिफवावतरुधिरफुहारे ।
विश्वनाथप्रभुलखिउत्साहित हंसिसुरअस्तुतिवचनउचारे ॥

चेतामल्लः भुजभूषणंप्रति । देखो तो आजु हितकारी के बान आकाश कों पियेँ लेइ है जे अस्त्र दिग्भिर चलावे है तिनको हितकारी कैसे समित करै है जैसे श्रोतन को शंकनि को समीचीन बक्ता ॥

छन्दतरंगिनी । खलखैंचिदसकोदंड । लियमूं दिनभशरचंड ॥
जनुविरचिवियब्रह्मण्ड । विधिवंशभोरद्दंड ॥ १ ॥

भुजभूषणः । देखो देखो ॥

छन्द । प्रभुकोटिसरमुमख्यात । निजशरक्रियेनभसात ॥
सोउनाशिप्रभुशरदीन । शिप्रशिष्यताकियपीन ॥

हितकारी । अरे मैं सहजहीं शर सों बंधु बदलो लेउंहो ॥
(इति निःक्षिपति) (दिक्शिराः महतीमूर्च्छां नाटयति)
(वानरीसेना जयजयेतिजल्पति)

सूतः आत्मगतं । हों आपनो धर्म राखौं ॥
(इति रथं परावर्त्य निःक्रांतः)

हितकारी । चेतामल्ल बेगि औषधि ल्याइ डीलधराधर कों हरपित करो ॥ सतथा करोति ॥

नेपथ्ये ॥ अरे यह कहा कियो । महाराज मैं आपनो धर्म राख्यो है । अरे मूढ़ या शत्रु शरन ते पूजिबे लायक है याको समर परम सुखदायक है हांकु हांकु मेरो रथ ॥
(ततः प्रविशति ससैन्यो दिक्शिराः)
(वानराः गिरिवृक्षानगृहीत्वा धावंति)

आकाशे । देखो देखो ॥

अन्तर्ध्वनिः । जहंतुररिपुतहंकोपिले रंगिकोशरनरंग ।
मारुमारुभनिभटभिरे अंगगिरतसुजंग ॥
अंगगिरतसुजंगगगरब हमंगगगनतन ।
ठट्टट्टुद्देहुंसुभट्टट्टिकतकुभट्टट्टरतन ॥
रथ्थिथ्थुरतसमथ्थथ्थपरनरथ्थथ्थुरिरर ।
मज्जज्जजहिनिमज्जज्जोगिनिभयज्जज्जहंतुर १ ॥
जमजड्डजगयहतसनकहि करैकालिकाकूक ।
लगीश्रगालीभषनपल कोकक्करिकारिमूक ॥

कोकक्करिक्करिमुक्कमुक्कुरिक्कतंकक्कियहरि ।
लक्खक्खलदलक्खक्खक्खयचतनक्खक्खरलरि ॥
कुद्दुद्द्यरिद्दयुद्दुद्दुरनिविद्दुद्दुरिक्कंग ।
भज्जज्जमस्समगज्जाज्जहंतहंसज्जाज्जसजग ॥ ७ ॥

**कुंडलिया ।** करनैजयनिजउद्धलिकापि लरहिंमनहुं नृपपच्छि ।
कोउसहाइनहिंचहत हैं निशिचर गनतनलच्छि ॥
निशिचरगनतनलच्छिभच्छिकपिश्रंतदखावै ।
गज्जिगज्जिरनरज्जितज्जिनभभयउपजावै ॥
कपिहुभालुखलदलनदलतप्रभुजयजयबरनैं ।
कोहुशिरलेतउपारिकोहू चरनैंकोहुकरनैं ॥ १ ॥

( दिक्शिरा: सक्रोधं शरान्मुञ्चति )

**आकाशे ।** आश्चर्यहै आश्चर्य देखो देखो वानरनकी बीरता काहूकोशिर कटिगयो है धरही धायो जाइ है हितकारी के काज में मानो आपहू कटनजाइ है काहूको धर सर समूहनिपरमानु परमानु ह्वै उड़िगये शिर दिगशिर रथ मैं परत्रो मानो धर को बैरई लेनगयो ॥

**कवित्त ।** शरनसमूहनसोंकाहूको चरम गयो रहिगयोमासपिंडश्रोनितसो भरोहै । सनमुखबानबृन्दसहतसो दोरोजाइ पीठि मासनोचिनो-चिखातगीधकूरो है ॥ गहिगहि आंतकाकखैंचतलूकतसोई काटि नखधावै कहिखलनाहिं दूरोहै । काटिजातपाइकर शीस दिगशी-सैश्रार ढरिढरि जातबीरक्करोहै सूरोहै ॥ १ ॥

( प्रविश्य रथादवतीर्य्य पुरुहूतसूत: )

**सूत: ।** महाराज या रथ सुरपति पठायो है अरु यह कह्यो है कि यामें चढ़ि दिगशिर को मारि मोहूंको बड़ाई देइं ॥

( हितकारी परिक्रम्य रथमारोहति )

**सुगल: ।** भयानक देखो देखो तमीचर तमहारी रथारूढ़ हितकारी प्रभाकर पेखि पेखि कपिन हग अरबिंद अति प्रफुल्लित भये हैं ॥

**भयानक: ।** सुगल देखो देखो सूत प्रेरित हितकारी दिगशिर के रथ दोरि प्रभंजन प्रेरित प्रलय पयोदई से दुरि गये हैं अरु दुहुन के धुजा फहरि मिलि है सरभसे समर करैं हैं ॥

**सुगल:** । देखो हितकारी अश्वनि आभातें अरुन रण अवनी हरित बरन बिलसै है अब देखो दुहुनके रथ मण्डल करत आलात चक्रई से ह्वै गये दोऊवोर मण्डलाकार कारमुकन तें कैवर कदम्ब कैसे बढ़े हैं जैसें कंदरन तें टीड़ी ॥

**आकाशे** । देखो देखो दिगशिर यह असुरास्त्र छोंडनो ताते तोमर मोगर शक्ति शूल शर असि आदि आयुध सैन पर बरषे है । देखो हितकारी एकही बाण तें निवृत्त कियो फिरि देखो ॥

**छंद** । अतिक्रुद्धह्वैदिगशीश । धरिधनुषशरकरिवीश ॥
किय विकलसकलकपीश । गहिगिरिनधायेकीश ॥ १ ॥

देखो दिगशिर देह लागि टूक टूक ह्वै गिरि कैसे गिरे हैं जैसे गगन तें मास लोभित गृद्धगन देखो दिगशिर शरनते कटे कपिनके शिर कैसे गिरे हैं जैसें तालतरुनतें फल देखो हितकारी क्रुद्ध ह्वै शरनसों छाय लियो दिगशिर कैसे कढ़ि आयो जैसे निबिड़ बारिद बीच ते विवस्वान ॥

**दिक्शिरा: शूलिदत्त शूलमुद्यम्य** । हितकारी नहीं बचौ हो ॥
इतिनि:क्षिपति ।

**( हितकारी शक्तशक्त्या निवारति )**

**ऋच्छराज:** । देखो भयानक दोऊ भट भयानक युद्ध करि रहे हैं ऐसो मैं कबहूं नहीं देख्यो ॥

**छन्द** । नहिं रोदनजोरतजोहिपरैं । दुहुंओरनिबानसमूहभरैं ॥
भटसारथिबाजिनलोमनते । ध्वजस्यंदनचक्रकिधौंमनते ॥
निकसैंनसिराइघनेसरसैं । दसदिग्गहिआशुकिधौंबरसैं ॥
सबचित्रलिखेसिमसैनभई । अबआशुकहाबिरचैधौंदई ॥

**आकाशे** । हितकारी अरु दिगशिर के बानन ते अब भाजिबे की बाट नहीं है हाय हाय नाहकहीं मरे अब की बार जो बचि जा-य तो नियराइ न निरखैं ॥

**पुन:** । देखो देखो शंक न करो हितकारी रोस करि दिगशिर के शिर भुज काटि शरन तें गिरन नहीं देइ है ते आकाश में कैसे शोभित होइ हैं मानौं शठ की सहाइ को बहुत राहु केतु आये हैं ॥

सूत: । याके हृदय में अमृत कुण्ड है ताते शिर भुज जामत जाय है सो ब्रह्मास्त्र तें सोखि लीजिये ॥

(हितकारी तथाकरोति)

सुगल: स्वगतं । अब एक शिर द्वै भुज रहि गये तौ अधिक युद्ध करन लग्यो बड़ो आश्चर्य है ॥

दोहा । यकशरछोड़तव्योमपथ लक्षकरततेहिंसाथ ।
काटतकोटिनसंगकरि कोटिनकोशनमाथ ॥

छन्द । दोउबीरकरैंजहँयुद्धनहीं । नहिंदेखिपरैअसठौरकहीं ॥
बहुभांतिनअस्त्रनादिग्गवरैं । गुनियेछनमैंसबलोकजरैं ॥

आकाशे दो० । हरिसमहरिहरिभक्तसम हरिभक्तहितहिंकाल ।
तिमिर्याहरनसमरनयहो भयोनहोवनवाल ॥

चेतामल्ल: सुगलंप्रति । देखो सूत को शिर हितकारी छीनि लियो दिग्शिरपाइ अंगूठासों बागले त्यों हीं युद्धकरै है स्याबास स्याबास ॥

डीलधराधर: । देखो देखो हितकारी महा अमोघ बान कर कियो ॥

हितकारी । अरे नीच अब नहींबचै है ॥ इतिशराग्नि:क्षिपति: ॥

(मरो दिक्शिर: उरोभित्वा पुनस्तूणीरेप्रविशति)

आकाशे भजन । देखोदेखोश्रवनश्रवनलगि शिवगनयेकछुबरनैं ।
केसुरछितकैसुपितकियेभ्रम छुवतिमीचुनहिंकरनैं ॥
याहीनेदिग्शिरअंगफरकत असहमनिजमनगुनिये ।
विश्वनाथजयनिहचैभयअब कोशनजयजयसुनिये ॥ १ ॥

तत: पुष्पवृष्टि: ।

चेतामल्ल: भुजभूषणं प्रति ।

पद । समरभूमिसोहतहितकारी ।
जयश्रीसहितपानिसरफेरत अभिरधनुषसुछबिअतिभारी ॥
कहुंकहुंसोनितबिंदुविराजत सुभगसरीसजगतदुखहारी ।
विश्वनाथजनुहरितअवनिमें इन्द्रबधूबिचरैसुखकारी ॥

(तत: प्रविशंति रुदन्त्य: छायोदर्य्योद्यानार्य्य:)

हितकारी । डीलधराधर तुम सबको समुझाइ राक्षसपुरी को लै जाउ भयानक को तिलक करि आवो ॥

(तथेति निःक्रांतः)

हितकारी । चेतामल्ल तुम जाइ महिजा की खबरि ले आवो ॥

चेतामल्लः । बहुतभली ॥ इतिनिःक्रांतः ।

सुगलः । महाराज दिग्शिर के जूझे आजु सब लोक अभय भये या आपुही के मारिबे लायक रह्यो है ॥

हितकारी । तुम सो मित्र जाके होइ ताको सब सुगमै है ॥

(ततः प्रविशति चेतामल्लः प्रणम्यसबाष्पकंठं)

भजन । बूड़तशोकसमुद्रमेंमहिजा ममपुखसुधिसमतीरलही ।
पुनिसुखसागरमाहमगनह्वै धरिकनआयोकछुककही ॥
पुनिकहतेरेबोल मोलकछुकौनिछुवस्तुनअहहिकहौं ।
विश्वनाथमैंकछ्योसदहिमैंतुम्हरी केवलकृपाहिचहों ॥ १ ॥
महराज महिजा को आपु के चरण देखिबे की अब अति उतकंठा है ॥

हितकारी । जाव भयानक सों पूंछि डीलधराधर के संग लेवाइ लै आवो ॥ तथेतिनिःक्रांतः ॥

नेपथ्ये । फरक फरक ॥ इतिकोलाहलः ॥

ततःप्रविशंति डीलधराधरभयानकचेतामल्लः शिविकारूढ़ा महिजा च ॥

(दर्शनलालसा वानरास्त्वयंति)

हितकारी । भुजभूषण महिजा सों कहो माता पुत्रन सों परदा नहीं करै है प्यादहीं आवै ॥

(महिजातथाकृत्वाहितकारिणंप्रणमति)

हितकारी । मपथव्याजेन प्रज्वलिताग्नि महिजानिः साश्र्यमिलति ।

आकाशे । पद । यह दोउ मिलनि लखहु किन भाई ।
कियो चहत दूजो जल निधि जनु सुखआसुन भरिलाई ॥
पुलक कदंब कदंब कुसुमतन बचन संकत गरआई ।
विश्वनाथ प्रभुसम बिधुनाथहि अब अरधंग बनाई ॥ १ ॥

सुगलः । आजु हमारो सब को सब श्रम सफल भयोमहिजा हितकारी को एक सिंहासन बैठे देख कृत कृत्य भये ॥

(प्रविश्य सर्वेसुरास्तुवन्ति)

हितकारीसहचाच्चंप्रति । सुधा बरसि हमारे बानरन जियावो ॥

तथाकरोति ।

(बानरा:सर्वेसमुत्थाय सहर्षं जयजयेत्युच्चारयन्ति)

देवा: । अब आपको जब तिलक ह्वै है तब आय नैन सफल करिहैं ॥

(इतिनिःक्रांता:) (हितकारीसवाच्यकंठं)

भजन । ह्वै दिन रहे अवधि के बाकी पुरपहुंचन नहिंजात निहारी ।
बिन पहुंचे डहडह जगकारी तन तजि है अब यह दुखभारी ॥

भयानक: । रखिहौंअसबिमानप्रभुआगे आजुहिसदलतहां पहुंचावै ।
विश्वनायहोहूंसंगचलिहौं लखिहौंराजतिलकमनभावै ॥

(तत: प्रविशतिपुष्पकं)

भयानक: । महाराज यह विमान हुजूर में हाज़िर है ॥

(सनयासहतदारुह्य)

हितकारी । श्रेतामल्ल मोकों याज्ञवल्क्य शिष्य के ह्यां कुछु दिरंग
लगैगी तुम आगे ते खबरि जनावो ॥

सतथेतिनिःक्रान्त: ।

विमानंसंचाल्य सर्वे निःक्रांता: इतिषष्टमोंक: ॥ ६ ॥

इतिश्री मन्महाराजाधिराज बांधवेश श्रीमहाराज विश्वनाथ
सिंह जूदेव कृत आनन्द रघुनन्दन नाम नाटके षष्टमाङ्क: ॥

---

# अथ सप्तमोङ्क: प्रारम्भ: ॥

प्रविश्यडहडहजगकारी । कोई है ॥

नेपथ्ये । आज्ञापायतु ॥

डहडहजगकारी । गुरु सों बिनय करै कृपा करि पाव धारि मम
अयन पवित्र करैं ॥

तत:प्रविशतिजगद्योनिज:डहडहजगकारीप्रणम्यसंपूज्यच।
अब हितकारी के आवन की अवधि काल्हिही है खबरि बहुत

दूरि भरि नहीं मिले अवधि टरे मेरे प्राण नहीं रहैंगे सो आप के राज सैांपौं हौं आप यां कुलके सकल काम सवांरत आये हैं सो सम्हार लेइंगे ॥

जगद्योनिजः । आजुकाल्हि सगुन बहुत होय हैं याते हितकारी आवन चहैं हैं तुम सोच न करो ॥ इतिनिःक्रांतः ।

( डहडहजगकारी सशोक मात्मगतं )

पद । मोसमअधमकौनयहिजगमेंबीततअवधिजोप्रानरहै ।
धरिहौंहाथमाथमेरेकब बिरहजातसबअंगदहै ॥
त्यागिहुंतनकेहिलोकजाउंगोजगतमबैसमभारबरै ।
विश्वनाथहितकारीतुमबिनमोकहुंकछुनहिंसूझिपरै ॥ १ ॥

( ततः प्रविशतिचेतामल्लः )

चेतामल्लः स्वगतम् । आश्चर्य है आश्चर्य है ऐसो देख्यो न सुन्यो ॥

पद । तनमहंरह्योनपलकछुयांकोपरसिपवनधौंनभउडि़है ।
सिरजतसेदनआसुनसागर धौंयहिऔसरयहिबुडि़है ॥
स्वासखलायंतधौंकज्वलितअति कैडरआगिहिमजारिहै ।
विश्वनाथसुमिरतहितकारी हितकारीतनधौंधरिहै ॥ १ ॥
अबजो मोकों सुधि कहत छन बिलंब लगै है तो ये सुनन कों रहैं धौं न रहैं ॥ ( प्रकाशं सबंहत्तान्तंकथयति )

डहडहजगकारी नेत्रउन्मील्य । मृत तुल्य जो मैं ताके कानमें अमृत तुल्य बानी जो तैं डारो सो भाई नीके नहीं सुनि परी फेरि कहु फेरि कहु ॥

चेतामल्लः पुनस्तदेवकथयति ।

( डहडहजगकारी समहाहर्षं मिलित्वा सवाचनकंठम् )

पद । तेरेबोलमोलमनमेरेमिलततनतेरेकरहुंकहा ।
नहिंकछुसर्वलोकमोहिंदुर्लभमांगिलेहिकपिमनहिचहा ॥

चेतामल्लः । डहडहजगकारीमैंतुम्हारी केवलदायासदाहिचहौं ।
विश्वनाथहितकारीसमतुमहोतुहरोसेवकहिंअहौं ॥ १ ॥

डहडहजगकारी । कहो कहो केते बखत आइ हैं ॥

चेतामल्लः । सूर्योदय बेला में ॥

(उद्दडद्दजगकारी चारंप्रति)

**गद्य।** मातन सों खबरि जनाइ डिंभोदर सों कहियो अपराजिता की वीथिन भराइ सुगंध जल सिंचवाइ मोतिन कुम कुमन चौकैं पुरवाइ दधि दूब लाजन छिटवाइ प्रति द्वार कनक कलसन धरवाइ सैन सजवाइ प्रजन लेवाइ गुरुसंग भोर होत होत इत आइहौं॥

सतथेतिनःक्रांतः।

**उद्दडद्दजगकारी।** चेतामल्ल सूर्य्यो संध्या में अनुरागको प्राप्त ह्वै समुद्र में क्रीड़ा करै है अब काहे को रात्रि होइगी॥

**चेतामल्लः पद।** नभमेंयेनहिंशशिअरुतारे।

आवतहितकारीगुनिबासव भरिगजमुक्तामनिनकतारे॥

पठईनजरफटीसितमोटी छिद्रश्यामताईमधिदेखो।

बिश्वनाथफैलोचहुंकितघन बिलसतसोईप्रभुकिनपेखो॥ १॥

**उद्दडद्दजगकारी।** कैसो कैसो युद्ध भयो सो कहि तो जाव॥

(चेतामल्लः सर्वंविस्तरेणकथयति)

**उद्दडद्दजगकारी** चेतामल्ल कहा रवि सागर में बूड़ि गये॥

**चेतामल्लः आत्मगतं।** प्रेम आश्चर्य्य है आश्चर्य्य है जिन को रजनि षेषहू कई कल्प सो लगै है॥

**प्रकाशं दोहा।** नाथलखियपरकाशयहनिकसोप्राचीओर।

कहा उदयगिरिखानिकोलालजालदुतिदोर॥ १॥

**नेपथ्ये कोलाहलः।** (चेतामल्ल)

**छंद।** रथनचक्रघरघरात घंटनग नघनघनात बाजिनपैंजनिय धुनिनझन झनातसुनिये। बहुपताकफरफरातशब्दहोत सरसरातखरखरात सांकरिबहुबारनकरगुनिये॥ धरधरातधरनीअतिलहलहातसैलसकलखलभलातसिंधुसातहरिरवउड़ावैं। विश्वनाथहितकारितकन नयनतरफरातहरबरातप्रजनभोरडिंभोदरआवैं॥१॥

**नेपथ्ये।** (अनेकवाद्यमंगलगानकोलाहलः)

तातै महाराज कुमार यह निस्संदेह दिनकर करन ही को विलास है॥

**ततः प्रविशति सगुरुडिंभोदरः।**

**उद्दडद्दजगकारी गुरुं संपूज्य।** महाराज आप की कृपा ते

हितकारी आवैं हैं सो आप ह्यां रहिये मैं आगे ह्वै आऊं ॥

इतिशिरसि पादुकेबध्वा सबंधुर्निःक्रान्तः ।

आकाशे पद । आनंदअवधिआजअयनहितकारी आवत ।

बालवृद्धयुतकनकेततनैइवधावत ॥

कलमालयेंवरनारिलसहिंकलमंगलगावत ।

जनप्रतिदशाननविश्वनाथकहिपारहिपावत ॥ १ ॥

नेपथ्ये । देखिये उह्वडह्वजगकारी हितकारी की अवाई भई सूखेतरु हरित होइ आये ॥

उह्वडह्वजगकारी । प्रान दाता श्वेतामल्ल एक आश्चर्य और देखो परे है ॥

श्वेतामल्लः । नाथ किं कम ॥

उह्वडह्वजगकारी । प्राची दिशि में सूर्योदय भयो दाक्षन दिशिउदित निशाकर प्रभाकर प्रकाश जीतत आवै है ॥

श्वेतामल्लः । नाथ यह पुष्पक विमान है हितकारी आये आये ॥

जगद्योनिजः सहर्षशिष्यंप्रति ।

आयेआये धुनि श्रुवनमें पूरि रही सो मेरे मनको ऐसे हरवावेहैजैसे मेघध्वनि चातक कों ॥

आकाशे पद । लखिविमान उह्वडह्वजगकारीप्रेमउमगिअतिछायो । सजलजलजचखपनससरिसतनसबजगजियनिबनायो ॥अदभुतमिलनि बंधुदोउकोयहप्रजनप्रमोदमहाई।विश्वनाथभरिनयननिनिरखहुवय-नानिबरनिनजाई ॥ १ ॥

देखो देखो सानुज हितकारी मैयन पांय परसन जाय हैं ॥

पद । तकिसुतमैय धाईं धाईं। सांझआइनिरखतनिजबछरनजैसेगाइले-वाईं ॥ करतनामसूंघिपूतनशिरपयसिंचितकारदीन्हों । विश्वनाथ नृपपदको थमहिंजनुअभिषेकहिकीन्हो ॥

( प्रविश्यसपरिकरोहितकारीगुरुपादौप्रणमति )

गुरुःआशिषंदत्वा । वत्स हितकारी नीके रहे ॥

हितकारी । महाराज जाकेंपर आपकी कृपा है ताको सर्व काल कुशल है ॥

**जगद्योनिज:** । वत्स आजु सुघरी है जाइ जटाखोलाइ पसाक करि आवो ॥ हितकारीप्रणम्यसपरिकरोनि:क्रांत: ।

**जगद्योनिज: शिष्यंपश्यति ।**

**सनि:क्रांत:** प्रविश्यमंत्रीप्रनमति ॥ गुरु: ॥ तुम कुशलादि देखिन लेवाइ अपराजिता जाय तिलक की ततबीर करो ॥

**मंत्रीप्रनम्यनिःक्रांता: ।**

**आकाशे पद ।** इहइहजगकारीकिंकरसोंबांछितफलसबलीन्हे ।
हितकारीसोंलितदानदुजललक्षपरसकरकीन्हे ॥
रतनाकरधनदहुकीनह्विंशन जसप्रतिकापिनदेखायो ।
विश्वनाथअवरजहियबाढ़तकहुंनेधौंयहआयो ॥ १ ॥

**नेपथ्ये ( अनेक बाद्य मङ्गल गान कोलाहल: )**

**आकाशे ।** लेहुलोचनलाहुआजुसुरभामिनी रतिहुनिदरतपियहियहरतिमोपरपराहिसकृतहितकारिकीडीठिअभिरामिनी । सुरंगचीरोसजत लसतसिरपेचमधिजटितमनिबिबिधरंगगथितमुकतावली। सुछबिछहरातिछजतिहंसतिबिधुनाथजनुसरसुतीन्हातहूललितनखतावली ॥१॥

**( प्रविश्यहितकारीगुरुपादौप्रणमति )**

**गुरु:आशिषंदत्वा ।** चलो अपराजिता कों तुम्हारे तिलक को आजु ही सुदिन है ॥

**इतिसर्वेनि:क्रांता: । (तत:प्रविशतिसपरिकरोमंत्री)**

**गद्य ।** मारगैं सुगंध सलिल सिंचावो केसर कलंबक मारिलेपवावो देवालैं अतरनि तर करावो कस्तूरी कपूर चंदन चूर उड़वावो लाजा दधि दूब छिटवावो चौकनि गजमुक्तन चौकैं पुरवावो सदीप पुष्पमाल पल्लव कनक कलशनि धरवावो कलशन परम विचित्र पताक सजवावो करकुसुम कलिन ललिन ललितअटानि बैठवावो तोपन भरवावो नौबतन बजवावो अगवानी सजवावो महाराजआवे हैं ॥

**(परिचारकास्तथेतिनि:क्रांता:)**

**प्रविश्यचार: ।** महाराज ह्वांते चले ॥

**ससंभ्रममंत्री बंधुंप्रति ।** तुम ह्यां की ततबीर करो हों आगू ते लेन जाउं हों ॥

## इतिनि:क्रांत: । (आकाशे)

**आकाशे गद्य** । महल महल चहल पहल बहल मै गलन गैल गैल को लाहल सैल उसलत चलत अरावन खलभलित भल सिंधु जल उच्छलत हहल हहल भूगोल कोल कल मलित बोल मुखन कढ़त लोल शीश व्याल ईशहू भयो ॥

**कवित्त** । उसलिउसलिछैछैछज्जनछबीलेअंगकढ़ततुरंगरंगरंगसुखबारेहैं।
लसतललितमदगलितगयंदमद सोंचतगलीनतनमेघहूनेकारेहैं ॥
जूथनिसुगथरथपथ मनमानौरचेतिनमेंबिर।जैधीरबीरअनियारेहैं ।
मंगलकोचारद्वारद्वारमेंअनूपहोतगावैंगीतनारीप्यारीमहामोदधारेहैं१॥

**सोरठा** । बकसतधननसमूह लेनजातहितकारिकों । देखोयहजनजूह मनहुंकलपतरुचलविपिन ॥ १ ॥

देखो देखो बानर नरबेष धरि पोशाक करि करिन चढ़ि मोद मढ़ि महा मंडे हैं, डहडहजगकारी सारथिकारी डिंभोदर छत्रधारी डीलधराधर चौंर संचारी रथारूढ़ हितकारी छबि किमि कहैं उचारी छकत नैन निहारी यह हमारी भारी भाग्य को फल है॥

**नेपथ्ये** । चक्रवर्ती महाराज सलामत अपराजिताधिराज सलामत अशरन शरन सलामत सर्व सस्वामी सलामत बढ़े जाव साहिबो मुलाहिजे सों अदब सों क़ाइदे सों फ़रक फ़रक करक ॥

(प्रविशति सपरिकरोहितकारी)

**जगद्योनिज:**।सिंहासनस्थौ महिजा हितकारिणौ संबिधि अभिषिंचति॥

(वैदिका:पठंति गायकागायंति प्रविश्यद्वारपाल:)

**कवित्त** । गनहैगजाननकोबिपुलषड़ाननकोजहंचतुराननकोठाढ़ोरनबसहै।
बहुतधनेशऔजलेशओमहेशकेते कैमेकारिकहौंयमजूहकोह्योवसहै ॥
दशमहाविद्यनकोव्यूहव्योमछितपूरे औरसबशक्तिनसमूहराजैतसहै ।
कोटिनब्रह्माण्डनतेंभेंटलैलैआयेद्वारइंदुऔदिनेंद्रइंद्रवृन्दकसमसहै१॥

**हितकारिनेचसंज्ञया।ज्ञप्तोद्वारपाल:क्रमश: सर्वान्प्रवेशयति ।**

(देवा:उपानंदत्वास्तुवंति)

**जमक पद** । अधनधनदधरधरमपरमप्रभुप्रभुनईशहितहितके ।

मोहनमोहनसनसनमुखकारिरं जनजनसोकितके ॥ अकालकालपतक तरुन तरनिसमसमनपापतमअतिके । भवभवपालनहरहरपितकर विश्वनाथमतिमतिके ॥ १ ॥

इतिनिःक्रांताः। (मणिजाअमूल्यहारं)

चेतामल्लस्यकंठेनिःक्षिपति (चेतामल्लःएकैकांमुक्तांदंतैस्फोटयित्वाभूमौनिःक्षिपति)

सुगलः। चेता मल्ल आहार विलोकत सबही बांछा किये हते सो पाइ मुक्ता फोरि फोरि तुम मही मेलि दिये आखिर जात स्वभाई प्रगट कियो ॥

चेतामल्लः। याहितकारी नामांकित नहीं रह्यो ॥

सुगलः। तुम्हारा शरीर कब नामांकित है ॥

आकाशे। आश्चर्य है आश्चर्य है ॥

पद। कोकीरतिकहिसकैप्रेमके धामकी। खैंचित्वचाकियप्रगटनिशानी नामकी॥ तांकिपौनशकोकर्मठगेकपिईशहैं। विश्वनाथमुनिसाधुकिये तरसीस हैं॥ १ ॥

ततःप्रविशतिमैत्रावरुणिः। (हितकारीप्रणम्यसंपूज्यच)

शुभ आगमन भयो आपको, आछे रहे ॥

मैत्रावरुणिः। जहां तुमसो राजा है जिन घन ध्वनि को बन्धु कर हताइ त्रैलोक्य अभय करि दियो तहां हमारी सबकी कुशलहै ॥

हितकारी। घनध्वनिहीं को आप गन्यो यामें कहा हेतु है ॥

(मैत्रावरुणिः दिक्शिरोदिक्विजयेघनध्वनेरिन्द्रबन्धन मेवकथयति)

हितकारी। जैसोंकाल शक्र विष्णु को पराक्रम श्रवणनमें नहीं सुन्यो तैसो चेतामल्ल को पराक्रम नैननि निरख्यो ॥

मैत्रावरुणिः। महाराज यह बालहीको ऐसो है ॥

हितकारी। इनकी उत्पत्ति औ चरित्र कहि जाइये औ सुगलादिकनहूं की उत्पति कहिजाइये ॥

(मैत्रावरुणिः)

सर्वंकथयितित्वा। अबमोकों संध्या बन्दन करनो है ॥

(हितकारीप्रणमति)

मैत्रावरुणि: । आशिषंदत्वानि:क्रांत: ॥

**हितकारी** । सुगल ये भुजभूषण चेतामल्ल तुम्हारे परम हितकारी हैं इनको प्रानके बरोबर राखियो तुम्हारे बल सों मैं दिग्विजय को मारों तुम्हारे सबके एक एक उपकार को मैं उऋन नहोंहों ॥

इति वज्रधनंदत्वासर्वान्नृत्यानप्रेषयति ।

(सुगल:वाद्यावृन्दकंठचतुरोन्नाटन् प्रणम्यसर्वेन्योनि:क्रान्त: )

तत:प्रविशंत्यप्सरसोगन्धर्वाश्च ।

(सर्वेमहिजाहितकारिणौप्रणम्यनृत्यमारभंते)

**उहडहजगकारी** । देखिये महाराज पुष्पांजलि लेए सिगरों संकुचित भाव सों गति धरि इष्ट देवता को सुमिरन करि कछु कुसुम महि कछु आप के पगन पाहिं कछु दोऊ बगल सभा सदनपै कछु पीछे वाद्य करन पै तालही में मेलत भई आश्चर्य है ये वाद्यकारन पै कैसेझमकि गई जैसे एकहीं बार चपला चपचमकि जाइ ॥

**प्रविश्यचेतामल्ल:प्रणम्य** । महाराज मो कों सुगल उकीलत लिये आपके पास टिकवे को पठायो है ॥

**हितकारीसस्मितं** । आवो आवो भले आये अब तुम्हे चाहि हमैं चैन चौगुनो भयो नृत्य देख्यो ॥

(उर्वशीगतिंगृहीत्वाउपसर्पति)

**गन्धर्वागायन्ति** । याकेशीलसुवतसोनैनन । सकुचतचलतिमंजुमुखमोरतिउरअतिप्रेमसुलतकछुवैनन ॥ कोनेहुंपतिअपकारगनतिनाहिं पग परिपरिआपुहिसमुझावै । विश्वनाथप्रभुसद्गुनलायक यहसुकियाको अनुपमभावै ॥ १ ॥

**सुकेशीउपसर्पतिगन्धर्वा:** । अंगननवलतरुनिमाआई । रह्योनठौर आइनैननपथनिकसनचहतिमनफुलरिकाई ॥ रसशृंगारगीतिकेबैननि कछुकछुसुनननलगीश्रुतिलाई । विश्वनाथकरिकैसुघराई नाचतिमुग्धा भावदिखाई ॥ २ ॥

**मेनकाउपसर्पतिगंधर्बी:** । अबमैंक्योंकरिखेलनजैहों । काहूकेकरये नसमैहैंकैसेनैनमुदैहों ॥ भयोकहाबाढ़गोतनसै.रभ छिपैहुंसखिनबोला- वै । विश्वनाथअज्ञातयोबना कीयहकलादेखावै ॥ ३ ॥

**रंभाउपसर्पतिगंधर्बी:** । अबटरअंचलमूंदनलागी । करिसिंगारआ- रसीनिहारति तजिख्यालनयोबनरसपागी ॥ निरखतनिजअंगअंगलो- नाई आपुहिंरीझिजातिमुमक्याई । विश्वनाथयहनृत्यकरतिहै ज्ञा- तयौबनाचरितदेखाई ॥ ४ ॥

**मंजुघोषाउपसर्पतिगंधर्बी:** । यहतोझझकतितकिपरछाहीं । समु- झायहुंसमुझतिनहिंकेहूं मुरिबैठतिव रिनाहीं ॥ चलुघरकहतरूदति नहिंजैहों काहिकहिपानिडोलावै । विश्वनाथयहप्रगटकरतिहै ललि- तनवोढ़ाभावै ॥ ५ ॥

**तिलोत्तमाउपसर्पतिगंधर्बी:** । बैरिनिभईनिगोड़ीलाज । डरअकु- तईनजखनदेतिपियपीरपरैयहिऊपरगाज ॥ योंकहिफेरतिअंगुरिअपो- लन घूंघुटकरिचलिभावैआज । मुरिचितवतियाकोमध्यापन लखिये विश्वनाथमहराज ॥ ६ ॥

**घृताचीउपसर्पतिगंधर्बी:** । ससिमुखलैलैकमललगावति । लीलहि प्यारेकेश्रुतिमूंदति लालसिखाकीधुनिहिछपावत । तनमुगंधनिजस्व- सवायुते प्रातहोतकोयवनदबावति । विश्वनाथजोसबनिशिबिहरी प्रौ- ढ़ाकीयहकलनिलखावति ॥ ७ ॥

**कलकंठीउपसर्पतिगंधर्बी:** । आलसलखहुंआपकेगात । मोहिंदुख यहैसौंहभाईकी औरनहींकछुबात ॥ निजतनकर्महिंबचाइकरियजो- इनोइमोहूंकोभावै । विश्वनाथकरिनचतिचातुरी प्रगटतिधीराभावै ८॥

**आनंदलतिकाउपसर्पतिगंधर्बी:** । बोलिबोलायकहोंसो लायक। जेहिगुनबसीबसीहियरेतुव तितहिंजावहुमनायक ॥ एगुनभरेहोततताके ढिग बैठबउचितन होई । नाचतिभावअधीराकेविश्वनाथलोजियेजोई९॥

**मदनमंजरीउपसर्पतिगंधर्बी:** । गईयहआजुसौतिकेसाथ । चोर- मिहीचनिखेलिआंखितेहिमूंदिलईपियहाथ ॥ यककरसोंयाकोकुचपर स्योअपनीप्रीतिजनाई।नाचतिजेष्ठकनिष्ठाभावहिविश्वनाथदरसाई॥१०॥

**अनंगसुन्दरीउपसर्पतिगंधर्बी:** । लजततकिकायकोटिसतकाम ।

मोकोंलाखकहैकिनओई हैइनहींमेंकाम ॥ भारपरकुलकानिजाइ अ-बलहिहौंसुखउरलाय। विश्वनाथयहथरकिरहीहैऊढ़ाभावदेखाय॥११॥

**चंचलाचीउपसर्पतिगंधर्बा:** । चलावतिदूरव्याहमेमाई । सुठिसुन्दरकुलवन्तबैससम बमोपरोसबिहाई ॥ मेरेउरयहशोचबड़ोअलिकोउनकहतसमुझाई विश्वनाथयहभावअनूढ़ा प्रगटतिनाचतिभाई १२ ॥

**चन्द्रमुखीउपसर्पतिगंधर्बा:** । लेनजलपठयोबरनतमाई । बिछलि गिरीइनआनिउठायो भलेतहूंइतआई ॥ नातरुकहत और को औरै यहपुरलोगचवाई । विश्वनाथयहनाचिरहीहैगुप्ताभावबताई ॥ १३ ॥

**शशिप्रभाउपसर्पतिगंधर्बा:** । सुनलखिछोरिबाछरुआई । द्वारेबेलिबतायेकरमें निरखिननदियाधाई ॥ भीतरभौननिशंकलालसंग करीआपनीभाई। विश्वनाथयहक्रियाबिदग्धाभावकरतछबिछाई१४॥

**चन्द्रकलाउपसर्पतिगंधर्बा:** । तेरेमिलनहेतहौंआई । अबतोरैनअंधेरीछाईराखीबातलगाई॥ पठैदेहिनिजपियपहुंचावनमेरोहियोडेराई। विश्वनाथयहबचनविदग्धा नचतिभावदरसाई ॥ १५ ॥

**चंचलाउपसर्पतिगंधर्बा:** । करनसुखओटनारिसखिजानै। यहरस जान्योमैंक्षोबिजुरी जोबहुघनसंगठानै ॥ अबकहुकाकोंत्रसहुंसहरसब लियनिजबसहिबसाई । विश्वनाथयहनाचतिहरषित कुलटाकलनि लखाई ॥ १६ ॥

**शशिकलाउपसर्पतिगंधर्बा:** । जननिकहपूजिभवानीआवै । यहि अहीरसंगअबहींगमनै बनहरमननहिंल्यावै ॥ सोसुनि अंगसमाति न फूली चलीयारकरलीन्हे । विश्वनाथयहनाचतिमुदिता केगुनप्रगटै कीन्हे ॥ १७ ॥

**कलावतीउपसर्पतिगंधर्बा:** । तनसुबासिनिजमूंघिमूंघितै कहा आजसकुचाती। हौंजानीमैबातसखीयह मज्जनहूंनहिंजाती ॥ सुनि मुसक्याइनचाइनैनदिय ताहूनैननवाई । विश्वनाथयहनाचिलचिता भावरहेदरसाई ॥ १८ ॥

**विलासवतीउपसर्पतिगंधर्बा:** । करिपरदेशप्यारिहूलैसंगकोउपरदेशीआयो। मूनीअपनभरराइआपनी रुचिरकपाटलगायो। सोसुनिलित

उसासबालनिज नैननिबारिबहावै। विश्वनाथअनुशयनाभावहिनाचत प्रगटदेखावै ॥ १६ ॥

चंद्रलेखाउपसर्पतिगंधर्बी: । छिगुनीछुवतबिछौनेपरछल छंदअनेककरै । कहुंमुसक्यातितननिकहुंमौंहैं कहुंतकिभयहिंभरै ॥ कहुंरिसि करतिमिलनकहुं नाहति बहुतसराहिहरै। विश्वनाथलखियेनाचतियह गणिकाभावधरै ॥ २० ॥

कुन्ददन्तिकाउपसर्पतिगंधर्बी: । तोमममौरहितूकोहोवै । सखी हमासहितजेतोदुख जातबदननहिंगोवै ॥ तनकंटकछदस्वेदहिबड़ी अजहुंस्वास अधिकाई । विश्वनाथ यहनचति देखावति अन्य सुरति दुखिताई ॥ २१ ॥

नवमल्लिकाउपसर्पतिगंधर्बी: । ठाढ़ेबलैयायेलेतपियतेबोलैनसजनी। अबैनमेरीकह्योकरति हैरहै गीदोउकरमींजि फिरितैंबीतिगयेरजनी ॥ जाकेलखिबे कौंललकतितीसोई हहाआगेखात उठुमिलुदेहौसमुभनी॥विश्वनाथयहनचतिमानिनीकेभावनदरसाइबांकोभ्रुकुटिकोररिभनी २२॥

कनकसुन्दरीउपसर्पतिगंधर्बी: । पिकममप्राणप्राणअपनोदोउ अलियेकैकरिराखे ॥ कहाकरैंगीसखनिसबैअब नहींहोतकछुमाखे। करत रहैबैठीघर हौंमैंरिसजारैनिजछाती । विश्वनाथयहप्रेमगर्बिता नचत प्रेमरंगराती ॥ २३ ॥

अनुरागिणीउपसर्पतिगंधर्बी: । चलिमुसक्यातललखतिपरछाहीं। अंगुरीसोंनेहिहरपिलखतिपियगलकरनिजबाहीं ॥ सांचकहौंऐसीकहुंदूजी नरसुरनारिनमाहीं । विश्वनाथयहनचतिदेखावतिरूपगर्बिता काहीं ॥ २४ ॥

रत्नकलाउपसर्पतिगंधर्बी: । सखिमैंपतिदेवताकोशासनकोनीभांति नसऊं । गुणनेअगुणनाकेजिय आयोनिशिदिन कलनहिंपाऊं ॥ बिरचीविधिनहिंबियगुनभाजन केहिकेहिकाहपढ़ाऊं । नाचतिगुन गर्बिताकेभावन यहविश्वनाथअगाऊं २५ ॥

काममंजरीउपसर्पतिगंधर्बी: । तकतहरिअंगनमेंपिअरोपरिआई। चूरीगिरीमुंदरीचूरीकरपहिराई ॥ याकोस्वासलपटजनुजरिभेनभघन कारे । विश्वनाथयहनचतिबिरहिनीभावहिधारे ॥ २६ ॥

रूपमंजरीउपसर्पतिगंधर्वी: । कापैंपरमप्रीतितुवलाल । हियतें उमगिनैननोइलखियतु छलकछीटकछुछाजतिभाल ॥ कज्जलमिसि कलंकअकहंधारनो मुखश्रशिसमहिवनायो । विश्वनाथयहभावखंडिता नाचतमाहंदिखायो ॥ २७ ॥

चित्रलेखाउपसर्पतिगंधर्वी: । मोंजिमेंजिकरक्योंपछिताई । जब प्यारोआपहिआयोहोंवहुविधिससुझाई ॥ तबतोएकबात नहिंमानी करीअपनीभाई । विश्वनाथयहनाचतिकलहंतरिताभावबताई ॥ २८ ॥

प्रभावतीउपसर्पतिगंधर्वी: । सजिसिंगारपीतमसिलिबेहितआजुस-खीयनकुंजगई । मिल्योनसोश्रशिउदैजानिरविदुखितभोतहं भजतभई ॥ ज्यौंत्योंकरिपहुंचीतुअहिगलौं होतवहीजोलिखतदई । विश्वनाथयह विप्रलब्धकी कलनिनचतिअति मदनछई ॥ २९ ॥

पद्मावतीउपसर्पतिगंधर्वी: । यामिनीयामबितीतभईरी । पीत मनहिंआयेघनआये येकारिहैंमहिअंबुमईरी । आवतविलमघरिकजो लागत तितहिमिलनगमनैंमोप्रानै । विश्वनाथयहनाचतभावतपर-गटउत्काभावहिठानै ॥ ३० ॥

कलहंसीउपसर्पतिगंधर्वी: । आजुकहासजिसकलसिंगारनरचति सेजनिजहाथै । पुनिपुनितकतिपंथहियरेमें नहिंसमातसुखगाथै ॥ छनमेंकढ़तिछनहिगृहआवति लखियतुअतिअकुताई । विश्वनाथय-हवासकशय्या नाचतभावजनाई ॥ ३१ ॥

चम्पकप्रभाउपसर्पतिगंधर्वी: । निशिदिननिरखतरुखढिगभावै । स-खियांकाजकरन नहिं पावैं आप करत सुखपावै ॥ पियहियनैनटरतसेव-काई सौतिनमुखपियराई । विश्वनाथस्वाधीनपियतमा नाचतिअति छविछाई ॥ ३२ ॥

लीलावतीउपसर्पतिगंधर्वी: । पियमिलिवेहितनिरखिआरसी हर-षितसकलसिंगारसंवारी । करिकैमंदमसालमयंकहिगमनीमुखमयंक उजियारी ॥ तेहिछननिजगयंदगतिनिन्दतिपीयमिलिनकीअतिअतु-राई । विश्वनाथयहनाचतबिलसतअभिसारिकाभावदरसाई ॥ ३३ ॥

अनंगसेनाउपसर्पतिगंधर्वी: । चलतपीउबालजानिगदगदगरथकित वानिकछुनहिंतहंकहतबन्योहियेशोकभोनो । भीतरघरजाइनिजैज-

नमकुंहलीलखाइ आतिहीं बिलखायपीयआगेधरिदीनो ॥ साहसकरि कह्योरीनमोहिंयुभाइकरोमौन जोतिबिंदलिखोजौनआयभूठसांची । लखियविश्वनाथनाथरीभ्कूभ्कआयहाथ प्रेयसीप्रवेह्स्यितेकेभावकलित नाधी ॥ ३४ ॥

रसालमंजरीउपरूपतिगंधर्बी: । छनआंगनछनचढ़तिअटारी छन कढ़िकैबाहरमगजोहति रोंकतिनैननिशीतलबारी ॥ टूटतिबन्दफटति अंगियाउरनाहिंअमातआनन्दअतिभारी । विश्वनाथयहनचतिनबेली आगतपतिकाभावहिधारी ॥ ३५ ॥

हितकारी । इन को मन काम ते अधिक इनाम देवाइदेउ ॥

ततःसप्रमोदंप्रणम्यसाप्सरसोगंधर्बी निःक्रांतः ॥

(प्रविश्यगुडगाड देशीयोनर्तकः)

प्रणम्यनृत्यतिगायतिच । एकिंगांहितकारीमाईडियरवेरी । लिबरे लएण्डबेरवबीशहिरी ॥ गुडइसप्रेडमाइसिनटापलाड । गुडआलडैम विशुनाथआफगाड ॥ १ ॥

अर्थ । एकिंग बादशाहों का बादशाह हितकारी भगवान माई हमार डियर पियारा वेरी बहुत परस्पर प्यारा लिबरि दातों का दाता एण्ड औ.र बरेव. सूर वीरों का सरदार बीशटिरी सुर तरु दोनों जहा-न का गुड इसप्रेड अच्छा बकसने वाला माइसिन हमारे तकसीर टापलाड सरदारों का सरदार गुडआलटैम अच्छा एकरस सब समै विशुनाथ आफगाड विश्वनाथ का ईश्वर ॥ १ ॥

हितकारी । इनको इनाम देवाइ देउ ॥

गुडगाड:प्रणम्यनि:क्रांत: । प्रविश्यअर्बदेशीय: ॥

प्रणम्यनृत्यतिगायतिच । हाजलांहितकारीनूरनूरलूअलाहू कुलबुल बरीदवोदफहमुलजुकाहू ॥ उंजुरबिलकलबिकुल्लशैनमुहीतै । फहुवा धिश्वनाथअकदमतलबबसीतै ॥ १ ॥

अर्थ । हालजांहितकारी यह भगवान नूरनूरलूअलाहू प्रकाशी बड़े ऊंचे प्रकाश के हैं कुलबुलबरीदनगीच हैं गरदन से वोदफहमुलजुकाहू औ दूरि हैं ज्ञान औ बुद्धि से उंजुर बिलकलबि देखु दिलकी दृष्टि से कुल्लशैयनमुहीतै सब वस्तु में पूर्ण है फहुवा येई विश्वनाथ अकद

मतलबबसीते बिश्वनाथ मतलब की गाठैं खोलने वाले हैं ॥ १ ॥
हितकारी । इनको इनाम देवाइ देउ ॥
( अर्बदेशियःप्रगम्र्यानिःक्रांतः )
प्रविश्य तुष्कदेशियः प्रसह्य ब्लतिगायतिच । कुलचातिंगरीहि-
तकारी फुलू । फकरंचीमोजकंचटलू ॥ दीजरिवतिंगरीसुकुरफुली ।
फुनविश्वनाथजुकजुनछली ॥ १ ॥
अर्थ । कुलचातिंगरी एक ईश्वर हितकारी भगवानफूलूहै फकरंची
सब का मालिक मोजउसबिनाकंचटलू सब के काम दीज भीतर
तिंगरी भगवान सुकुरप्रकाशमान है फुलो देखो दिलकी आंखि से
फुन पाया विश्वनाथ ने जुकउसको जुन मेहरबानगीउलीउसीकेसे ॥ १ ॥
हितकारी । इनकोइनामदेवाइदेउ ॥ तुरुकदेशीयप्रगम्र्यानिःक्रांतः ॥
प्रविश्यमरुदेशीयाबारवधटी ॥
प्रगम्र्यब्लतिगायतिच । म्हाथारेहिगापगीछेम्हारोराज । थांकोतो
धनेठेवायादुखियाकोम्होछेराजगकोसिरताज ॥ इहांको सुजसम्हारे
देशगाइयाछेगुनियासमाज । विश्वनाथथांयुगयुगजीवोपूजेछेम्हारे
काज ॥ १ ॥
हितकारी । मन बांछित इनाम देवाइ देउ ॥ नर्तकीनिःक्रांता ॥
हितकारी । उद्दडहजगकारी तुम राज्य की ततबीरकरो । डीलधरा-
धर तुम कोष की ततबीर करो । डिंभोदर तुम सेन की ततबीर
करो । हैं गृह बाग बिहार करन जावहीं ॥
इतिनिःक्रांताःसर्वे । (ततःप्रविशतःस्वधुनीब्रह्मकुण्डजे)
स्वधुनी । हे ब्रह्मकुण्डजे तुम उदासी ऐसी काहे हो ॥
ब्रह्मकुण्डजा । एकादश सहस बरिस पुहुमि संचरित अब अपराजिता
पुरी प्रजन कीटपतंग उधारि हितकारी परम पुरुष हरि परम प्रकाशी
रूप करि परम धाम बिश्राम करन लगेहौं अकेले नहीं खुली हौं ॥
स्वधुनी । सखि हितकारी प्रगट ते अप्रगट होइगये हैं तिहारे निकट
अपराजिता में हितकारी सदै रहैं सखि छोहू को दुरावै है ॥
इतिसम्प्रितनिःक्रांते । ( ततःप्रविशतिसूत्रधारः सूत्रधारः )
प्रबंधः । जयजयरघुनंदनकरुणाकुन्दे । ताड़कातनुभंजनखलदलगंजन

हे। पिनाकखण्डनजमरंजनहे ॥ सीताविवाहनसुखावगाहनहे। सौ-शील्योदार्यादिकुनभाजनहे ॥

रे रे सनि रेरे सनि सानि त्रिपप्पप्पमगरेसाम म्मम्मपप्पप्पधपमधनिधधपाधा दिगदिगदिगथोदिगदिगदिग तकतकतकतक थुंतकथुंठग नंगनंगनंगनंग नंगनंगनंगनंगतथुन्नथैया ॥ १ ॥

**श्री रघुनंदनः ।** मांगु मांगु ॥

**सूत्रधारः भजन ।** छूटैमनमलीनतासारीकामादिकमिटिजाहीं । होय विवेकनसैंदुखसिगरेगहौआपममबाहीं ॥ अतिनिर्मलचितह्वै प्रभुपदमें लगैसहितहुगभावै । परमप्रेमरघुनाथआपकोविश्वनाथअबपावै ॥ १ ॥ जोलौंकीरितिचलैतिहारी ।तौलौंचलैनाथयहनाटक सुनिसबहोइसुखारी ॥ जोयंहकहैसहैधनधानिहुंअन्तसुगतितेहिहोवै।विश्वनाथकोप्रगटराहि-यसनसुभगतिहारोजोवै ॥ १ ॥

**( श्रीरघुनन्दनःतथासुसूत्रधारःप्रणम्यसहर्षंनिःक्रांताः )**

**श्रीरघुनन्दनः ।** चलो महलन चलिये ॥

**( इतिनिःक्रांताःसर्वेसप्तमोंकःइति )**

इतिश्रीमन्महाराजाधिराज बांधवेश श्रीमहाराजविश्वनाथसिंहजू देवकृत आनन्दरघुनन्दन नामनाटके सप्तमांकः ॥

इति

---

| नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब |
|---|---|---|---|
| ब्रजविलास | अमृत सागर | अक्षरावली | मुहूर्त्तचिन्तामणि सारिणी |
| ब्रजविलास छोटा | वैद्यमनोत्सव | स्वयम्बोध | मुहूर्त्त मार्त्तण्ड सटीक |
| **राग** | **ज्योतिष** | ज्ञान चालीसी | मुहूर्त्त दीपक |
| राग प्रकाश | जातक चन्द्रिका | दोहावली | वृहज्जातक सटीक |
| लावनी | जातकालंकार | बाला बोध | जातकालंकार सटीक |
| श्रृंगार बत्तीसी | दैवज्ञाभरण | विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक | जातकाभरण |
| **क़िस्सा वग़ैरह** | ज्ञान स्वरोदय | किताब जंत्री | होरामकरंद |
| नानार्थ नो संग्रहावली | रमलसार | गणित कामधेनु | **संस्कृत उर्दू टीका स·** |
| ब्रह्मसार | इन्द्रजाल | लीलावती | मनुस्मृति |
| शिवसिंह सरोज | **मुतफ़र्रकात** | पटवारियों की पुस्तक अ· | विष्णु हारीत |
| भक्तमाल | शनिश्चर की कथा | **संस्कृत की पुस्तकें** | महिम्न स्तोत्र |
| रामाभिषेक नाटक | ज्ञान माला | लघु कौमुदी | **संस्कृत भाषा टी·स·** |
| इन्द्रसभा | गोपीचंद भरतरी | सिद्धान्त चन्द्रिका | अमरकोश |
| विक्रमविलास | कथा श्री गंगा जी | अमरकोष तीनों कांड स· | याज्ञवल्क्य स्मृति |
| बैताल पच्चीसी | अवध यात्रा | पंच महायज्ञ | संध्या पद्धति |
| सिंहासन बत्तीसी | भरतरी गीत | निर्णयसिन्धु | ब्रह्मार्क |
| पद्मावती खण्ड | दानलीला व नागलीला | संग्रह शिरोमणि | भगवद्गीता टी· हरवंश |
| शुक बहत्तरी | दोहावली रत्नावली | भगवद्गीता सटीक | भगवद्गीता टी· आनंदगिरि |
| बकावली सुमन | गोकर्ण माहात्म्य | दुर्गापाठ सटीक | गीत गोविंद |
| चहार दरवेश | श्री गोपाल सहस्रनाम | विष्णु भागवत | कथा सत्यनारायण |
| क़िस्सह हातम ताई | कथा सत्यनारायण स· | भविष्योत्तर पुराण | परमार्थ सार |
| अपूर्व कथा | हनुमान बाहुक | अपराध भंजन स्तोत्र | शार्ङ्गधर संहिता |
| क़िस्सा गुल सनोवर | जनक पच्चीसी | दुर्गा स्तोत्र | पाराशरी |
| सहस्र रजनी चरित्र | आनन्दाऽमृतवर्षिणी | कायस्थ कुल भास्कर | शीघ्रबोध |
| रावन्सन का इतिहास | वनयात्रा | कायस्थ धर्म निरूपण | लघुजातक |
| **वैद्यक** | कायस्थ वर्ण निर्णय | तथा छोटा | षट्पंचाशिका |
| निघण्ट भाषा | विहार विन्द्रावन | मथुरा सभा | सामुद्रिक |
| अमर विनोद | समर विहार विन्द्रावन | **ज्योतिष** | **सरिश्तेतालीमकी** |
| वैद्यजीवन | कल्प भाष्य | मुहूर्त्त गणपति | **पुस्तकें** |
| औषधि संग्रह कल्पवल्ली | **दरसी** | मुहूर्त्त चक्रदीपिका | **संस्कृत** |

| नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब |
|---|---|---|---|
| [illegible]नुपाठ | भूगोलतत्त्व | अयोध्याकाण्ड | मजमूआ ज़ाबिता फौ- |
| १ भाग | भूगोलदर्पण | आरण्यकाण्ड | जदारी ऐक्ट २५ सन् |
| २ भाग | इतिहासतिमिरना- | किष्किन्धाकाण्ड | १८६२ ई० |
| ३ भाग | शक १ भाग | सुन्दरकाण्ड | ऐक्ट स्टाम्प १ सन् |
| धात्वर्थाद | २ भाग तथा ३ भा- | लंका काण्ड | १८६२ ई० |
| नागरी व कैथी | भारतवर्षीय इतिहास | उत्तरकाण्ड | ऐक्ट रजिस्टरी २० सन् |
| वर्णमाला कैथी १ भा- | अवधदेशीय भूगोल गुटका | | १८६६ ई० |
| तथा २ भाग | इंगलिस्तानका इतिहास | १ भाग | ऐक्ट स्टाम्प अदाल- |
| तथा कैथी फ़ारसी | हितोपत्रिका | २ भाग | त २६ सन् १८६७ ई० |
| नागरी व अक्षुफ़र्दात | बाला भूषण | ३ भाग | मजमूआ ऐक्ट अ- |
| अक्षर १ भ | पद्यसंग्रह | हिदायतनामा सुदर्दि- | बध लगान १८ सन् |
| वर्णप्रकाशिका १ भा- | भाषा काव्यसंग्रह | सान् | १८६८ ई० पुरवाही- |
| तथा २ भाग | कवित्तरत्नाकर १ भा- | पशुचिकित्सा | र २६ सन् १८६६ ई० |
| सूरजपुरकी कहानी | तथा २ भाग | पट्टा व रवतं कैथी | वगैरा |
| धर्मसिंहका वृत्तान्त | मंगलकोष | तथा क़बूलियत | ऐक्ट स्टाम्प दस्ता- |
| शिक्षावली | अंकप्रकाश | रजिस्टर खारिज दाखिल ना- | वेज़ात १८ सन् |
| पत्रहितैषिणी | गणितप्रकाश १ भा- | रिश्तुलस्वाल दर्मा | १८६९ ईसवी |
| पत्रदीपिका | तथा २ भाग | रजिस्टर हाज़िरी पाठशा- | ऐक्ट न अब्कदारा- |
| विद्याचक्र | तथा ३ भाग | ला | न मक़रूज़ ... २४ |
| विद्यांकुर | तथा ४ भाग | **क़ानून** | सन् १८७० ई० |
| पदार्थविद्यासार | गणितक्रिया | पटवारियोंके क़ानून | ऐक्ट चौपायोंका मद- |
| पदार्थ ज्ञान विटप | क्षेत्रप्रकाश | उर्दू कैथी महाजनी | खिलत बेजा १ सन् १८७१ ई० |
| भोजप्रबंधसार | क्षेत्रचन्द्रिका १ भा- | टिकट के लाइसन्स | ऐक्ट मजमूआ ज़ाबिता |
| राजनीति | सकीलदायरा | ना ऐक्ट २ सन् १८७८ | फौजदारी १० सन् १८७२ ई- |
| शिशुबोध | रेखागणित १ भाग | ईसवी | ऐक्ट माल गुज़ारी |
| भाषा लघुव्याकरण | तथा २ भाग | **नागरी** | मगरबी व शिमाली |
| १ भाग | बीजगणित १ भा- | ऐक्ट लगान मगरबी | १९ सन् १८७३ ई० |
| तथा २ भाग | तथा २ भाग | व शिमाली १० सन् | तरमीम मजमूआ ज़ावि- |
| भाषा तत्त्वदीपिका | रामायण तुलसीकृ- | १८५९ ई० | ता फ़ौजदारी ११ सन् १८७४ ई |
| भाषा चंद्रोदय | बालकाण्ड | इंडियन पिनल कोड | |